

निराला कृत 'अप्सरा' उपन्यास की सामाजिक चेतना



अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ से एम. फिल. की उपाधि हेतु
प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध

निर्देशक :

डा० बुद्धसेन नहिार
रीडर

शोधार्थी :

मुहम्मद आशिक अली

1989

हिन्दी विभाग,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,
अलीगढ़-202001

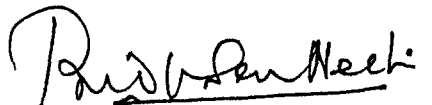


DS1569

C E R T I F I C A T E

I hereby certify that the M. Phil Dissertation
entitled "Nirala Krit Apsara Upanyas Ki Samajik Chetna"
submitted by Mr. Mohammad Ashiq Ali is his original
research work and has been written under my supervision
and guidance.

Dated : October 16, 1989


(Dr. Budhsen Neehar)
Reader, Deptt of Hindi
Aligarh Muslim University
Aligarh

प्राक्कथन

i

प्रथम अध्याय :

निराला की सामाजिक चेतना

i

0 राजनीतिक चेतना

0 आर्थिक चेतना

0 सामाजिक चेतना

द्वितीय अध्याय :

"अप्सरा" की कथावस्तु एवं समस्याएँ

52

0 "अप्सरा" की कथावस्तु

0 "अप्सरा" की मूल समस्या : वेश्यावृत्ति

0 "अप्सरा" की अन्य समस्याएँ : राष्ट्रीय आन्दोलन एवं किसान संगठन, स्वदेशी का प्रचार, अंग्रेजों एवं जमींदारों का चरित्र, धार्मिक आडम्बरों एवं सामाजिक कुरीतियों का विरोध ।

तृतीय अध्याय :

"अप्सरा" के पात्रों की मनोभूमि एवं व्यवहार

75

0 कनक, तारा, राजकुमार, चन्दन, सर्वेश्वरी, कैथरिन, कुँवर प्रताप सिंह, हैमिल्टन, रामसुन्दर सिंह, हरपाल सिंह, नन्दन सिंह ।

चतुर्थ अध्याय :

निराला के उपन्यासों में "अप्सरा" का स्थान

100

0 अलका

0 निरूपमा

0 प्रभावती

0 चोटी की पकड़

0 काले कारनामों

0 चमेली

0 "अप्सरा" का स्थान

पंचम अध्याय :

उपसंहार

130

परिशिष्ट :

सहायक ग्रन्थ सूची

x : x

138

प्राक्कथन =====

निराला विद्रोही रचनाकार हैं । अपने युग की सामाजिक-धार्मिक कुरीतियों, रूढ़ियों, अन्धविश्वासों एवं हर तरह के शोषण के विरुद्ध उन्होंने विद्रोह का स्वर बुलंद किया है । निराला का यह विद्रोही स्वस्व उनके काव्य की ही भाँति उनके गद्य-साहित्य में भी व्यक्त हुआ है, परिणामस्वस्व उनके गद्य साहित्य का भी विशिष्ट महत्त्व है ।

निराला ने अपने उपन्यासों में अपनी युगीन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण किया है । "अप्सरा" उपन्यास उनकी एक महत्त्वपूर्ण कृति है, जिसमें तत्कालीन समस्याओं का सहज सुन्दर समावेश है । निराला का नारी के प्रति एक निश्चित दार्शनिक दृष्टिकोण है । निराला की यह मान्यता है कि नारी वेश्या हो ही नहीं सकती, क्योंकि वह भी शक्ति, दुर्गा या सरस्वती है ।

"अप्सरा" उपन्यास की मूल समस्या नारी समस्या है । निराला ने वेश्या-समस्या को इस उपन्यास में उठाया है और इसका यथोचित समाधान भी प्रस्तुत किया है, इसीलिए मैं इस उपन्यास के अध्ययन एवं मूल्यांकन की ओर उन्मुख हुआ ।

"अप्सरा" उपन्यास की नायिका वेश्यापुत्री कनक के माध्यम से निराला ने यह संदेश दिया है कि वेश्याएँ भी सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन व्यतीत करने की प्रबल आकांक्षा रखती हैं और उन्होंने वेश्यापुत्री कनक को गरिमामयी नारी के रूप में प्रतिष्ठित किया है । यही इस उपन्यास का मूल उद्देश्य भी रहा है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में शोधार्थी ने निराला के प्रथम उपन्यास "अप्सरा" का मूल्यांकन इसी दृष्टिकोण से किया है। यद्यपि "अप्सरा" के मूल में प्रेम की भावना है पर उसके ही माध्यम से सामाजिक विदूषों, विषमताओं एवं विसंगतियों ॥विशेषकर नारी-संबंधी॥ को व्यापक रूप से प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में इस विषय पर गंभीरता से विचार करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों पर दृष्टिपात करते हुए उनके बीच विकसित होती निराला की सामाजिक चेतना पर विचार किया गया है।

द्वितीय अध्याय में "अप्सरा" उपन्यास की कथावस्तु एवं उसकी आधार-भूत समस्याओं का वस्तुपरक विवेचन किया गया है।

तृतीय अध्याय में "अप्सरा" के पात्रों की मनोभूमि एवं उनके व्यवहार को अध्ययन के केन्द्र में रखा गया है जिससे "अप्सरा" की सामाजिक चेतना के विकास को दर्शाया जा सके।

चतुर्थ अध्याय में निराला के अन्य उपन्यासों का विवेचन करते हुए तुलनात्मक दृष्टि से "अप्सरा" की सामाजिक चेतना का मूल्यांकन किया गया है।

पंचम अध्याय में प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष को सार रूप में प्रस्तुत किया गया है।

निराला साहित्य के विद्वान अध्येता एवं "विश्वकवि निराला" पुस्तक के लेखक डा० बुद्धसेन "नीहार" के निर्देशन में मैंने यह शोध-प्रबंध लिखा है। उन्होंने अत्यंत धैर्य और परिश्रम के साथ न केवल मेरी शंकाओं का समाधान किया है बल्कि इस अध्ययन के लिए मुझे दिशाबोध भी कराया है। उनके प्रति मैं श्रद्धांत हूँ।

आदरणीय प्रो० रवीन्द्र भूषर, प्रो० के०पी० सिंह, प्रो० शैलेश जैदी, डा० अजब सिंह एवं डा० भरत सिंह ने सदैव अपने महत्वपूर्ण विचारों तथा परामर्शों से मेरी सहायता की है, तदर्थ आभारी हूँ।

अपने मित्र सर्वश्री रमेश रावत, अजय बिस्तारिया, तिलक सिंह, सबाहुददीन अहमद एवं मेराज अहमद का भी मैं आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस प्रबंध को लिखने की न केवल प्रेरणा दी बल्कि अपनी विद्वतापूर्ण बहसों के द्वारा तथा सामग्री-संवर्द्धन में भी मुझे सहयोग दिया है ।

सर्वश्री शमशाद अली, नजमुददीन, फैजान अहमद, शमीम अहमद, मुहम्मद याकूब, अख्तर खाँ, दीन मुहम्मद एवं मुहम्मद फारूख के प्रति कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस बीच अनेक प्रकार से मुझे अपना सहयोग प्रदान किया है ।

अपने पितामह हाजी निजाम अली एवं श्री हयात खाँ, चाचा सर्वश्री अफलाउददीन, कुतुबुददीन, लियाकत अली, फूफाजी डॉ० अहमद शाहिद खाँ तथा अपने पिता के मित्र श्री राजपाल एवं श्री जगदीश प्रसाद के प्रति मैं क्या आभार व्यक्त करूँ, क्योंकि इन्हीं के कारण मेरा शोध में संलग्न होना संभव हो सका ।

प्रस्तुत प्रबंध के लिए सामग्री-संचयन में श्री राकिम अली तथा इसके स्वच्छ एवं शीघ्र टंकण में श्री शूरवीर सिंह राघव ने जो तत्परता दिखायी है उसके लिए मैं कृतज्ञ हूँ ।

इस कार्य को पूरा करते हुए मुझे अपने स्वर्गीय पिता श्री सिराजुददीन का स्मरण हो रहा है । उनकी अपेक्षाओं को पूर्ण करने की दिशा में कुछ बढ़ सका यही मेरे जीवन की महती उपलब्धि है । अतएव यह कार्य उन्हीं की स्मृति को समर्पित है ।

विनीत

मुहम्मद

॥ मुहम्मद आशिक अली ॥

પ્રથમ અધ્યાય

प्रथम अध्याय =====

निराला की सामाजिक चेतना

निराला की सामाजिक चेतना नामक विवेच्य अध्याय में हम निराला के युग की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के वस्तुपरक विवेचन और निराला की तज्जन्य वैचारिक एवं व्यावहारिक प्रतिक्रियाओं के आधार पर उनकी सामाजिक चेतना का मूल्यांकन करेंगे।

निराला ने अपने युग की आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों का वस्तुपरक विवेचन करके सामाजिक रूढ़ियों, धार्मिक अन्धविश्वासों आदि के विरुद्ध विद्रोह किया और एक यथार्थवादी सामाजिक दृष्टिकोण समाज को दिया। वे नारी समस्या, अंग्रेजों के अत्याचार, जमींदारों के द्वारा शोषण, पुलिस की कूटनीति और षड्यन्त्र से मुक्ति के लिए अपने साहित्य में निरन्तर विद्रोह का आह्वान करते हैं। "निराला जी की कविताओं में प्रारम्भ से ही सामाजिक चेतना और जन-कल्याण की भावनाएँ उपलब्ध रही हैं। सत्य तो यह है कि उनकी विशुद्ध सौंदर्य मूलक रचनाओं को छोड़कर शेष सभी रचनाएँ प्रायः सामाजिक चेतना से ओत-प्रोत हैं।"

अब हम निराला के साहित्य को प्रभावित करने वाली राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक समस्याओं पर विचार करेंगे कि निराला इन परिस्थितियों से कहाँ तक प्रभावित हुए और उनका क्या दृष्टिकोण बना और कैसे विकसित हुआ।

राजनीतिक चेतना :

निराला का जन्म उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में हुआ था।

इनका बचपन बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ के साथ-साथ व्यतीत होता है । यह समय राजनीतिक उथल-पुथल का था, क्योंकि इस समय भारत ब्रिटिश शासन के अधीन था । भारतीय जनता-राष्ट्रीय मुक्ति के लिए संघर्ष कर रही थी और इस समय मुख्य समस्या राष्ट्रीय मुक्ति की थी । 1857 के महा विद्रोह के बाद भारतीय जनता में साम्राज्यवाद-विरोधी चेतना का बड़ा तीव्र प्रसार हुआ ।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त और बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन ने व्यापक रूप ग्रहण कर लिया था । विश्व की मैक्सिको की क्रान्ति १९१० की चीन की क्रान्ति १९११ की क्यूबा वासियों का अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष तथा रूस की क्रान्ति आदि ने एशिया के पराधीन देशों को बहुत प्रभावित किया था । भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन पर भी इन घटनाओं का प्रभाव पड़ा । " उन्नीसवीं सदी के अन्त तक भारतीय राष्ट्रवादियों में आत्म सम्मान और आत्मविश्वास की भावना आ गई थी । उन्होंने अपना शासन आप करने की अपनी क्षमता तथा अपने देश के भावी विकास में विश्वास प्राप्त कर लिया था । तिलक और बिपिनचन्द्र पाल जैसे नेताओं ने आत्मसम्मान का संदेश दिया ।" ¹ स्वामी विवेकानन्द ने भी भारतीय जनता की कमजोरी को देखते हुए कहा था -- "अगर संसार में कोई पाप है तो वह कमजोरी है, सभी तरह की कमजोरियों से दूर रहो, कमजोरी पाप है, कमजोरी मौत है....और सत्य की कसौटी यह है कि जो भी तुम्हें शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक तौर पर कमजोर बनाए उसे विष की तरह ठुकरा दो, उसमें कोई जीवन नहीं, वह सत्य नहीं हो सकता ।" ²

1. बिपिन चन्द्र : आधुनिक भारत, संस्करण 1987, पृष्ठ 190 ।

2. उद्धृत, वही ।

1905 में ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने बंग-भंग द्वारा बढ़ती हुई राजनीतिक शक्ति को तोड़ने का प्रयास किया। भारतीय जनता ने बंगाल विभाजन का विरोध किया तथा व्यापक पैमाने पर बंगभंग-विरोधी आन्दोलन में हिस्सा लिया। बंगाल विभाजन को राष्ट्रवादियों ने चुनौती के रूप में लिया। बंग-भंग विरोधी आन्दोलन के प्रथम चरण के प्रमुख नेता सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और कृष्णाकुमार मित्र थे। सुप्रसिद्ध कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने भी बंग-भंग का विरोध किया तथा बंकिम चन्द्र का लिखा गीत "वन्देमातरम्" रातों-रात राष्ट्रीय आन्दोलन का गीत हो गया। भारतीय जनता भी समझने लगी थी कि ब्रिटिश शासन का उद्देश्य इंग्लैण्ड को समृद्ध बनाना तथा भारत का आर्थिक शोषण करना है। अतः बंग-भंग के साथ-साथ स्वदेशी आन्दोलन भी चला। बंग-भंग व स्वदेशी आन्दोलन की एकजुटता के लिए कांग्रेस के सभी भाग एक हो गये थे। 1905 के कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष गोखले ने बंग-भंग का विरोध भी किया था। फिर भी नरमपंथियों एवं गरमदलियों में असहमति ही रही। इसलिए बंग-भंग एवं स्वदेशी आन्दोलन का नेतृत्व गरमदलीय नेताओं- तिलक, अरविंद घोष तथा बिपिनचन्द्र पाल आदि लड़ाकू प्रवृत्ति के राष्ट्रवादियों ने किया। नरमपंथियों के सिद्धान्त एवं पद्धति से भारतीय जनता का मोहभंग हो गया था। "स्वदेशी आंदोलन का एक उल्लेखनीय पहलू था इसमें महिलाओं का सक्रिय रूप से भाग लेना। परम्परागत रूप से घरों में रहने वाली शहरी मध्यम वर्गों की औरतें जलूसों और धरनों में शामिल हो गयीं। यह राष्ट्रवादी आंदोलन में उनके सक्रिय रूप से भाग लेने की शुरुआत थी।"। बंग-भंग व स्वदेशी आन्दोलन में विद्यार्थी, किसान, जमींदार, वकील आदि सभी ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। बाद में दादा भाई नौरोजी ने कांग्रेस का अध्यक्ष होने पर राष्ट्रीय मुक्ति के लिए भारतीयों में और जोश भर दिया।

बंगाल का विभाजन करके अंग्रेजों ने साम्प्रदायिकता के बीज बो दिये थे, क्योंकि बंगाल का विभाजन मुस्लिमों को बहुमत दिलाने के नाम पर किया गया था। अंग्रेजों की नीति "फूट डालो और शासन करो" सफल रही। इसी समय मुस्लिम लीग की स्थापना की गयी, जिसे अंग्रेजों से प्रोत्साहन मिला।

राष्ट्रवादी तमिल कवि सुब्रह्मण्यम भारती, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मौलाना हाली तथा प्रेमचन्द आदि अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए भारतीय जनता में राजनीतिक चेतना जागृत कर रहे थे।

निराला ने भी अपने समकालीन लेखकों के समान अपनी रचनाओं में राष्ट्रीय मुक्ति के लिए आह्वान किया, क्योंकि इनका बचपन महिषादल राज्य {बंगाल} में बीता था, इसलिए इन्होंने बचपन से ही राष्ट्रीय मुक्ति के लिए संघर्ष होते देखा था। अपने बचपन में बंगाल में चले बंगभंग एवं स्वदेशी आन्दोलनों तथा सशस्त्र क्रांति द्वारा भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराने के लिए क्रांतिकारियों को देश पर अपनी जान कुर्बान करते देखा। इस सभी का निराला के व्यक्तित्व पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। "भारत की गुलामी और मुक्ति की समस्या के प्रति वे शुरू से ही सचेत हैं। उनकी इस राष्ट्रीय चेतना का महत्व इसी से समझा जा सकता है कि "मातृभूमि" उनकी पहली कविता है।"¹

"चोटी की पकड़" नामक उपन्यास में निराला ने बंगाल में चले बंग-भंग तथा स्वदेशी आन्दोलन को अपनी पृष्ठभूमि बनाया है तथा उपन्यास के निवेदन में स्पष्टतः लिखा भी है---"चोटी की पकड़ आपके सामने है। स्वदेशी आन्दोलन की कथा।....युग की चीज बनाई गई है।"² वास्तव में निराला ने चोटी की पकड़ नामक इस उपन्यास में स्वदेशी आन्दोलन एवं

1. दूधनाथ सिंह : निराला आत्महन्ता आस्था, प्रथम संस्करण, पृ० 172।

2. चोटी की पकड़, चतुर्थ संस्करण, पृ०- निवेदन।

बंग-भंग का गम्भीर और जीवंत चित्रण किया है। निराला उपन्यास के क्रान्तिकारी प्रभाकर के द्वारा स्वदेशी आन्दोलन की महत्ता बतलाते हैं—
 “स्वदेशी का, देश प्रेम का जितना प्रचार होगा, देशवासियों का कल्याण है।”¹

यद्यपि बंग-भंग आन्दोलन के समय कांग्रेस शक्तिशाली हो गई थी, लेकिन दो दल नरम दल एवं गरम दल बनने के कारण 1907 के कांग्रेस के सूरत अधिवेशन में भारतीय राजनीति को बहुत धक्का लगा और कांग्रेस की शक्ति भी क्षीण हो गई थी। इसलिए नरम दल वालों के प्रति भारतीय जनता का विश्वास उठ गया था। विशेषकर युवापीढ़ी गरमदल वालों से प्रभावित थी। “चोटी की पकड़” उपन्यास में प्रभाकर एवं उसके साथी गरमदल की प्रवृत्ति के हैं, ये लोग अंग्रेजों से गिड़गिड़ाकर अधिकार मांगने में राष्ट्र का अपमान समझते हैं और तिलक, विपिनचन्द्र पाल, लाला लाजपतराय आदि गरमदल के नेताओं के विचारों के समान अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष चलाने के पक्ष-पाती हैं।

निराला स्वदेशी आन्दोलन में व्यापारियों एवं पूँजीपति सेठों के न होने से और ब्रिटिश सरकार की पक्षधरता करने के कारण उन पर प्रहार करते हैं, क्योंकि इनके कारण स्वदेशी आन्दोलन में गतिरोध पैदा होता है। इस विषय में निराला के स्पष्ट विचार द्रष्टव्य हैं : “मीलों का मुकाबला है, मुश्किल मुकाम है, मील वाले जमींदारों की तरह इस आन्दोलन में शरीक नहीं, सरकार को उनकी तरफ़दारी प्राप्त है, दलाल हैं यह लोग, विघ्न डालेंगे, देहात के बाजारों में इनका माल आता, ज्यादातर विदेशी माल है, दुकानदारों को यह लोग बाँधे हैं, माल खपाते हैं, विदेशी बनियों का भी सरकार पर प्रभाव है, वे ज्यादाती करने की प्रेरणा देते होंगे, बड़ी मुश्किलों का सामना है। देश के इन गधों से ईश्वर पार लगाये।”²

1. चोटी की पकड़, चतुर्थ संस्करण, पृ० 171

2. वही

1914 में प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ गया । एक तरफ ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, रूस, अमरीका व जापान थे, दूसरी तरफ जर्मन, तुर्की, आस्ट्रिया तथा हंगरी थे । आपस की प्रतिद्वन्द्विता के कारण हर एक देश ने गठजोड़ किया । भारत में विश्वयुद्ध के समय में राष्ट्रवाद और पनपा । "आरम्भ में जून 1914 में जेल से रिहा किए गये लोकमान्य तिलक सहित भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं ने सरकार के युद्ध-प्रयासों का समर्थन करने का निर्णय किया ।" ¹ राष्ट्रवादियों का विचार था कि ब्रिटेन की युद्ध में सहायता करने से वह भारत को स्वराज्य दे देगा । लेकिन राष्ट्रवादियों की धारणाओं के विपरीत ब्रिटिश सरकार ने और अधिक शक्ति के साथ व्यवहार किया । विश्वयुद्ध के पश्चात् भारत में गरीबी और अधिक बढ़ गयी । कीमतेँ आसमान को छूने लगीं । युद्ध के कारण अत्यन्त भारी करों का बोझ जनता पर पड़ा, जिसके कारण राष्ट्रवादी आन्दोलन में तीव्रता आई । 1915-16 में दो होमरूल लीगों की स्थापना हुई । एक का नेतृत्व तिलक ने किया तथा दूसरी का ऐनी बेसेंट और एस0 सुब्रह्मण्यं ने किया । दोनों लीगों ने ही भारत को स्वराज्य देने की माँग के समर्थन में प्रचार किया । आन्दोलन के प्रचार के समय तिलक ने यह नारा दिया---"स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा ।" युद्ध के समय में ही क्रान्तिकारी आन्दोलन की गतिविधियों में तेजी आयी जो बंगाल और सम्पूर्ण उत्तर भारत में फैल गया ।

1916 में राष्ट्रवादियों ने आपसी तनाव को समाप्त करने के लिए लखनऊ में कांग्रेस का अधिवेशन रखा । कांग्रेस के प्रमुख नेता तिलक एवं लडाकू प्रवृत्ति के राष्ट्रवादी फिर एक हो गये । लखनऊ में ही कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग ने भी आपसी तनाव को भुलाकर ब्रिटिश सरकार के सामने एक समान राजनीतिक माँगे रखीं और आपस में दोनों में एकता का समझौता हो गया । बाद में यह सब देखकर ब्रिटिश सरकार ने दमन का सहारा लेकर राष्ट्रवादियों एवं क्रान्तिकारियों को जेल में डाल दिया ।

“रूस की अक्टूबर क्रांति १९१७ से मानव जाति के इतिहास में नया युग आरंभ हुआ। यह नया युग था समाजवादी क्रांतियों और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों तथा पूँजीवाद के संकट का युग। युद्ध के समाप्त होते-होते क्रांति की शक्तियाँ सारी दुनिया में आगे बढ़ीं और साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद के गढ़ ढहाने लगीं। उनके प्रबल आघातों से शोषण और उत्पीड़न के दुर्ग धराशायी होते गये। भारत की जनता भी अपनी मुक्ति के संघर्ष में आगे बढ़ी, हर मोर्चे पर वह ब्रिटिश शासकों से मोर्चा लेने लगी।”¹ भारत की राजनीति में भी बड़ा परिवर्तन आया और वह अपने संघर्ष के अन्तिम युग अर्थात् गांधीवादी युग में प्रवेश कर गई। १९१५ में गांधी जी दक्षिण अफ्रीका से स्वदेश आ गये थे।

अपने आरम्भिक दिनों में गांधी जी ने तीन सत्याग्रह अभियान चलाये। उन्होंने सर्वप्रथम १९१७ में भूमिहीन चम्पारन के किसानों के पक्ष में गोरे जमींदारों के विरोध में हस्तक्षेप किया। गांधी जी के हस्तक्षेप से चम्पारन के किसानों को सरकार ने नील की खेती करने या न करने की रियायत दे दी। गुजरात के खेड़ा जिले के किसान तथा अहमदाबाद के मिल मालिकों और मजदूरों के बीच विवाद को समाप्त कराया।

प्रथम विश्वयुद्ध के समाप्त होने के बाद भारतीय मुस्लिमों ने तुर्की के साम्राज्य और धार्मिक प्रभुत्व बनाये रखने के लिए एक अभियान चलाया, जिसे खिलाफत आन्दोलन का नाम दिया गया। मौलाना मोहम्मद अली, शौकत अली तथा अबुल कलाम आजाद ने खिलाफत आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। गांधी जी एवं अन्य कांग्रेसी नेताओं के खिलाफत सम्मेलन में भाग लेने से, खिलाफत आन्दोलन के प्रचार अभियान में भी तेजी आयी। बाद में गांधी जी ने मुस्लिमों की भावनाओं को देखते हुए, खिलाफत आन्दोलन के कार्यकर्ताओं के सामने एक जन संघर्ष का कार्यक्रम रखा और खिलाफत आन्दोलन एवं असहयोग आन्दोलन साथ मिलाकर चलाये गये।

1. अयोध्या सिंह : भारत का मुक्ति संग्राम, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 401।

प्रथम विश्व युद्ध के उपरान्त भारतीयों में आयी निराशा का कारण ये बना कि विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस को सहयोग दिया था, ताकि ब्रिटिश सरकार युद्ध के बाद भारत को स्वराज्य दे दे। लेकिन कांग्रेस को स्वराज्य देने के बजाय "रौलेट ऐक्ट" भारतीयों को मिला। "रौलेट ऐक्ट" को लेकर केन्द्रीय विधान सभा में बहुत विवाद छिड़ा तथा देश में राजनीतिक आक्रोश ने व्यापक रूप धारण कर लिया। गांधी जी ने "रौलेट ऐक्ट" के विरोध में देशव्यापी सत्याग्रह करने का सुझाव दिया। गांधी जी के इस सुझाव के समर्थन में पूरे देश में व्यापक हड़तालें हुईं और हर प्रान्त में विरोध की लहर उठी। ब्रिटिश सरकार ने इस स्वाधीनता आन्दोलन को कुचलने के लिए दमन का सहारा लिया। 13 अप्रैल 1919 के दिन जलियाँवाले बाग में निहत्थी जनता पर ब्रिटिश सरकार ने गोलियाँ चलायीं। इस घटना ने पूरे देश में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध घृणा की लहर फैला दी। हिंसात्मक घटनाओं को देखते हुए गांधी जी ने 18 अप्रैल को सत्याग्रह वापस ले लिया।

सन् 1920 के अन्त में कांग्रेस ने शांतिपूर्ण एवं वैधानिक तरीकों से "स्वराज्य-प्राप्ति" का नागपुर के अधिवेशन में प्रस्ताव रखा। यह असहयोग आन्दोलन अहिंसात्मक तरीके से गांधी जी के नेतृत्व में चला। सन् 1920 से 1922 तक कांग्रेस का असहयोग आन्दोलन जन आन्दोलन बन गया। असहयोग के प्रभाव से स्कूल एवं कालेजों के विद्यार्थियों ने भी कालेजों आदि का बहिष्कार किया। अप्रैल 1921 में गांधी जी के प्रभाव से स्वदेशी पर अधिक जोर दिया जाने लगा। पहली बार असहयोग आन्दोलन से राष्ट्रीय संग्राम में एक नया मोड़ आया। 17 नवम्बर को प्रिंस ऑफ वेल्स भारत की यात्रा पर आये। सम्पूर्ण भारत में राजकुमार के आने का बहिष्कार हुआ। राजकुमार के विरोध में प्रदर्शन करने वालों पर लाठी तथा गोलियाँ चलायी गयीं। बंगाल और आसाम के मज़दूरों ने भी हड़तालें कीं। मालाबार में मोपला के किसानों का विद्रोह। चौरी चौरा की घटना जिसमें विद्रोहियों ने एक थानेदार और 21 सिपाहियों को ज़िन्दा

जला दिया, आदि इस समय की उल्लेखनीय घटनाएँ हैं। चौरी चौरा की घटना को देखते हुए गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया था।

1922 से 1927 ई० तक भारतीय राजनीति के इतिहास में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया, राष्ट्रीय मुक्ति के सम्बन्ध में। बल्कि इस बीच सम्पूर्ण भारत में साम्प्रदायिकता की आग भड़क गयी। असहयोग आन्दोलन में जो हिन्दू-मुस्लिम एकता हुयी थी, वह मुस्लिम लीग के कांग्रेस से अलग होने के कारण भंग हो गयी। मुस्लिम लीग और सन् 1917 में स्थापित हिन्दू महासभा के कारण पूरे देश में दंगे भड़क उठे। आर्य समाज ने भी शुद्धि आन्दोलन आरंभ किया और बहुत से मुसलमानों का शुद्धिकरण करके फिर से हिन्दू धर्म में प्रवेश कराया। मुस्लिम लीग एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कारण फैली साम्प्रदायिकता के विरोध में गांधी जी ने 21 दिन का उपवास किया और सभी से जोर देकर कहा -- "हिन्दू मुस्लिम एकता को हमेशा और सब स्थितियों में बनाए रखना हमारा ध्येय होना चाहिए।"¹

"प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के बाद राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के उभार का समय हिन्दी साहित्य में कवि निराला का अभ्युदय काल भी है। सन् 20 से सन् 47 तक स्वाधीनता प्राप्ति की आकांक्षा उनके साहित्य की मौलिक प्रेरणा है।"² जब भारतमें प्रथम विश्वयुद्ध के बाद ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आन्दोलन जोरों पर था क्योंकि अंग्रेजों ने विश्व युद्ध के उपरान्त भारतीयों पर करों का बोझ लाद दिया था, जिससे गरीब जनता की स्थिति और बदतर हो गयी थी। निराला 1921 में "भिक्षुक" नाम की कविता लिखकर जनमत का ध्यान ब्रिटिश साम्राज्यवाद की नीतियों की तरफ आकृष्ट करना चाहते हैं--

1. उद्धृत द्वारा बिपिन चन्द्र : आधुनिक भारत, संस्करण 1987, पृ० 225।

2. रामविलास शर्मा : निराला की साहित्य साधना, प्रथम संस्करण,

“वह आता---

दो टुक कलेजे के करता पछताता

पथ पर आता ।

पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक,

चल रहा लकड़िया टेक,

मुदठी-भर दाने को-भूख मिटाने को

मुँह फटी-पुरानी झोली का फैलाता---..¹

निराला अपनी कविता “खंडहर के प्रति” में अंग्रेजों के अधीन भारत के सम्बन्ध में अतीत में देखते हैं कि क्या यह वही शक्तिशाली भारत है, जो ऋषियों एवं देवताओं की जन्म भूमि था या अब केवल खंडहर रह गये हैं जो अतीत के महान दिनों की याद दिलाते हैं--

“खंडहर! खड़े हो तुम आज भी ।

अद्भुत अशांत इस पुरातन के मलिन साज ।

विस्मृति की नींद से जगाते हो क्यों हमें ---..²

निराला अंग्रेजों को चोरों की संज्ञा देते हैं, जो भारत को लूटकर ब्रिटेन को वैभवशाली बना रहे हैं और भारतीय जनता की आर्थिक स्थिति दिन ब दिन खराब होती जा रही है--

चूम चरण मत चोरों के तू

गले लिपट मत गोरों के तू³

“जागो फिर एक बार” कविता लिखकर निराला सोयी हुई भारतीय जनता को जगाना चाहते हैं और उनसे यह आह्वान करते हैं कि तुम जागकर दास्ता

1. ओंकार शरद {संपादक} : निराला ग्रन्थावली⁽²⁾, प्रथम संस्करण, पृ० 89 ।

2. अनामिका, तृतीय संस्करण, पृ० 29 ।

3. उद्धृत द्वारा दूधनाथ सिंह : निराला आत्महन्ता आस्था, प्रथम संस्करण, पृ० 172 ।

से मुक्ति पाओ--

जागो फिर एक बार ।
 प्यारे जगाते हुए हारे सब तारे तुम्हें...
 पशु नहीं, वीर तुम,
 समर-शूर कूर नहीं,
 काल-चक्र में हो दबे
 आज तुम राजकुँवर ! --समर-सरताज !¹

राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के समय में निराला ने 1922 में "शिवाजी के पत्र" नाम की कविता लिखी । इस कविता के माध्यम से निराला ने भारतीयों से एकजुट होकर अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्ति का आह्वान किया । यह कविता इसलिए भी अपना विशेष महत्त्व रखती है कि यह समय अहिंसा का उपदेश देने वाले गांधी जी का है । जबकि निराला इस कविता में दासता से मुक्ति पाने के लिए सशस्त्र क्रान्ति के लिए भारतीय जनता से अपील करते हैं --

संगठित हो जाओ---
 आओ, बाहुओं में भर
 भूले हुए भाइयों का,
 अपनाओ अपना आदर्श तुम ।
 चाहिए हमें कि
 तदबीर औ तलवार पर
 पानी चढ़ावें खूब....²

1. ओंकार शरद §संपादक§ : निराला ग्रन्थावली §1§, प्रथम संस्करण, पृ049 ।

2. वही

"निराला संवेदनशील कानों से युगवाणी को सुन लेते थे और आसपास के यथार्थ को पैनी निगाह से देख लेते थे। कहना होगा कि वह उन साहित्य-कारों में से थे जिन्होंने उस समय भारतीय समाज के जीवन के सभी क्षेत्र में फैली हुई गांधीवादी विचारधारा को निराक्षेप स्वीकार नहीं किया। औपनिवेशिक दासता से भारत को मुक्ति दिलाने के उपायों, साधनों और मार्गों सम्बन्धी मूलभूत प्रश्न पर गांधी जी से उनका मतभेद था। गांधी जी तो संघर्ष के क्रान्तिकारी मार्ग को अस्वीकार करते थे।¹ लेकिन निराला ने राष्ट्रीय आन्दोलन के समय में क्रान्तिकारी रचनाएँ लिखीं, जो प्रतीकात्मक अर्थ रखती थीं और मुक्ति में विश्वास खो बैठे लोगों में अपनी कविताओं से आस्था जगायी। निराला "खेवा" शीर्षक गीत में देशवासियों को यह विश्वास दिलाते हैं कि संघर्ष के द्वारा ही उनकी मुक्ति होगी —

डोलती नाव, प्रखर है धार,
संभालो जीवन-खेवन हार ।²

1927 में भारतीय राजनीति में फिर उत्साह आया। "राजनीतिक तौरशङ्कस शक्ति तथा उर्जा की अभिव्यक्ति कांग्रेस के अन्दर जवाहर लाल नेहरू और सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में एक नये वामपक्ष के उदय के रूप में हुई।³ सभी भारतीय राष्ट्रीय नेता "साइमन कमीशन" को लेकर फिर एक बार एक हो गये और सामूहिक रूप से सबने "साइमन कमीशन" का विरोध किया। भारतीय नौजवानों ने भी सक्रिय साझेदारी निभायी। जगह-जगह होने वाले छात्र सम्मेलन इसके प्रत्यक्ष प्रमाण थे। युवा पीढ़ी रूसी क्रान्ति से प्रोत्साहित होकर समाजवाद की तरफ झुकने लगी थी और उन्होंने भारत की "पूर्ण स्वतंत्रता" का प्रचार किया। "1925-27 के जमाने में देश के राजनीतिक

1. ये० पे० चेलिषेव : सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला", प्रथम संस्करण, पृ० 59।

2. ओंकार शरद {संपादक} : निराला ग्रन्थावली {2}, प्रथम संस्करण, पृ० 21।

3. बिपिन चन्द्र : आधुनिक भारत, संस्करण-1987, पृ० 225।

क्षेत्र में एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना थी, मजदूर-किसान पार्टी की स्थापना।¹ प्रथम असहयोग आन्दोलन की असफलता से क्रान्तिकारी सक्रिय राजनीति को बढ़ावा मिला। भगत सिंह एवं बटुकेश्वरदत्त ने सोयी हुयी ब्रिटिश सरकार को जगाने के लिए 8 अप्रैल 1929 को सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली में बम फेंका। बंगाल में भी क्रान्तिकारियों ने राजनीतिक गतिविधियों को दोबारा तेज किया और ब्रिटिश अधिकारियों पर आक्रमण किये। क्रान्तिकारियों का दमन करने के लिए सरकार ने 1931 में भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी दे दी। 1931 में ही सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद इलाहाबाद में शहीद हो गया। महान क्रान्तिकारी देशभक्तों ने अपना बलिदान करके भारतीय जनता में नयी राजनीतिक चेतना जागृत की।

गांधी जी शीघ्र ही दोबारा फिर सक्रिय राजनीति में वापस आ गये और 1928 में कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया तथा उन्होंने राष्ट्रवादियों को एकजुट करना शुरू किया। लाहौर में कांग्रेस अधिवेशन में "पूर्ण स्वराज्य" का लक्ष्य रखा गया और तिरंगा झण्डा फहराया गया। भारतीयों ने "पूर्ण स्वराज्य" का समर्थन किया। सम्पूर्ण भारत में ब्रिटिश सरकार के विरोध में आन्दोलन किये गये। अंग्रेजों ने अहिंसक सत्याग्रहियों का बर्बर तरीके से दमन किया। यतीन्द्र नाथ ने ब्रिटिश सरकार के अन्यायों को विरोध में अज्ञान किया और अपने प्राण त्याग दिये। निराला ने ब्रिटिश सरकार के बर्बर अन्यायों का विरोध किया तथा भारतीय जनता को संघर्ष के लिए प्रेरित किया। यतीन्द्र नाथ के प्राण त्यागने पर निराला ने लिखा----"भारतवर्ष ने जितना सहना था, सह लिया। वह समय निकल गया, जब खिलौना पाकर भारत बहल जाता था। देश समझ गया है कि हाथ पर हाथ धरकर बैठने से काम न चलेगा। भारत में एक नई लहर पैदा हो गई है। नवयुवकों ने रणभेरी बजा दी है।"²

1. अयोध्या सिंह : भारत का मुक्ति संग्राम, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 526 ।

2. उद्धृत द्वारा राम विलास शर्मा : निराला की साहित्य साधना §2§
प्रथम संस्करण, पृष्ठ 16 ।

“भारत में राष्ट्रीय आंदोलन की तीसरी उत्ताल तरंग 1930-32 में आई जब एक तरफ विश्व के महान आर्थिक संकट ने और दूसरी तरफ सोवियत संघ की समाजवादी सफलताओं और चीन की क्रांति के प्रभाव ने दुनिया के विभिन्न देशों में क्रांति की परिस्थिति पैदा कर दी थी।”¹ 12 मार्च 1930 को गांधी जी ने दूसरा सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू किया, 240 मील की लम्बी दांडी की यात्रा करके गांधी जी ने अपने अनुयायियों के साथ नमक कानून तोड़कर नमक बनाया। पूरे भारत में नमक सत्याग्रह आरम्भ हो गया। जो क्षेत्र समुद्र तट से दूर थे, वहाँ लोनी मिट्टी वाली जगह चुनकर नमक बनाया गया। जन-उत्साह बहुत अधिक था, सरकार लोगों की गिरफ्तारी करती और लोग जानबूझकर निर्धारित स्थान पर नमक बनाते। निराला ने इस सत्याग्रह आन्दोलन का समर्थन किया और लखनऊ में सत्याग्रहियों पर पुलिस के अत्याचारों को देखकर उनका हृदय काँप उठा---“स्त्रियों और बच्चों के अंगों पर डंडों की मार कर, घावों से बहती हुई रक्त-धाराओं को देखकर, अपने शासन के सुदर्शन रूप पर इतराने वाली अंग्रेज सरकार के लिए उपयुक्त शब्द हमारे कोश में अभी नहीं, मुमकिन है, पीछे गढ़ लिया जाए।”² निराला जी का कुल्ली ईमानदार और साहसी कांग्रेस का कार्यकर्ता है, जो महात्मा गांधी का पक्का भक्त है। गाँव-गाँव पैदल घूमकर लोगों को कांग्रेस पार्टी का मेम्बर बनाता और राष्ट्रीय आन्दोलन में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेता है। गांधी जी के प्रताप से कुल्ली भी नमक कानून तोड़ता है —“पहले नमक कानून डलमऊ में तोड़ा जाने वाला था, तब कुल्ली ने ही खबर दी थी कि पुलिस गोली चलाने की तैयारी में है। तब कार्यकर्ता डलमऊ से हटकर रायबरेली चले गये थे, ताकि पुलिस को तकलीफ न हो।”³

अयोध्या सिंह, भारत का मुक्ति संग्राम, पृ० सं०, पृ० 551 ।

2. उद्धृत द्वारा राम विलास शर्मा : निराला की साहित्य साधना §2§ प्रथम संस्करण, पृ० 16 ।

3. कुल्ली भाट, पंचम संस्करण, पृ० 87 ।

आन्दोलन तेजी से पूरे भारत में फैल गया था । देश में सभी ने हड़ताल, प्रदर्शन तथा विदेशी वस्तुओं आदि के बहिष्कार में भाग लिया । औरतों ने भी पुरुषों के साथ-साथ सक्रिय राजनीति में कंधे से कंधा मिलाकर भाग लिया । आन्दोलन शीघ्र ही गांधी जी की बनायी हुयी सीमाओं को पार कर गया । मजदूरों ने पूरे भारत में हड़तालें कीं । नौजवानों ने भारत को मुक्त कराने के लिए उग्र रूप धारण कर लिया । किसान लगान-बन्दी के रास्ते पर चले । संयुक्त प्रान्त के किसानों ने सबसे अधिक विद्रोह किया और लगान देने से स्पष्ट इन्कार कर दिया । बिहार तथा अन्य राज्यों के किसानों ने भी विद्रोह कर दिया । जैसे भी गांधी जी के सिद्धान्त और काग्रेस से लोगों का मोहभंग हो गया था । 1931 में गांधी जी एवं वायसराय में एक समझौता हुआ । जिसके बाद गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन वापस ले लिया और गांधी जी को अपना एक मात्र प्रतिनिधि मानकर लन्दन भेजना स्वीकार कर लिया । जिसका सभी ने विरोध किया । काग्रेस के कार्यकर्ता भी देश से अधिक अपने को संवारने में लगे थे । काग्रेस के कार्यकर्ताओं के चरित्र का यथार्थ चित्रण निराला ने "कुल्लीभाट" में किया है । "कुल्लीभाट" का नायक कुल्ली गाँव-गाँव में दौड़ कर काग्रेस के मेम्बर बनाता है । गर्मी में दौड़ने के कारण वह बीमार पड़ जाता है, कुल्ली के बीमार होने पर काग्रेस के कार्यकर्ता कुल्ली का इलाज नहीं करवाते हैं और वह तड़प-तड़प कर मर जाता है । वहीं दूसरी तरफ काग्रेस के प्रेसीडेन्ट साहब अपना नया मकान बनाते हैं और कुल्ली के इलाज के लिए पैसे मांगने पर नियम और सिद्धान्त की बात करते हैं ।

दूसरी तरफ सशस्त्र क्रान्ति से भारत को मुक्त कराने वाले इच्छुक नौजवान अहिंसात्मक सत्याग्रहियों से भिन्न थे, वे किसान एवं मजदूर वर्ग को मुख्य शक्ति मानकर उनका संगठन कर रहे थे । इसी के फलस्वरूप भारतीय किसानों एवं मजदूरों ने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ विद्रोह कर दिया ।

"अप्सरा" उपन्यास का पात्र चन्दन भी क्रान्तिकारी है, जो सशस्त्र क्रान्ति

के माध्यम से भारत की मुक्ति का स्वप्न देखता है और लखनऊ जाकर किसानों को संगठित करता है। निराला ने स्वयं भी गढ़ाकोला जाकर किसानों को संगठित किया था, निराला के प्रभाव के कारण ही गढ़ाकोला एवं आसपास के किसानों ने संगठित होकर लगान देने से इन्कार कर दिया था।

निराला कृत "अलका" उपन्यास के किसान भी लगान बन्दी को लेकर जमींदार के खिलाफ विद्रोह करते हैं और स्वराज्य के सम्बन्ध में चिन्तित भी दिखायी देते हैं--

-"सुराज क्या है रे।" बुधुआ ने महंगू से पूछा।

"किसानों का राज।" गम्भीर होकर महंगू ने कहा।

"तो क्यों रे महंगू। बुधुआ ने पुनः प्रश्न किया -- "फिर ये जमींदार और पटवारी क्या करेंगे।"

"झख मारेगे, और क्या करेंगे।"

बुधुआ कुछ समझ न सका... बुधुआ ने डरते-डरते पलकें तिलमिलाते हुए धीरे से पूछा --"ये कहाँ जायेंगे रे महंगू।"

"तू तो बात पूछता है, और बात की खाल भी पूछता है। गांधी महाराज का प्रताप ऐसा है कि इनके हाथ बंध जायेंगे और बोल बन्द हो जायगा, तब ये किसानों के तलवे चाटेंगे।" कहकर महंगू अपनी दाढ़ सुजलाने लगा।

"तो लगान फिर किसको दिया जायेगा।"

"किसी को नहीं, लगान दिया गया तो सुराज कैसा।"

"तब तो बड़ा अच्छा है।"

"अप्सरा" एवं "अलका" उपन्यास में निराला ने जमींदारों, गोरों, तहसीलदार, धानेदार, पटवारी आदि के अमानवीय अत्याचारों और षडयन्त्रों का यथार्थ चित्रण किया है लेकिन इन उपन्यासों के किसानों में राजनीतिक चेतना का अभाव है। "अप्सरा" और "अलका" में किसानों के जीवन और उनके मनोभावों का सफल अंकन हुआ है। लेकिन यह किसान-वर्ग 1929-1932 ई०

के आन्दोलन से पूर्व का है, क्योंकि उसमें वह आत्मजागृति और विद्रोह की भावना नहीं है जो तद्विषयक आन्दोलनों के पश्चात् किसानों में व्याप्त हुई ।¹

प्रथम विश्व युद्ध के बाद से लेकर 1935-36 तक की भारतीय राजनीति के मोड़, स्वाधीनता आन्दोलन की नयी दिशाएँ, भारतीय जनता का राष्ट्रीय मुक्ति के लिए संघर्ष, गांधी जी की विचारधारा, क्रान्तिकारियों की नीतियाँ और स्वयं निराला की राजनीतिक विचारधारा 1935 तक के निराला द्वारा लिखित साहित्य में स्पष्ट रूप में है ।

"1935 और 1939 के बीच की अवधि में कई अन्य महत्वपूर्ण घटनाएँ हुईं, जिन्होंने एक प्रकार से राष्ट्रवादी आंदोलन और कांग्रेस को नयी दिशा में मोड़ा ।"² पूंजीवादी देशों में व्यापार के स्तर में गिरावट आयी तथा पूरे विश्व में आर्थिक मंदी के बादल छा गये । लेकिन सोवियत संघ में ठीक इसके विपरीत था, वहाँ पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा आर्थिक स्थिति ठीक थी । सोवियत संघ की आर्थिक स्थिति को देखते हुए विश्व के लोगों को मार्क्सवाद, समाजवाद ने आकर्षित किया । विश्व में मंदी होने के कारण भारतीय मजदूरों एवं किसानों की आर्थिक स्थिति बड़ी दयनीय थी । मजदूर अपनी स्थिति को देखते हुए ट्रेड यूनियन एवं अधिकारों की माँग करने लगे । किसानों ने भी 1936 में अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना की, इसी साल भारत में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुयी । "1937-39 के जन आंदोलनों में एक बहुत महत्वपूर्ण आंदोलन था देशी रियासतों की प्रजा का । यहां की जनता ने संगठित होकर साम्राज्यवाद और सामंतवाद के खिलाफ बड़े-बड़े मोर्चे लगाए ।"³ इसी समय की एक महत्वपूर्ण घटना थी,

-
1. कुँवरपाल सिंह : हिन्दी उपन्यास : सामाजिक चेतना, प्रथम संस्करण, पृ० 136 ।
 2. बिपिन चन्द्र : आधुनिक भारत, संस्करण-1987, पृ० 235 ।
 3. अयोध्या सिंह : भारत का मुक्ति संग्राम, प्रथम संस्करण, पृ० 655 ।

साम्प्रदायिकता में बढ़ोत्तरी । जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम अल्पमत ने हिन्दू समुदाय बहुमत से खतरा हो गया है, का प्रचार करना शुरू कर दिया और 1940 में मुस्लिम लीग ने प्रथक राज्य की मांग रखी । हिन्दू महासभा ने भी वातावरण में जहर घोला । देखते-देखते पूरे देश में साम्प्रदायिकता की जड़ें मजबूत हो गयीं ।

1939 में द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया । ब्रिटिश सरकार को युद्ध में भारतीयों के सहयोग की आवश्यकता हुयी । सहयोग प्राप्त करने के लिए क्रिप्स के नेतृत्व में एक मिशन भारत आया । कांग्रेस के नेताओं तथा क्रिप्स के बीच वार्तालाप सफल नहीं रही । ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ पूर्ण भारत में जन आक्रोश फैल गया था । जगह-जगह किसान-मजदूर आदि आन्दोलन कर रहे थे । जन आक्रोश को देखते हुए कांग्रेस ने 1942 में बम्बई में "भारत छोड़ो" आन्दोलन का प्रस्ताव पास किया । "भारत छोड़ो" आन्दोलन का गांधी जी के नेतृत्व में अहिंसक जनसंघर्ष के रूप में प्रस्ताव रखा गया । कांग्रेस प्रतिनिधियों से गांधी जी ने कहा--"इसलिए मैं तुरंत स्वतंत्रता चाहता हूँ, अगर हो सके आज ही रात, पौ फटने से पहले.... मैं पूर्ण स्वतंत्रता से कम किसी भी चीज से संतुष्ट नहीं हो सकता.... यह है एक मंत्र,.... जो मैं आपको देता हूँ ।.....मंत्र है : "करो या मरो" । हम भारत को स्वतंत्र करेंगे या इस प्रयास में मर मिटेंगे, हम अपनी गुलामी को स्थायी बनाया जाता देखने के लिए नहीं जिन्दा रहेंगे ।"। लेकिन ब्रिटिश सरकार ने आन्दोलन आरम्भ करने से पहले ही गांधी जी तथा अन्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया । राष्ट्रवादी नेताओं की गिरफ्तारी की खबर को सुनकर पूरा देश भाँचका रह गया और विरोध में सभी जगह आन्दोलन आरम्भ हो गये । पूरे देश में हड़तालें हुयीं । स्कूल कॉलेज बन्द हो गये, टेलीफोन तथा रेलवे लाईन आदि उखाड़ दी गयीं । सरकारी इमारतों को आग लगायी गयी । छात्र एवं किसान आन्दोलन भी पूरे भारत में फैल गये ।

कुछ क्षेत्रों में क्रांतिकारियों ने अपनी सरकारें बना लीं। सरकार ने 1942 के इस आन्दोलन को कुचलने का पूरा प्रयास किया। प्रदर्शनकारियों को गोली से उड़ा दिया गया, जुलूसों पर बेरहमी से लाठी बरसायी गयी। जिन गांवों में विद्रोह हुआ था, उन गांवों को जूमना देना पड़ा। आखिरकार 1942 के अन्त होते-होते इस विद्रोह को सरकार ने पुलिस एवं सेना के जोर पर दबा दिया। इस समय का कम्युनिस्ट पार्टी का योगदान सराहनीय है। कम्युनिस्ट पार्टी ने मजदूर एवं किसानों को संगठित करके ब्रिटिश सरकार के खिलाफ विद्रोह किया, ब्रिटिश सरकार ने इस विद्रोह को दबाने के लिए निर्ममतापूर्वक विद्रोहियों का दमन किया।

1941 में सुभाष चन्द्र बोस भी भारत से निकल गये थे और दक्षिण पूर्व एशिया में जाकर "आज़ाद हिन्द फौज" का गठन किया। जापान के कब्जे से भारतीय सैनिकों को छुड़ाकर तथा उत्साही नौजवानों का संगठन करके सुभाष चन्द्र बोस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीयों की आशाएँ इस संगठन के साथ जुड़ गयीं थीं। 1945 में फासिस्ट जर्मनी एवं जापान ने बिना शर्त के हथियार डाल दिये और दूसरा विश्वयुद्ध इनकी हार के साथ ही समाप्त हो गया।

"छायावाद की राष्ट्रीयता गांधीवाद से पृथक ही रही है, सन् 1939 के दौर में निराला ने गांधी जी तथा नेहरू को भी अस्वीकार कर दिया।"¹ द्वितीय विश्व युद्ध के समय में भारतीय जनता पर अनेक मुसीबतें आईं। बेरोज़गारी और भुखमरी तथा ब्रिटिश साम्राज्यवाद का दमन और नंगा नाच। इस समय में निराला अन्य प्रगतिशील लेखकों के समान भारत को ब्रिटिश दासता से मुक्ति दिलाने के प्रयत्न में रहे। निराला का गांधी जी, नेहरू तथा अन्य कांग्रेस के नेताओं से भी मोहभंग हो गया था। बाद

1. सं० सोमदत्त : साक्षात्कार, रमेश कुन्तल मेघ "समाज विज्ञानी विचारक तथा जनपंथी कवि निराला को दोबारा समझने के लिए" शीर्षक लेख, अप्रैल-जून 1988, पृ० 69 ।

की रचनाएँ "कुरमुत्ता", "अणिमा", "नये पत्ते" और "बेला" अधिक यथार्थ-वादी रचनाएँ हैं। इन रचनाओं में निराला ने मातृभूमि की मुक्ति का आह्वान, शोषितों के प्रति सहानुभूति और वर्तमान व्यवस्था के प्रति विरोध आदि को अपना विषय बनाया है। निराला ने राजनीतिक नेताओं, पूँजी-वादी समाज के झूठे आदर्शवाद का भंडाफोड़ किया है। सन् 42 में जब "भारत छोड़ो" आन्दोलन का प्रस्ताव पास हुआ। "भारत छोड़ो" प्रस्ताव को लेकर भारत में जन-आन्दोलन हुए, अंग्रेजों ने जन-आन्दोलन को बर्बरता के साथ दबाया और कांग्रेस के नेताओं को जेल भेज दिया। निराला ने इस समय कजली लिखी--

"महंगाई की बाढ़ बढ़ आई, गाँठ की छूटी गाढ़ी कमाई,
भूख-नीचे खड़े शरमाये, न आस वीर जवाहरलाल।
कैसे हम बच पाएँ निहत्ये, बहते गये हमारे जत्ये,
राह देखते हैं भरमाए, न आस वीर जवाहरलाल।"¹

भारत के लोग यह आशा कर रहे थे कि कांग्रेसी नेता जेल से छुटने के बाद आयेगे और उनकी समस्याओं का हल करेंगे, लेकिन नेता नहीं आये, यह कजली लिखकर निराला ने भारतीय राजनीतिक नेताओं का चरित्र जनता के सामने रख दिया और जनता को उन्होंने चेतावनी देते हुए अपना रास्ता खुद बनाने के लिए कहा। "सन् 43 से ही निराला अपनी रचनाओं में इस बात पर जोर देने लगे थे कि कांग्रेसी नेता अंग्रेजों से समझौता करने वाले हैं।"² सन् 46 में भारत में मुक्ति के लिए शक्तिशाली आन्दोलन हुए, किसानों के संघर्ष, मज़दूरों की हड़तालें, बम्बई में खानपान की व्यवस्था को लेकर "तलवार"

1. बेला, संस्करण 1962, पृष्ठ 54।

2. रामविलास शर्मा : निराला की साहित्य साधना, प्रथम संस्करण,
पृष्ठ 89।

नाम के जहाज के नौसैनिकों की हड़ताल । इस हड़ताल से प्रभावित होकर अन्य कुछ जहाजों के नौसैनिकों ने भी हड़तालें कर दीं । जिसे दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार ने गोरे सैनिकों को कमाण्ड दे दी । भारतीय एवं गोरे सैनिकों में आमने-सामने सशस्त्र मुठभेड़ हुयी । सन् 46 में छात्रों के आन्दोलन को दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार ने निर्ममतापूर्वक गोली चलवायी । छात्रों के खून से सड़कें लाल हो गयीं, इन छात्रों के बलिदान का अभिनन्दन करते हुए निराला ने लिखा--

युवक जनों की है जान,
खून की होली जो खेली ।
पाया है लोगों में मान,
खून की होली जो खेली ।¹

वहीं कांग्रेसियों ने अंग्रेजों के साथ मिलकर जनता को मार्गभ्रष्ट किया, अहिंसा, गांधीभक्ति और समाजवाद आदि के नारों से जन संघर्ष को दबा दिया । निराला ने कहा था---"लखनऊ, उन्नाव, प्रयाग चारों ओर इस समय देश भूखों मर रहा है और हम कायर हैं, गांधी का रंग भी खूब चढ़ा है, अभी क्या ! आगे लोग-बाग कीड़े मकोड़ों की तरह मरेगे ।"² ठीक निराला के दृष्टिकोण के समान ही गांधी जी और नेहरू का जादू भारतीय जनता के दिलों से खत्म होता गया । निराला साम्यवादी सिद्धान्तों से प्रभावित थे और जन-सामान्य के लिए वह हमेशा लड़े । लेकिन उन साम्यवादियों से जिन्होंने साम्यवाद का आवरण ही ओढ़ रखा था, जो जनता के साथ साम्यवाद का नाटक करके उनकी भावनाओं से खेल रहे थे, निराला जी उन पर भी प्रहार करते हैं---

1. रामविलास शर्मा {संपादक} : राग-विराग, द्वितीय संस्करण, पृ० 159 ।

2. उद्धृत द्वारा गंगा प्रसाद पाण्डेय : महाप्राणा निराला, प्रथम संस्करण, पृ० 206 ।

सरसता में फ़ाड

कैपिटल में जैसे लेनिनगाड ।¹

अतः हम कह सकते हैं कि निराला ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद की आर्थिक नीति, राजनीतिक चालों को अच्छी तरह से पहचाना और उनका गहन अध्ययन किया था । गहन अध्ययन करने के उपरान्त ही निराला ने ब्रिटिश सरकार का विरोध किया और भारत की स्वतन्त्रता के लिए अपने साहित्य में क्रान्ति का आह्वान किया । निराला ने भारतीय राजनीतिक नेताओं की विचार धारा का भी विरोध किया, क्योंकि वह जानते थे कि भारत को ब्रिटिश साम्राज्यवाद की दासता से तो मुक्ति मिल जायेगी, लेकिन स्वतन्त्रता के बाद भारतीय नेताओं और पूँजीपतियों का रूप ब्रिटिश सरकार से भिन्न नहीं होगा । इसीलिए निराला ने भारत की स्वतन्त्रता को जन-सामान्य की स्वतन्त्रता के रूप में लिया । जब तक जन सामान्य का शोषण होता रहेगा सच्चे अर्थों में भारत को स्वतन्त्रता नहीं मिलेगी । 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतन्त्र तो हो गया लेकिन जन-सामान्य की वही स्थिति बनी रही जो 1947 से पहले थी ।

आर्थिक चेतना :

सामाजिक चेतना के निर्धारण में हमारी आर्थिक समस्याओं और आर्थिक चेतना की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका होती है । निराला की सामाजिक चेतना के निर्माण में उनकी आर्थिक दृष्टि की अपनी विशिष्ट भूमिका है । वास्तव में निराला पराधीन देश की भारतीय जनता की निर्धनता को लेकर अपनी रचनाओं में चिन्तित दिखाई देते हैं । वे पीड़ित और शोषित जनता को अपनी आर्थिक परिस्थितियों से टक्कर लेने, लड़ते रहने को प्रेरित करते हैं, और अपनी क्रांतिकारी रचनाओं से उनमें आशा को ज्योति प्रज्ज्वलित करते हैं ।

1. कुरुमुत्ता, चतुर्थ संस्करण, पृ० 43 ।

निराला भारतीय जनता की दयनीय आर्थिक स्थिति को देखकर अपने साहित्य में जन-सामान्य के उर में ऐसे अंकुरों को जगाना चाहते हैं, जो अपनी आशाओं एवं आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए पूंजीवाद के विरुद्ध संघर्ष करें। निराला ने अपने जीवन में बड़ी गरीबी देखी थी। वे एक साधारण कृषक परिवार में पैदा हुए थे। जीवन भर एक-एक पैसे के लिए संघर्ष करते रहे थे। इसलिए उनकी रचनाओं में पूँजीपतियों और जमींदारों, राजाओं तथा ब्रिटिश साम्राज्य-वाद की आर्थिक नीतियों के विरुद्ध विद्रोह का स्वर मिलना स्वाभाविक है।

निराला के पिता महिषादल राज्य {बंगाल} के राजा के यहाँ सिपाही की नौकरी करते थे। निराला ने राजा की हवेली और उसके ठाठ-बाट को देखकर अपनी आर्थिक स्थिति से तुलना की, तुलना करने के उपरान्त अपने पिता को परामर्श दिया -- "तुम्हारे मातहत इतने सिपाही हैं, तुम इस राजा को लूट क्यों नहीं लेते।" तो हम देखते हैं कि निराला बचपन से ही पूंजीवाद के विरोधी हैं और जीवन भर उन्होंने अपने साहित्य में पूंजीपति वर्ग का विरोध किया। वे जीवन भर समाज की भुखमरी, बेकारी और गरीबी आदि की समस्याओं का हल खोजते रहे, फलस्वरूप इस निर्णय पर पहुँचे कि पूँजीपतियों से सम्पत्ति का अधिकार छीनकर जनता को उसका स्वामी बनाना चाहिए।

निराला ने अपने बचपन में स्वदेशी आन्दोलन को देखा था, जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार को लेकर चलाया गया था ताकि स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग से भारतीय जनता की आर्थिक स्थिति में सुधार आये। जब भारतीय राजनीति में गांधी जी का उदय हुआ तो उन्होंने भी स्वदेशी का प्रचार किया। निराला बंगाल में चले स्वदेशी आन्दोलन और गांधी जी के स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने

बाद में अपने उपन्यास "चोटी की पकड़" एवं "अप्सरा" में स्वदेशी पर बल दिया, बल्कि "चोटी की पकड़" उपन्यास की पृष्ठभूमि तो स्वदेशी आन्दोलन ही है। निराला "चोटी की पकड़" उपन्यास में विदेशियों §अंग्रेज§ के चरित्र का उद्घाटन करते हैं, जिनके कारण भारतीय व्यापारियों का व्यापार एवं ग्रामीण उद्योग ठप्प हो गये हैं--"देश में विदेशी व्यापारियों के कारण अपना व्यवसाय नहीं रह गया। हम उन्हीं के दिये कपड़े से अपनी लाज ढकते हैं, उन्हीं के आइने में मुँह देखते हैं, उन्हीं के सेन्ट, पौडर, लेवेन्डर, क्रीम लगाते हैं, उन्हीं के जूते पहनते हैं, उन्हीं की दियासलाई से आग जलाते हैं। ब्राह्मण की आग गई, क्षत्रिय का वीर्य गया, वैश्य का व्यापार चौपट हुआ। यह सब हमको लेना है। इसी के रास्ते हम हैं।... स्वदेशी वाला भाव हमको घर-घर फैलाना है।"। अतः निराला स्वदेशी वाला भाव घर-घर पहुँचाना चाहते हैं ताकि गरीब भारतीय जनता की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आये और वह समृद्ध हो।

हालाँकि निराला गांधी जी के विचारों से पूर्ण रूप से सहमत नहीं थे और उन्होंने बराबर गांधी जी के सिद्धान्तों का विरोध किया, क्योंकि गांधी जी जमींदारों, पूँजीपतियों को विशिष्ट अधिकारों के पक्ष में थे। वे नहीं चाहते थे कि पूँजीपतियों को उनकी सम्पत्ति से वंचित किया जाये। लेकिन निराला किसानों और मजदूरों की मुक्ति का रास्ता सम्पत्ति पर दलित पीड़ित मजदूर किसानों के स्वामित्व के रूप में देखते हैं। क्योंकि जब तक जायदाद पर जमींदारों व पूँजीपतियों का अधिकार रहेगा तब तक गरीब जनता का शोषण होता रहेगा। गांधी जी के विरोधी होते हुए भी निराला गांधी जी के "चरखा" आन्दोलन से प्रभावित थे, जिसके कारण भारतीय जुलाहों की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आया और राष्ट्र को भी करोड़ों रुपये का लाभ हुआ था। गांधी जी के चरखा के विरोध में रवीन्द्र

नाथ ने एक लेख लिखा था। निराला ने रवीन्द्र नाथ के दृष्टिकोण के विरोध में तथा गांधी जी के समर्थन में लिखा -- "वे भारतीय समाज को चरखा चलाकर अपना कपड़ा आप बना लेने का उपदेश देते हैं। इससे करोड़ों रूपयों की बचत और फायदा देश के निवासियों को है। इससे वे परावलंबी न रहेंगे। स्वावलंबी हो जाना ही शक्ति का सूचक है। इस तरह शक्ति-वृद्धि के साथ-साथ देशवासी स्वराज्य की प्राप्ति नहीं कर सकेंगे, यह कौन कह सकता है।" 1

प्रथम विश्वयुद्ध के उपरान्त ब्रिटिश उपनिवेशवादियों द्वारा लाये गये करों के बोझ का उद्घाटन निराला अपनी कविताओं भिक्षुक, दीन आदि में करते हैं, जिनमें मेहनतकशों की दयनीय आर्थिक स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है--

"भूख से सूख ओठ जब जाते
दाता-भाग्य-विधाता से क्या पाते ।--
घूँट आसुओं के पीकर रह जाते ।
चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए ।" 2

ब्रिटिश साम्राज्यवाद का मूल उद्देश्य भारत का आर्थिक शोषण करना और ब्रिटेन को अधिक से अधिक वैभवशाली बनाना था। ब्रिटेन के पूँजीपति भारत का अधिक से अधिक आर्थिक शोषण करके ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाना चाहते थे, वे यहाँ से सस्ते दामों पर कच्चा माल खरीदकर ब्रिटेन ले जाते थे और वहाँ से माल तैयार करने के बाद उसको उच्च दामों में भारत में बेचते थे। उन्होंने कुछ भारतीय व्यापारियों को भी अपने साथ

1. प्रबन्ध प्रतिमा, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ 3 ।

2. ओंकार शरद [संपादक] : निराला ग्रन्थावली [2], प्रथम संस्करण, पृष्ठ 89 ।

साझेदार बना रखा था, लेकिन बागडोर उन्हीं के हाथों में थी। निराला ब्रिटिश साम्राज्यवाद की इस आर्थिक नीति की चाल बाजियों को समझते थे। यहाँ उनके ब्रिटिश साम्राज्यवाद विषयक विचार द्रष्टव्य हैं:--"साम्राज्यवाद इंग्लैंड की राजनीति का मूल है। पूँजी के द्वारा वाणिज्य शक्ति की वृद्धि के इतिहास के साथ-साथ साम्राज्यवाद का इतिहास इंग्लैंड के साथ गुँथा हुआ है। पूँजी की ही तरह यह हृदयहीन है। अंग्रेजों की शक्ति का समस्त संसार पर प्रभाव है। साथ-साथ अपनी वृत्ति या जातीय साम्राज्यवाद-जीवन के कारण इंग्लैंड संसार भर में बदनाम है। इतिहास के जानकार जानते हैं कि इंग्लैंड की सरकार पूँजीपतियों की सरकार है और साम्राज्यवाद उसकी जीवनी-शक्ति का मूल आधार है।"¹ प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारतीय सरमायेदारों ने कपड़ा मिल और नये-नये उद्योग स्थापित किये और खूब मुनाफा भी कमाया बाजार में स्वदेश में निर्मित कपड़ा भी आ गया था-जिससे भारत के गाँवों में स्थापित छोटे-छोटे उद्योग नष्ट हो गये थे। इस कारण गाँव के कारीगर तथा मजदूरों की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गयी थी। कारीगरों तथा मजदूरों को रात-दिन कड़ी मेहनत करने के बाद भी रोटी जुटाना मुश्किल हो गया था। निराला जी भारतीय एवं विदेशी पूँजीपतियों पर प्रहार करते हैं, जिनके कारण गाँवों के कारीगर तबाह हो गये हैं:--"मिलों का मुकाबला है, ...मिल वालों...को...तरफदारी प्राप्त है, दलाल हैं ये लोग, विघ्न डालेंगे, देहात के बाजारों में इनका माल आता है, ज्यादातर विदेशी माल हैं, दुकानदारों को ये लोग बाधे हैं, माल खपाते हैं, विदेशी बनियों का भी सरकार पर प्रभाव है, वे ज्यादाती करने की प्रेरणा देते होंगे, बड़ी मुश्किलों का सामना है। देश के इन गधों से ईश्वर पार लगाये।"²

1. उद्धृत द्वारा रामविलास शर्मा : निराला की साहित्य साधना §2§,

प्रथम संस्करण, पृ० 15 ।

2. चोटी की पकड़,

चतुर्थ संस्करण,

पृ० 141 ।

सन् 1917 की रूस की महान अक्टूबर-क्रान्ति ने सम्पूर्ण विश्व में उपनिवेशवाद-विरोधी आन्दोलन के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की । भारत पर भी रूस की क्रान्ति का प्रभाव पड़ा । सम्पूर्ण भारत में किसान तथा मजदूरों में विद्रोह की भावना जागृत हुयी और भारत में समाजवादी विचार फैलने लगे । भारत में विद्रोह की भड़की हुयी ज्वाला को शान्त करने के लिए ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने मजदूरों को रियायतें देने की घोषणा की कि मजदूरों और पूंजीपतियों के हित एक समान हैं । निराला अंग्रेजों की इस कूटनीति को समझते थे--"मजदूर दल को भी खुश करना है । काम मजदूर ही करते हैं । उन पर सवारी कैसे बिना इंग्लैंड के लिए भी खतरे में पड़ने का डर है । कहीं उनके विचारों ने पलटा खाया--रूस पड़ोस ही में है--तो फिर पूंजीपति लोग अकेले राष्ट्रीयता का बोझ कैसे लादेंगे ।"1 निराला 'परिमल' की "बादल राग" नामक कविता में क्रान्ति पर बल देते हैं, क्योंकि वह यातनाग्रस्त लोगों की खुशाहाली के लिए संघर्ष के लिए आह्वान करते हैं । संघर्ष ही दुःख तथा शोषण से मानवता को मुक्ति दिलायेगा ।

"निराला की सांस्कृतिक चेतना बहुत ही प्रखर रही है । उसी ने, सन् 17-20 के ब्रिटिश आतंक से परास्त न होकर, आतंक की कमजोरी दिखाते हुए विप्लवी वीर से किसान की तरफ देखने को कहा था । सन् 17 में जिस महान जन-क्रान्ति ने विश्व-पूँजीवाद की जड़ें हिला दी थीं, उसकी प्रतिध्वनि निराला के "बादल राग" में सुनाई दी"2--

"जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,

-
1. उद्धृत द्वारा रामविलास शर्मा : निराला की साहित्य साधना §2§, प्रथम संस्करण, पृ० 18 ।
 2. रामविलास शर्मा : स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य, प्रथम संस्करण, पृ० 114 ।

ऐ विप्लव के वीर !
 घूस लिया है उसका सार,
 हाड़ मात्र ही है आधार, "1

"तोड़ती पत्थर" कविता में निराला ने गरीबों की दरिद्रता का और यातनाओं का यथार्थ रूप जनता के सामने रखा कि गर्म तेज चलती लू की दोपहरी में एक महिला थका देने वाला श्रम करके सड़क बनाने का काम करती है जब जाकर कहीं अपने जीवन के कष्ट भरे दिन बिता रही है, वहीं दूसरी तरफ वह अमीर हैं, जो जनता का अधिक से अधिक शोषण करके ऐश्वर्य का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इस कविता में निराला अन्याय तथा अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष का संदेश देते हैं:--

"गुरु हथौड़ा हाथ
 करती बार-बार प्रहार
 सामने तरुमालिका अट्टालिका, प्राकार ।"2

1917 में चम्पारन के भूमिहीन किसानों के पक्ष में गांधीजी के हस्तक्षेप करने से किसानों में जागृति आयी जिससे कि किसानों का उत्साह भी बढ़ा। किसानों ने अब निरंकुश अत्याचारों के विरुद्ध संगठित होकर विद्रोह करने आरम्भ कर दिये क्योंकि जमींदार आदि किसानों पर बड़ा अत्याचार करते थे। अंग्रेजों ने अपनी कूटनीति से राजाओं तथा जमींदारों को अपनी तरफ मिला लिया था। भारतीय स्वाधीनता संग्राम का दमन करने में यह राजा तथा जमींदार अंग्रेजों के प्रमुख सहायक थे। निराला ने महिषादल राज्य के राजा के यहाँ रहकर जमींदारी व्यवस्था का अन्यायी रूप स्वयं देखा था। अपने "चोटी की पकड़" उपन्यास में निराला ने राजा-महाराजाओं के विलासिता पूर्ण जीवन के सम्बन्ध में लिखा है--"यह स्वर्ग दिखता हुआ दृश्य नरक है।

1. अनामिका, तृतीय संस्करण, पृ० 79 ।

2. चोटी की पकड़, चतुर्थ संस्करण, पृ० 63 ।

ये राजे-महाराजे राक्षस । ये देवी-देवता पत्थर के, काठ के, मिट्टी के ।¹ इसी उपन्यास में निराला रजवाड़ों, तअल्लुकदारों तथा पुलिस अफसरों के चरित्र को उजागर करते हैं किस प्रकार यह सब मिलकर गरीब रैय्यत के साथ पशुओं जैसे अत्याचार करते हैं — "राज्य की क्रिया का ढंग सब स्थानों में एक-सा है । सब जगह एक ही प्रकार के नारकीय नाटक, षड्यंत्र, अत्याचार किये जाते हैं । सब जगह रैय्यत की नाक में दम रहता है जमींदार हो तअल्लुकेदार, राजा हो या महाराज, कृपा कभी अकारण नहीं करता ।.... वह और उसके कर्मचारी प्रायः दुश्चरित्र होते हैं, लोभी, निकम्मे, दगाबाज । .. निर्दोष युवतियों की इज्जत जाती है, रिश्वत में रुपये लिये जाते हैं, ... पुलिस भी साथ ली जाती है । कभी चढ़ा अमरी की प्रगति में दोनों अपने-अपने हथियारों का प्रयोग करते रहते हैं ।"² इसी उपन्यास में जमींदारों, राजाओं के अमानवीय जुल्मों का उल्लेख निराला करते हैं कि किस प्रकार किसान को लगान न देने के कारण धोखे से उसे बुलाकर जान से मार दिया जाता है--"किसी ने लगान नहीं दिया । वह गरीब है । विश्वास दिलाकर बुलाया गया कि सरकार से अपना दुख रोये । आने पर अँधरी कोठरी में ले जाया गया । वहाँ ऐसी मार पड़ी कि उसका दम निकल गया ।"³ किसान इतने बेबस थे मार खाने के बाद भी न्याय के लिए इन्हीं राजा-महाराजाओं के पास उन्हें जाना पड़ता--"एक ओर गाँव में गरीब किसान छप्परो के नीचे, दूसरी ओर दुर्ग में महाराज धन-धान्य और हीरे-मोतियों से भरे प्रासादों में, फिर भी उन्हीं के पास फैसले के लिए-न्याय के लिए जाना और उन्हें भगवान् का रूप मानना नियम था ।"⁴

1. चोटी को पकड़, चतुर्थ संस्करण, पृ० 63 ।

2. वही पृ० 51 ।

3. वही पृ० 52 ।

4. निराला : प्रभावती, संस्करण : 1967, पृ० 48 ।

देशी राज्यों के राजाओं, ताल्लुकेदारों, जमींदारों के प्रजा पर अत्याचारों को देखकर निराला का मन खिन्न हो जाता था। प्रजा पर इन अमानवीय अत्याचारों के लिए खासकर अंग्रेज ही जिम्मेदार थे, जो प्रजा पर हुए अत्याचारों को देखकर भी उन्हें छिपाने का प्रयत्न करते थे। निराला ने इन अमानवीय अत्याचारों को देखकर तथा पढ़कर क्रोध में लिखा—“सभ्यता और न्याय की टोंग रचने वाली ब्रिटिश सरकार यदि अपने हिमायती, दुष्ट, व्यभिचारी देशी नरेशों की विलासिता और अत्याचारों को इस प्रकार छिपाने का प्रयत्न करेगी, यदि वह उनकी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए निरीह और निर्बल प्रजा का इस प्रकार बलिदान करेगी, न्याय का गला इस प्रकार घोटिगी तो शीघ्र ही उसे सभ्य जातियों के सामने मुँह काला करना पड़ेगा। उसे इन पापों का शीघ्र ही दंड मिलेगा।”¹

“अलका” के जमींदार बाबू मुरलीधर भी अवध के ऐसे ही ताल्लुकेदार हैं जिनके पितामह ने अंग्रेजों के साथ वफादारी करके और भारत के साथ नमक हरामी कर, 1857 के गदर में ब्रिटिश सरकार का सहयोग करने के कारण ही ताल्लुकेदारी पायी है। किसानों का शोषण करने में इन ताल्लुकेदारों की बड़ी भूमिका रही है इसका यथार्थ चित्रण निराला ने किया है—“बाबू मुरलीधर अवध के आकाश के एक चमकीले तारे हैं, जहाँ तक ऐश्वर्य की रोशनी से ताल्लुक है, यानी सबसे नामी ताल्लुकेदार। कहते हैं, कभी उनके दीपक में इतना तेल न था कि रात को उजाले में भोजन करते, ... यह विशाल संपत्ति उनके पितामह ने अंग्रेज सरकार की तरफदारी करके प्राप्त की थी। गदर के समय बकरियों के बच्चे टकने वाले बड़े-बड़े झाबों के अन्दर बन्द कर कई मेम और साहबों को बागियों से उन्होंने बचाया था।”²

1. उद्धृत द्वारा रामविलास शर्मा : निराला की साहित्य रचना §2§,

प्रथम संस्करण, पृ० 20 ।

2. ओंकार शरद §संपादक§ : निराला ग्रन्थावली §2§, प्रथम संस्करण,

पृ० 161 ।

अक्टूबर 1917 की समाजवादी रूस की क्रान्ति ने किसानों तथा मजदूरों के आन्दोलनों में आशा की ज्योति प्रज्ज्वलित की थी । जिसके फलस्वरूप किसानों ने पूंजीवादी व्यवस्था के विरोध में मोपला तथा संयुक्त प्रान्त आदि में साम्राज्यवाद और जमींदारों के विरुद्ध आन्दोलन का रूप धारण कर लिया था । 1917-23 के किसान आन्दोलन नगरों से देहात तक फैल गये थे । इस समय संयुक्त प्रान्त किसान आन्दोलनों का प्रमुख केन्द्र बन गया था । संयुक्त प्रान्त का विशेषरूप से पूर्वी क्षेत्र आन्दोलन से अधिक प्रभावित था । फैजाबाद जिले में किसानों ने प्रदर्शन किया और जमींदारों के शोषण के विरुद्ध हमले शुरू कर दिये थे । 1930-32 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भी किसानों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया था । 1929-33 के दौरान आर्थिक संकट ने किसानों की कमर तोड़ दी थी, जिसके फलस्वरूप गुजरात, बंगाल तथा संयुक्त प्रान्त आदि में लगान बन्दी के आन्दोलन ने उग्र रूप धारण कर लिया था । किसानों ने संगठित होकर जमींदारों और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध मोर्चाबन्दी की । किसानों के संगठन से जमींदार, साहूकार, महाजन आदि सभी भन्ना उठे थे । किसानों के इस आन्दोलन से निराला भी प्रभावित हुए और अपने गाँव जाकर उन्होंने स्वयं भी किसानों का संगठन किया ।

1929-33 के किसानों के लगानबन्दी आन्दोलन की अभिव्यक्ति हमें निराला के "अप्सरा" तथा "अलका" उपन्यास में मिलती है । "अप्सरा" उपन्यास में चन्दन किसानों को संगठित करता है, ताकि किसान अपने अधिकारों की लड़ाई संगठित होकर लड़ें । अलका में निराला किसानों के जीवन की सच्चाई को सामने रखते हैं, जोकि अति दयनीय जीवन जी रहे हैं और जिनका जमींदार, साहूकार आदि बेरहमी के साथ शोषण कर रहे हैं । यह किसान इतने विवश हैं, कि अपने ऊपर हो रहे अमानवीय अत्याचारों को भी चुपचाप सहन कर रहे हैं -- "बेचारे खेत जोतने वाले सीधे किसान, अदालत और पुलिस के नाम से डरने वाले, हवालात के ताप से सूख गये ।"¹

1. ओंकार शरदःसंपादकः : निराला ग्रन्थावली §2§, प्रथम संस्करण, पृ0227 ।

अलका उपन्यास का जमींदार मुरलीधर भारतीय जमींदारों तथा तआल्लुकेदारों का प्रतिनिधित्व करता है । जिसके पास अपार सम्पत्ति है और अंग्रेजों के साथ मिलकर रंगरलियाँ मनाता है । वह गाँव की बहू-बेटियों पर बुरी नजर रखता है । बाबू मुरलीधर के जोड़ीदार जमींदार कृपानाथ हैं ।

गाँव का गरीब किसान बुधुआ महंगू से स्वराज के सम्बन्ध में पूछता है--
 "सुराज क्या है रे ।" बुधुआ ने महंगू से पूछा ।
 "किसानों का राज ।" गम्भीर होकर महंगू ने कहा ।
 "... बुधुआ ने पुनः प्रश्न किया--"फिर ये जमींदार और पटवारी क्या करेंगे ।"
 "अख मारेंगे, और क्या करेंगे ।"
 "... तो लगान फिर किसको दिया जायेगा ।"
 "किसी को नहीं, लगान दिया गया, तो सुराज कैसा ।"।

बुधुआ यह जानकर कि स्वराज के आने से लगान नहीं देना पड़ेगा, स्वराज के आने का जल्दी इन्तजार करता है । वह इतना भोला और सीधा है कि स्वराज का अर्थ भी नहीं समझता--"बुधुआ बड़ा ही गरीब किसान है, फिर अब की उसके खेत की खरीफ डेढ़ हाथ से ज्यादा नहीं बढ़ी, वह भी जगह-जगह जली हुई । इसीलिए उसे सुराज को सबसे ज्यादा खोज है कि दो चार रोज में मिल जाये, तो जमींदारों के कोड़ों से पीठ का निकट सम्बन्ध जाता रहे ।"² लेकिन इनकी बातचीत बीरन सुनता रहता है जो गाँव के जमींदार कृपानाथ का पिद्दू है वह जमींदार को इसकी सूचना देता है । क्रूर जमींदार कृपानाथ बुधुआ को बड़ी निर्ममता से मारता है--
 "प्रहार से पीठ फट गई, मुख से फेन बह चला, वहीं पृथ्वी की गोद में वह बेहोश हो लुढ़क गया ।"³

निराला ने इस उपन्यास में सरकारी अफसरों के चरित्र को भी उजागर कर दिया है, जो गरीब किसानों को न्याय देने के बदले खुद कानून तोड़ते हैं । सरकारी अफसर और कर्मचारी किसानों का शोषण करने में जमींदारों से भी आगे हैं । गाँव में इनके आने से, गाँव वालों को भारी

1. ओंकार शरदःसंपादकः : निराला ग्रन्थावली §2§, प्रथम संस्करण, पृ० 184 ।

2. वही पृ० 186 ।

3. वही पृ० 189 ।

नुकसान उठाना पड़ता है, वो अपना पेट काटकर इनके पेट की हविश की आग को शान्त करते हैं --"डिप्टी साहब को बीस सेर दूध बिना दाम देना मेरा काम है, और बीस सेर में भी उन्हें क्या होता है, पर मेरे पास इससे ज्यादा का ठिकाना नहीं, बाकी गाँव से वसूल होता है ।"¹

गाँव के साहूकार और महाजनों के गरीब किसान कर्जदार रहते हैं । महाजनों से जो एक बार कर्ज ले लेता, वह फिर कभी उतरता नहीं है । महाजनों का काम है दबे हुए किसानों को और दबाना । अलका के महाजन भी ऐसे ही हैं, जोकि जमींदार से मिलकर गाँव के गरीब किसानों पर मुकदमा ठोंक देते हैं । उपन्यास का क्रान्तिकारी पात्र विजय इन किसानों को अदालत जाने के लिए कहता है, लेकिन ये गरीब किसान हवालात के भय से अपने हमदर्द विजय के विरुद्ध ही गवाही दे देते हैं, जो इनकी मुक्ति के लिए प्रयास कर रहा है ।

निराला ने गरीब किसानों का चित्रण अपने "निरूपमा" उपन्यास में भी किया है, जिनकी आर्थिक स्थिति जर्जर हो गयी है, वे लगान तो तब चुकायें, उनके पास तन टकने के लिए कपड़े भी नहीं हैं---"किसी तरह लाज बचाये हैं, आसाढ़ का महीना है, अनाज नहीं रहा, छः छः रुपये वाले खेत के तीन साल में अठारह-अठारह रुपये पड़ने लगे । डेढ़ी का अनाज तुम ही से लें, नजर नियाद उमर से । कहाँ तक दें । खेत न जोतें तो नहीं बनता, पापी पेट ।"² "श्यामा" कहानी के नायक सुधुआ को भी लगान न देने के कारण, उसे पीट-पीट कर मार दिया जाता है ।

किसानों की इस निर्धनता, बेबसी से निराला को सबसे अधिक सहानुभूति है । वे दलित, मजदूर, भूमिहीन तथा किसानों की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए इसका एक मात्र हल क्रान्ति में देखते हैं । तभी तो वे अपने उपन्यास "अलका" के पिछड़े हुए गाँव में क्रान्तिकारी युवक अजीत तथा

1. ओंकार शरद §संपादक§: निराला ग्रन्थावली §2§, प्रथम संस्करण, पृ० 196 ।

2. निरूपमा, संस्करण : 1975, पृ० 58 ।

विजय को भेजते हैं । जो किसानों का संगठन करके, उन्हें जमींदारों, ताल्लुके-दारों तथा महाजनों आदि से संघर्ष के लिए तैयार करते हैं क्योंकि बिना संघर्ष के किसानों की मुक्ति असम्भव है । अजीत तथा विजय के गाँव आने से किसानों में चेतना जागृत होती है - "वर्षा के जल के दबाव से तट और तराइयों को भी छापकर बहने वाली क्षुद्र नदियों की तरह सुराज की प्राप्ति से लगान न देने का कल्पित सुख जनता के दुख-हृदय के दोनों कूल प्लावित कर बहने लगा । पड़ोस के प्रायः सभी किसान इस प्लावन के सुख-प्रवाह में बह चले ।" ¹

और किसान विजय के नेतृत्व में संगठित होकर अपनी लड़ाई लड़ते हैं ।

चतुरी चमार कहानी में निराला स्वयं किसानों की लड़ाई लड़ते हैं । निराला के ही प्रोत्साहन से चतुरी अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ता है और उसमें इतनी चेतना जागृत हो जाती है कि वह अपने अधिकार के लिए अदालत तक में जाकर ज़मींदार के विरुद्ध मुकदमा लड़ता है ।

किसानों के अशिक्षित रहने से गाँवों का विकास होना और वैज्ञानिक पद्धति से खेती करना असम्भव है । अतः गाँवों का विकास होनेके लिए किसानों का सुशिक्षित होना बहुत आवश्यक है । इसीलिए निराला "कुल्लीभाट" में कुल्ली के द्वारा, तथा "अलका" उपन्यास में विजय के माध्यम से गाँवों में किसानों के बीच शिक्षा का आरम्भ करते हैं । निराला क्रान्ति के द्वारा अमीरों की हवेलियों को किसानों तथा दलितों की पाठशाला के रूप में देखते हैं:—

जल्द-जल्द पैर बढ़ाओं, ओओ, आओ ।
आज अमीरों की हवेली
किसानों की होगी पाठशाला,
धोबी पासी चमार तेली
खोलेंगे अंधेरे का ताला,
एक पाठ पढ़ेंगे, टाट बिछाओ । ²

1. ओंकार शरदः संपादकः निराला ग्रन्थावली ॥ 2 ॥, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 194 ।

2. बेला, संस्करण 1962, पृष्ठ 78 ।

निराला किसानों को साहूकारों, महाजनों आदि के कमर तोड़ ब्याज से मुक्ति के लिए बैंक खोलने के लिए कहते हैं क्योंकि “भारत कृषि प्रधान देश है । जो अर्थव्यवस्था कृषक-केन्द्रित न होगी वह भारत के लिए कल्याणकारी नहीं सिद्ध होगी-निराला इस तथ्य को समझ चुके थे । समझते भी क्यों नहीं-क्योंकि वे स्वयं भी तो एक कृषक परिवार के सदस्य थे । इसीलिए वे किसानों के बैंक खोलने के तथ्य को प्रस्तुत करते हैं”¹ -

“यहाँ जहाँ सेठ जी बैठे थे
बनिये की आंख दिखाते हुए
उनके रेंठाये रेंठे थे
धोखे पर धोखा खाते हुए-
बैंक किसानों का खुलाओ ।”²

निराला सन् 35 के बाद पूंजीवाद के खिलाफ और कठोर हो जाते हैं । पूंजीवादी समाज जो गरीब असहाय लोगों के साथ खिलवाड़ कर रहा है, उनके विरुद्ध जन सामान्य से आह्वान करते हैं कि वह संघर्ष के द्वारा पूंजीवाद की जड़ें उखाड़ फेंके । निराला उन राजनीतिज्ञों पर भी प्रहार करते हैं जो पूंजीवादी समाज के रक्षक हैं और झूठे जनवाद का नारा देकर गरीबों की भावनाओं से खेल रहे हैं । “मंहगू मंहगा रहा” आदि कविताओं में नेहरू तथा कांग्रेसी सिद्धान्तों की कड़ी आलोचना की गई है -

“लेंडी जमींदारों को आँखों तले रखे हुए
मिलों के मुनाफे खाने वालों के अभिन्न मित्र
देश के किसानों, मजदूरों के भी अपने सगे
विलायती राष्ट्र से समझौते के लिए ।”³

निराला ने बाद में “कुरमुत्ता”, “बेला”, “नये शक्ते” आदि में

1. बुद्धदेन नीहारः विश्व कवि निराला, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 328

2. बेला, संस्करण 1962, पृष्ठ 78 ।

3. उद्धृत द्वारा नागार्जुन : एक व्यक्ति : एक युग, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ 86 ।

यह सिद्ध कर दिया कि पूँजीवादी समाज असहाय और गरीबों का खून चूसता ही रहेगा और जनवाद का नारा देने वाले नेता भी इन पूँजीपतियों के ही पक्षधर हैं। असहाय और गरीबों को केवल विद्रोह से ही मुक्ति मिल सकती है। इसीलिए निराला अपनी परवर्ती रचनाओं में पूँजीपति समाज से धन छीनकर उसे जन-सामान्य की सम्पत्ति बनाने का आह्वान करते हैं, इसीलिए निराला को क्रान्तिकारियों से अधिक सहानुभूति थी। "कांग्रेस की अपेक्षा निराला की सहानुभूति क्रान्तिकारियों के प्रति अधिक थी। निराला और क्रान्तिकारियों के दृष्टिकोण में अन्तर यह था कि निराला दो-चार अंग्रेजों या उनके देशी सहायकों को मारने के बदले किसानों को संगठित करके उन्हें स्वाधीनता आन्दोलन में शामिल करना ज्यादा आवश्यक समझते थे। निराला को कांग्रेस से सहानुभूति थी किन्तु जहाँ कांग्रेस जमींदारों से समझौता करती थी, वह उसकी आलोचना करते थे। निराला को कम्युनिस्ट पार्टी से सहानुभूति ही नहीं, आशा भी थी कि वह किसानों का संगठन करके जमींदारों और पुलिस का आतंक खत्म करेगी। उनकी यह आशा पूरी न हुई।"¹

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि निराला की आर्थिक विचारधारा के अनुसार भारत में जमींदारी व्यवस्था सामंतवाद, साम्राज्यवाद को उखाड़कर ही जन सामान्य को उनका अधिकार मिल सकता है।

अब एक प्रश्न यह भी है कि आजादी के बाद भी क्या किसानों और मजदूरों को उनके अधिकार मिले हैं? निराला की अपेक्षाएँ क्या अभी पूर्ण हुई हैं। श्री शरद जोशी ने अपने एक लेख में लिखा भी है "राजनीतिक आज़ादी 1947 में हासिल हुई और एक अशोभनीय जल्दबाजी में कृषि, किसानों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रति गांधीवादी चिंता को त्याग दिया गया।"²

वस्तुतः हम कह सकते हैं कि आजादी के बाद देश में परिवर्तन तो हुआ, किन्तु किसानों और मजदूरों को अपेक्षित लाभ अभी भी मिलना शेष है।

1. रामविलास शर्मा : निराला की साहित्य साधना §2§ प्रथम संस्करण, पृ026 ।

2. सं0 अजय सिंह, असली भारत §वार्षिकांक§, मार्च 1989, पृ0 23 ।

सामाजिक चेतना :

भारत में राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के साथ-साथ सामाजिक सुधारवादी आन्दोलन भी चलाये गये। इन सामाजिक सुधारवादी आन्दोलनों से समाज में फैली रूढ़िगुस्तता अन्धविश्वास आदि में परिवर्तन आये और इन्होंने राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सामाजिक सुधारवादी आन्दोलन में राजा राम मोहन राय ने एक क्रान्तिकारी काम किया, उन्होंने भारत में युगों से चली आ रही सती प्रथा पर कानूनी प्रतिबन्ध लगवाया, जो कि धार्मिक रूढ़िवादिता के विरुद्ध एक महत्वपूर्ण ठोस कदम था। राजा राम मोहनराय ने भारत में सामाजिक चेतना के प्रथम सार्थक प्रयास का नेतृत्व किया। राजा राम मोहन राय की ब्रह्मसमाज की परम्परा का बाद में देवेन्द्र नाथ ठाकुर ने नेतृत्व किया। ब्रह्मसमाज के द्वारा समाज के अन्दर कई क्रान्तिकारी कदम अन्ध विश्वास व धार्मिक रूढ़िवादिता के विरोध में उठाये गए जैसे-- जाति प्रथा, बाल विवाह आदि का विरोध किया। ब्रह्मसमाज का महत्वपूर्ण कार्य था आधुनिक शिक्षा का नर-नारियों में प्रसार।

1840 में महाराष्ट्र में भी मूर्ति-पूजा तथा जाति प्रथा का विरोध कर "हंस मंडली" ने धार्मिक सुधार का आरम्भ किया। धार्मिक सुधारक हरि देश गुप्त ने रूढ़िवादी हिन्दुओं पर प्रहार किया तथा धार्मिक और सामाजिक समानता के उपदेश दिए।

रामकृष्ण परम हंस एक युग पुरुष संत थे। उन्होंने भगवान की प्राप्ति के लिए चिंतन-भक्ति, तन्यास का मार्ग बताया परमहंस का मूल सिद्धान्त "मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है" था। इनके शिष्य स्वामी विवेकानन्द थे। स्वामी विवेकानन्द ने अपने गुरु के समान ही कहा ईश्वर और मुक्ति पाने के अनेक मार्ग हैं। उन्होंने धार्मिक संकीर्णता का विरोध किया तथा सर्व धर्म सम्भाव को प्रोत्साहन दिया—"हमारी अपनी मातृभूमि के लिए दो महान प्रणालियों- हिन्दू धर्म और इस्लाम का संगम-ही एक मात्र आशा

है ।¹ विवेकानन्द एक महान् दार्शनिक थे और वे वेदान्त के समर्थक थे । विवेकानन्द ने अंधविश्वास कर्मकाण्ड जाति प्रथा का विरोध किया तथा समानता की भावना का प्रतिपादन किया—“हमारे धर्म के हमारे रसोईघर में प्रवेश करने का खतरा है । हममें से अधिकतर अभी न वेदांती हैं न पुराणापंथी और न ही तांत्रिक हैं । हम केवल “छुओ नहीं” वाले हैं । हमारा धर्म रसोईघर में है । हमारा ईश्वर खाना पकाने के बर्तन में है और हमारा धर्म है “मुझे छुओ मत मैं पवित्र हूँ ।” अगर यह एक शताब्दी तक रहा तो हम सब पागलखाने में होंगे ।”² सामाजिक भलाई के लिए विवेकानन्द ने 1896 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की । “स्वामी विवेकानन्द जी भारतवर्ष की उसी तरह की सन्दिग्ध परिस्थिति में आये थे, जिस तरह की परिस्थिति में “विनाशाय च दुष्कृताम्” तथा धर्म संस्थापनाथाय” महापुरुष आते हैं ।”³

1875 में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की । स्वामी दयानन्द ने वेदों को महत्त्व दिया और पुराणों को झूठा बताया । उन्होंने पुरोहितों पर भी प्रहार किये । वे मूर्तिपूजा, कर्मकाण्ड और ब्राह्मणों द्वारा प्रचारित हिन्दूधर्म के विरोधी थे । आर्य समाज-समाज सुधार के जोरदार समर्थक थे । आर्य समाज ने स्त्रियों की दशा सुधारने और उनके बीच शिक्षा का समर्थन किया । आर्य समाज का उत्तर भारत में बड़ा प्रभाव रहा था । हालांकि आर्य समाजियों के शुद्धि आन्दोलन चलाने के कारण साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिला था, फिर भी आर्य समाज के प्रचार से भारतीय समाज में बड़ा परिवर्तन आया और आर्य समाज ने समाज के सुधारवादी कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की ।

-
1. उद्धृत द्वारा बिपिन चन्द्र : आधुनिक भारत, संस्करण 1987, पृ0 176 ।
 2. वही , पृ0 176 ।
 3. निराला : संग्रह, प्रथम संस्करण, पृ0 79 ।

इन सामाजिक-सुधार से सम्बद्ध संस्थाओं ने 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में और 20 वीं शताब्दी के आरम्भ में सामाजिक चेतना जागृत करने में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया और अनेक साहित्यकारों पर भी इनका प्रभाव व्यापक रूप से पड़ा ।

निराला पर भी इन आन्दोलनों का प्रभाव पड़ा, लेकिन विशेष रूप से उनके उमर सबसे अधिक प्रभाव स्वामी विवेकानन्द के विचारों का रहा और निराला ने रूढ़िवादिता, कर्मकाण्ड, जाति प्रथा, छुआ-छूत आदि का विरोध किया ।

भारतीय समाज में जाति-पाँति, छुआ-छूत बुरी तरह फैली हुयी थी । ऊँच-नीच का भेदभाव समाज के लिए जहर सिद्ध हो रहा था । सामन्ती व्यवस्था के कारण जाति-पाँति के भेदभाव की जड़ें समाज में गहरे पैठ गई थीं । ब्राह्मण या सवर्ण जाति के लोग अपने से छोटी जाति के लोगों पर अमानवीय अत्याचार करते थे । हिन्दू धर्म में जाति-व्यवस्था लगभग वैदिक काल से ही चली आ रही थी । जाति व्यवस्था में व्यक्ति को जन्म के आधार पर ऊँची-नीची जाति का मान लिया जाता । अगर कोई व्यक्ति श्रेष्ठ जाति के घर जन्म लेता तो वह सवर्ण कहलाता । छोटी जाति में जन्म लेने वाला नीच या शुद्ध कहलाता । व्यक्ति की योग्यता पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था, जन्म से ही उसके कार्य निश्चित हो जाते । इस विषय में डा० रामविलास शर्मा का कथन द्रष्टव्य है — "जाति-पाँति, ऊँच-नीच का भेदभाव सामन्ती व्यवस्था की देन है । अंग्रेज जब सामन्ती व्यवस्था को पाल रहे थे, उसे अपनी राजसत्ता का मुख्य सामाजिक आधार बना रहे थे, तब जाति-पाँति का भेदभाव मिटता कैसे । अंग्रेजी राज में उसे नया जीवन मिला, टूटती हुई सामाजिक रूढ़ियाँ एक बार फिर मज़बूत हुईं ।" ¹ लेकिन भारत में औद्योगिक क्रान्ति के कारण गाँवों की सत्ता समाप्त होने लगी और औद्योगीकरण होने के कारण ही शहरों का तेजी के साथ विकास होना

1. निराला की साहित्य साधना §2§, प्रथम संस्करण, पृ० 28 ।

आरम्भ हुआ। आर्थिक स्थिति दयनीय होने के कारण लोग गाँवों से पलायन करके शहर जाने लगे। इस नवीन औद्योगिक विकास ने समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन करने शुरू किए, जिसके कारण जाति व्यवस्था टूटनी आरम्भ हुई। 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में और 20 वीं शताब्दी के आरम्भ में जाति-व्यवस्था के विरुद्ध प्रचार बहुत अधिक बढ़ने लगा, जिसके फलस्वरूप छोटी जातियाँ समाज में समानता का अधिकार पाने के लिए संघर्ष करने लगीं। "जाति-व्यवस्था में शताब्दियों तक कोई परिवर्तन न होने का सबसे बड़ा कारण यहाँ कभी किसी बड़ी आर्थिक क्रान्ति का न होना है।"¹

निराला ने समाज में फैली धार्मिक रुढ़िगुस्तता, अछूत समस्या एवं जाति व्यवस्था आदि कुप्रथाओं से समाज को मुक्त कराने के लिए अपने साहित्य में इनका विरोध किया। निराला ने जाति व्यवस्था के सभी पक्षों—सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि पर यथार्थरूप में प्रकाश डाला है। वर्णाश्रम प्रथा का चरित्र उजागर करते हुए उन्होंने लिखा है --"गाँवों में वर्णाश्रम धर्म की धाक थी। ... क्षत्रियों को छोड़कर और सभी जातियों को चाहे वृद्ध की बगल से बच्चा आ निकले, यदि ब्राह्मण वंश का हो, चारपाई छोड़ कर उठना पड़ता था, गाँवों में दिन भर यह कसरत जारी रहती थी।"² अर्थात् छोटी जाति के लोगों को अपना जीवन दासों की भांति व्यतीत करना पड़ता था और यह सब अन्याय धर्म के नाम पर होता था।

निराला बाल्यावस्था से ही जाति-व्यवस्था के भेदभाव वाले इस अमानवीय कुकृत्य से नफरत करते थे और साथ ही बचपन से उनके अन्दर वर्ण, जाति, भेदभाव के प्रति विद्रोह की भावना थी--"जनेऊ हो जाने के दूसरे रोज पिताजी ने सकांत में बुलाकर मुझसे कहा--"अब आज से, खबरदार पतुरिया के घर का कुछ खाना-पीना मत।"

1. कुँवरपाल सिंह : हिन्दी उपन्यास : सामाजिक चेतना, प्रथम संस्करण,

पृ० 91 ।

2. प्रभावती, संस्करण 1967, पृ० 49 ।

मैंने कहा--"पतुरिया का हुआ तो उनके लड़के भी नहीं खाते-पीते ।" पिताजी ने... डाँटकर कहा---"उसके हाथ का भी मत खाना ।"

मैंने पूछा--"जब ताल्लुकेदार थे, तब आप लोग उनका हुआ खाते थे ।"

पिताजी ने होंठ चबाकर कहा--"हम जैसा कहते हैं कर ।"... दिल से बात न मानी । जनेऊ के बाद दो-तीन दिन कहीं न गया, ... तीसरे या चौथे दिन पं० फतहबहादुर दुबे कुँ पर नहाने का डौल कर रहे थे, एकाएक मैं पहुँचा ।

मैंने... कहा--"भैया पानी पिला दीजिए ।"¹ तो हम देखते हैं कि निराला बचपन से ही समाज की रूढ़िग्रस्त मान्यताओं के विरोधी थे, स्वामी विवेकानन्द के साहित्य का अध्ययन करने से आपको और बल मिला । विवेकानन्द के प्रभाव के कारण ही आपका अद्वैतवाद से मोहभंग हो गया था तथा हर मनुष्य में आपको ईश्वर के दर्शन होने लगे ।

निराला धार्मिक कट्टरता एवं समाज में व्याप्त रूढ़िवादी पूर्वाग्रहों और अवशेषों को देखकर परेशान हो जाते, क्योंकि इन सड़ी-गली मान्यताओं ने लोगों के जीवन में जहर घोल रखा था--"चमार, पासी, धोबी और कोरी दोनों में फूल लिए हुए मेरे सामने आ आकर रखने लगे । मारे डर के हाथ पर नहीं दे रहे थे कि कहीं छू जाने पर मुझे नहाना होगा । इतना नत । इतना अधम बनाया है मेरे समाज ने उन्हें ।"²

निराला का सबसे बड़ा धर्म था, मनुष्यता । वह पहली बार "निरूपमा" उपन्यास में समाज की इस रूढ़िवादिता पर प्रहार करते हैं कि केवल छोटी जाति के लोग ही समाज में निम्न समझे जाने वाले कार्यों को करेंगे । "निरूपमा" उपन्यास का नायक कृष्ण कुमार उच्च जाति का है, जो लन्दन से उच्च शिक्षा की डिग्री पाकर स्वदेश आता है । वापस लखनऊ में आकर कुमार को विश्वविद्यालय में नौकरी नहीं मिल पाती है और विवश होकर उसे बूट-पालिश का काम करना पड़ता है, लेकिन ब्राह्मण एवं तथाकथित ऊँचे लोग

1. कुल्लीभाट, पंचम संस्करण, पृ० 37 ।

2. वही , पृ० 94 ।

कुमार को जाति नियमों की अवहेलना करने के कारण समाज से उसका बहिष्कार कर देते हैं। हालाँकि "अलका" उपन्यास के गाँव में शूद्रों की संख्या अधिक है लेकिन गरीब ब्राह्मण भी हैं जो बकरियों पालकर और हल जोतकर अपनी आजीविका चला रहे हैं। बिल्लेतुर भी ब्राह्मण होते हुए बकरियों का कारोबार करता है अर्थात् हम देखते हैं कि उच्च जाति के लोग भी जो गरीब थे, उनकी समस्याएँ भी छोटी जाति के लोगों के ही समान थीं। वास्तव में तथ्य यह ही है कि निराला पहली बार आर्थिक समस्या पर बल देते हैं कि भेद-भाव की जो रेखा खींची गई है, उसका कारण आर्थिक स्थिति है। नीचे काम करने से कोई व्यक्ति छोटा नहीं हो जाता है, बल्कि परिस्थितियों वशा आदमी नीचे समझ जाने वाले कार्य करता है।

"चतुरी चमार" कहानी का नायक चतुरी का चरित्र साधारण शोषित एवं पीड़ित जन का चरित्र है। चतुरी उस दलित एवं पीड़ित जनता का प्रतिनिधित्व कर रहा है, जिसके अन्दर अन्याय के विरुद्ध विद्रोह भीतर ही भीतर पनप रहा है—"वह एक ऐसे जाल में फंसा है, जिसे वह काटना चाहता है, भीतर से उसका, पूरा जोर उमड़ रहा है, पर एक कमजोरी है, जिसमें बार-बार उलझकर रह जाता है।"¹ बाद में चतुरी में लेखक से परिचय होने पर इतनी हिम्मत आ जाती है, वह अपने अधिकारों के लिए अदालत तक जाता है।

"चमार ने दबना सीखा था और ब्राह्मण ने दबाना। कवि ने समझ लिया था कि इस ब्राह्मणात्त्व और शूद्रात्त्व का खात्मा किये बिना समाज का कल्याण न होगा।"² इसीलिए निराला ने धार्मिक रूढ़ियों पर प्रहार करते हुए कहा है: "तोड़कर फेंक दीजिए जेनेऊ जिसकी आज कोई उपयोगिता नहीं, जो बड़प्पन का भ्रम पैदा करता है, और समस्वर से कहिए कि आप उतनी ही मर्यादा रखते हैं, जितनी आपका नीच-से-नीच पड़ोसी, चमार या भूमी रखता है। तभी

1. निराला : चतुरी चमार, संस्करण, 1967, पृष्ठ 9 ।

2. रामविलास शर्मा : निराला, तृतीय संस्करण, पृष्ठ 136 ।

आप महामनुष्य हैं । ...¹

निराला ने अपने साहित्य में वर्ण व्यवस्था के खोखलेपन, धार्मिक रूढ़िता आदि की कड़ी आलोचना की है और उन्होंने ब्राह्मणों में व्याप्त मिथ्या अहंकार एवं दम्भ को अपने कथा-साहित्य में उजागर कर दिया है । आजीवन उन्होंने दलित एवं पिछड़ी जातियों के लोगों के साथ गहरी सहानुभूति रखी और ऊँच-नीच के भेदभाव को मिटाकर दलित जनों को समानता का अधिकार दिलाने में दृढ़ रहे । "अलका" उपन्यास में युगों से पीड़ित और शोषित दलित वर्ग जाग्रत होकर अपनी समस्याओं को लेकर संघर्ष करते हैं और विजय की शिक्षा के कारण उनमें अन्याय के विरुद्ध लड़ने की चेतना जाग्रत होती है । "ब्राह्मणों के प्रति उनकी यह घृणा स्वार्थ या ईर्ष्या से नहीं पैदा हुई थी । यह प्रतिक्रिया भी तथाकथित अभिजात्य और खोखले गुरुडम थी । अगर ऐसी बात न होती तो कुल्ली और बिल्लेसुर जैसे दबे-पिसे सरल स्वभाव वाले ब्राह्मण-कुमारों को निराला का प्यार कैसे मिलता ।"²

निराला समाज में व्याप्त दहेज प्रथा के विरोधी रहे बधू पक्ष से दहेज न मिलने के कारण नारियों पर अमानवीय अत्याचार होते हैं । समाज में अमानवीय कृत्यों को देखकर विद्रोह किया । "निराला ने केवल काव्य में ही क्रांति नहीं की सामाजिक रूढ़ियों के प्रति भी खुला विद्रोह किया । इन्होंने काव्यगत संकीर्ण छंदों की छोटी राह का परित्याग तो किया ही सड़े-गले सामाजिक बंधनों की अवहेलना की ।"³ निराला ने स्वयं अपने पुत्र का विवाह बिना दहेज लिए हुए बड़े सीधे-साधे ढंग से किया था । हालांकि आपके पुत्र के नाना ने एक जगह काफी दहेज पर रिश्ता तय कर दिया था, लेकिन निराला ने दहेज के कारण उस रिश्ते का अस्वीकार कर दिया था ।

1. उद्धृत द्वारा रामविलास शर्मा: निराला की साहित्य साधना §2§ प्रथम संस्करण पृ० 30 ।

2. नागार्जुन: एक व्यक्ति: एक युग, द्वितीय संस्करण, पृ० 97 ।

3. बच्चन सिंह: क्रांतिकारी कवि निराला, तृतीय संस्करण पृ० 13 ।

पुत्री सरोज का विवाह भी बिना दहेज दिये हुए श्री शिव शंखर द्विवेदी से सावन के महीने में किया था और स्वयं ही पौरोहित्य-कर्म भी किया । निराला द्वारा पुत्र का विवाह बिना दहेज लिए हुए और पुत्री का विवाह बिना दहेज दिये हुए करना, आपके दहेज विरोधी होने और समाज को एक क्रान्तिकारी दृष्टिकोण देने का प्रमाण है ।

विधवा-समस्या समाज के लिए एक अभिज्ञाप थी । रूढ़िगुस्त हिन्दू समाज ने विधवाओं को समस्त अधिकारों से वंचित कर रखा था । विधवा नारियों का न केवल समाज में अमानवीय शोषण होता था, बल्कि विधवाओं के साथ शारीरिक व्यभिचार भी किये जाते थे । जिससे समाज में अनेक कुरीतियाँ जन्म लेती थीं । निराला ने विधवा-समस्या को विशेष महत्व दिया है । वीणा के माध्यम से लेखक ने "अलका" उपन्यास में विधवाओं के जीवन पर प्रकाश डाला है । युवावस्था में विधवा हो जाना और फिर समाज के द्वारा पुनर्विवाह की अनुमति नहीं मिलना, विधवाओं के लिए कितना करुणाजनक था, यह सब "अलका" उपन्यास की पात्र वीणा के दैनिक जीवन एवं उसकी मनोभूमि से ज्ञात हो जाता है । वीणा न केवल वैधव्य का जीवन जीने के लिए बाध्य है, बल्कि उसे मुरली धर अपनी कुवासना का शिकार बनाना चाहता है । निराला ने विधवा समस्या का एक मात्र हल पुनर्विवाह बतलाया है, इसकी अभिव्यक्ति वीणा एवं अजीत के विवाह-बन्धन में बंध जाने से हो जाती है ।

निराला अपने कथा साहित्य में वेश्या समस्या को भी लेकर जागरूक रहे हैं । वेश्यावृत्ति समाज पर एक कलंक है । "अप्सरा," "चोरीकी पकड़" उपन्यास में तथा "दो दाने" नामक कहानी में वेश्याओं के जीवन का चित्रण किया है । निराला का मानना है कि कोई नारी जन्म से वेश्या नहीं होती है बल्कि परिस्थितियोंवशा उसे वेश्या बनने पर बाध्य होना पड़ता है । वेश्यावृत्ति अपनाने की प्रमुख समस्या आर्थिक स्थिति है, इसका यथार्थ रूप अपनी "दो दाने" नामक कहानी में प्रकट किया है । "दो दाने" कहानी

समाज में होते हुए शोषण तथा अनाचार का यथार्थ चित्रण है । "दो दाने" कहानी में निराला ने पेट की आग बुझाने के लिए, अन्न की आवश्यकता के लिए मनुष्य को कुर्म करने को बाध्य होना पड़ता है, पर प्रकाश डाला है । दो दाने की कमला पेट की आग से व्याकुल होकर, अपने बच्चों को अकाल में जिन्दा रखने के लिए अपनी बेटी चम्पा को जो अभी पूर्ण रूप से जवान भी नहीं हुई है, हृदय पर पत्थर रखकर रूप के बाजार में बैठाने पर बाध्य होना पड़ता है—"कमला का हाल बयान से परे था । हृदय के टुकड़े-टुकड़े हो रहे थे । पुरानी मर्यादा का बांध टूट रहा था । दुःख के आतूँ उमड़कर सारा घर डूबा देना चाहते थे । बच्चे सहम न जाए, चम्पा घबरा न जाए कि आता हुआ दाना तूफान और बाढ़ में जैसे उड़ जाए और बह जाए । वह पत्थर से दिल को बाँधि रही ।" ¹ लेकिन धनिक वर्ग को इन आतूँ की चिन्ता नहीं थी वह तो सब अपने धन की हथियार बन्द सिपाहियों से रक्षा करा रहे थे तथा चम्पा जैसी किशोरियों के शरीर से खेल रहे थे—"ना समझ चम्पा कुमारी की तरह मुस्करायी । ... उसकी चाल में, सेठ जी ने देखा, कोई बाजारू गति नहीं । ... आज उसके विवाह की जैसे पहली रात है, दो प्रिय हैं । हृदय में कम्प है, लेकिन पुलक नहीं, आत्मा में कर्तव्यनिष्ठा है, लेकिन स्त्री-भाव वाला, सम्प्रदान नहीं ।" ² स्वार्थी तथा कामुक न जाने कितनी अबोध बालिकाओं के शरीर से खेलते रहते हैं । इस सब यथार्थ को जानकर निराला पूँजीपति वर्ग के विरोधी रहे और उनकी संवेदनाएँ वेश्याओं के प्रति रहीं । वेश्यावृत्ति का एक मात्र हल उन्होंने वेश्याओं को अपनाकर बतलाया क्योंकि वेश्याओं को अपनाकर ही हम उनको नया जीवन प्रदान कर सकते हैं । वेश्या भी किसी सदाचारी युवक से विवाह कर गृहस्थ जीवन बसाने की आकांक्षा रखती है । वेश्याएँ अप्सरा के समान पवित्र है अगर उनको अच्छा बनने का मौका

1. ओंकार शरद {संपादक}: निराला ग्रन्थावली {1}, प्रथम संस्करण, पृ० 139 ।

2. वही

प्राप्त हो तो वह भी सुखमय जीवन बिता सकती हैं, इसकी पुष्टि निराला "अप्सरा" उपन्यास में कनक व राजकुमार का विवाह करा कर करते है । "घोटी की पकड़" उपन्यास की वेश्या राजा भी क्रान्तिकारी प्रभाकर के सम्पर्क में आकर भारत को स्वतन्त्र कराने वाले क्रान्तिकारी युवकों के सगठन में शामिल हो जाती है ।

भारतीय समाज में नारी पर उनके अकुंशा लगे हुए थे, उसे केवल घर के अन्दर गृहणी बनाकर ही रखा जाता था । नारियाँ घर से बाहर आकर सामाजिक, राजनीतिक आदि कार्यों में हिस्सा नहीं ले सकती थीं । लेकिन सामाजिक सुधार आन्दोलनों के फलस्वरूप नारियाँ पुरुषों के साथ मंच पर आने लगी और उच्च शिक्षा भी प्राप्त करने लगीं । निराला अपने साहित्य में नारी की स्वाधीनता को लेकर चिन्तित है और समाज में नारी को पुरुषों के समान अधिकार देने के समर्थक है ।

निराला नारियों पर समाज द्वारा लगे प्रतिबन्धों का विरोध करते है और समाज की उन रूढ़िग्रस्त मान्यता पर प्रहार करते है जो साम्राज्यवादी एवं सामन्तवादी समाज की देन हैं—“हम लोग स्वयं जिस तरह गुलाम हैं, उसी तरह अपनी स्त्रियों को भी गुलाम बना रक्खा है, बल्कि उन्हें दासों की दासियाँ कर रक्खा है । इस महादैन्य से उन्हें शीघ्र मुक्ति देनी चाहिए । तभी हमारी दासता की बेड़ियां कट सकती है ।”¹ प्राचीन काल से चली आ रही नारियों के सम्बन्ध में उन रूढ़िवादी मान्यताओं पर तीखा व्यंग्य करते हैं, जो मान्यताएं आधुनिक भारत में पुरुषों के समान नारियों की समानता में गतिरोध उत्पन्न करती हैं—“प्राचीन शीर्णता ने नवीन भारत की शक्ति को मृत्यु की ही तरह घर रक्खा है । घर की छोटी-सी सीमा में बंधी हुई स्त्रियाँ आज अपने अधिकार अपना गौरव, देश तथा समाज के प्रति अपना कर्तव्य, सब कुछ भूली हुई है ।”²

1. प्रबन्ध प्रतिभा, द्वितीय संस्करण, पृ० 92 ।

2. प्रबन्ध प्रतिभा, द्वितीय संस्करण, पृ० 90 ।

निराला अपने कथा-साहित्य में नारी स्वाधीनता को लेकर जागृत है। उनके उपन्यासों की सभी नारियाँ पात्र पुरुष-पात्रों से अधिक प्रगतिशील एवं साहसी हैं। यह बात विशेष उल्लेखनीय है कि निराला की नारी पात्र पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर राजनीतिक गतिविधियों तथा सामाजिक कार्यों में हिस्सा लेती हैं। अशिक्षित नारियाँ समाज में विशेष स्थान नहीं प्राप्त कर सकतीं और अपने अधिकारों के प्रति भी उन्हें जागृति नहीं आयेगी, इसलिए निराला नारियों को उच्च शिक्षा दिलाने के समर्थक रहें हैं, इसका प्रमाण अप्सरा उपन्यास की नारी पात्र-कनक, तारा, "अलका" उपन्यास की नायिका "शोभा" निरूपमा उपन्यास की नारी पात्र निरूपमा है जो उच्च शिक्षा प्राप्त कर समाज में पुरुष के समान आदर और सम्मान पाती हैं।

पुरुषों के पार्श्वक अत्याचारों के प्रति निराला की नारी पात्र विद्रोहिणी तथा क्रान्तिकारिणी हैं। वह पुरुषों के अत्याचारों को चुपचाप सहन नहीं करती हैं, बल्कि उनके विरुद्ध विद्रोह की भावना रखती हैं। कमला कहानी की एक नारी पात्र कमला से प्रति द्वारा हुए अत्याचारों को चुपचाप सहन करने के विरोध में कहती है—“मैं होती तो चपत का जवाब देने कस की चपत कस कर देती—उन्हीं की तरह अपना भी दूसरा विवाह साथ-साथ करती, उमर से न्योता भेजती कि आइए जनाबमन मेरे शौहर से मुलाकात कर जाइए।”¹ इन शब्दों से स्पष्ट हो जाता है कि पति के अमानवीय अत्याचारों के विरोध, निराला की नारी पात्रों के अन्दर एक ज्वाला है और “कवि सभी प्रकार की रुद्धियों और अंध परम्पराओं पर हथोड़े की चोट करता है।”²

निराला की नारियाँ पात्र स्वच्छंद स्वभाव की हैं। कनक, अलका, प्रभावती, निरूपमा आदि स्वच्छंद प्रेम विवाह करती हैं। निराला ने अपनी नारी पात्रों को प्रेम की छूट दी है, वह धर्म जाति आदि की दीवार

1. ओंकार शरद {संपादक}: निराला ग्रन्थावली {3}, प्रथम संस्करण पृ० 141।

2. बुद्धदेन नीहार, विश्व कवि निराला, प्रथम संस्करण, पृ० 219।

को तोड़कर प्रेम विवाह करती है। समाज-विहित विवाह को "निराला" ने अधिक प्रश्रय नहीं दिया क्योंकि, उससे समाज में विकृति तथा युवक हृदयों में कुंठाएँ पनपती हैं। यही कारण है कि "निराला" ने स्त्रियों को अन्य सामाजिक समानाधिकार देने के साथ रोमांस की भी पूरी छूट दी है।¹ अतः निराला ने अपने कथा साहित्य में नारियों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है और उनका नारियों के प्रति स्वस्थ एवं प्रगतिशील दृष्टिकोण रहा है—“अब घर के कोने में समाज तथा धर्म की साधना नहीं हो सकती। ज़माने ने रूख बदल दिया है। हमारे देश की लड़कियों पर बड़े-बड़े उत्तरदायित्व आ पड़े हैं। उन्हें वायु मुक्त रखने में ही हमारा कल्याण है। तभी वे जाति, धर्म तथा समाज के लिये कुछ कर सकेंगी।”²

निराला साम्प्रदायिकता की समस्या को लेकर अन्य साहित्यकारों के समान ही जागरूक रहे। वे जानते थे कि धर्म के नाम पर होने वाले पाखण्डों से समाज में वैमनस्य बढ़ेगा, इसीलिए वे साम्प्रदायिकता के विरोधी रहे। वे जानते थे कि राजनीति में धर्म का सहारा लेने से हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य की आग अधिक भड़केगी और वह ज्वाला का रूप धारण कर लेगी। ठीक ऐसा ही हुआ मुस्लिम लीग तथा हिन्दू महासभा के द्वारा राजनीति में धर्म का प्रवेश घातक सिद्ध हुआ। राजनीति में धर्म के प्रवेश के कारण ही देश का विभाजन हुआ और विभाजन त्रासदी में मरे लाखों मनुष्यों के बाद भी आज तक साम्प्रदायिकता की आग शान्त नहीं हुई है।

निराला हालांकि धार्मिक व्यक्ति थे, लेकिन धर्म के सम्बन्ध में उनका दृष्टिकोण विभिन्न था, वे धार्मिक कट्टरपन को धर्म नहीं मानते थे। वे धार्मिक रूढ़ियों और धर्म के नाम पर पाखण्ड करने वाले पंडा, पुरोहित, मुल्ला आदि का बराबर विरोध करते रहे हैं। निराला साम्प्रदायिकता को

1. कुसुम वाष्णीय: निराला का कथा साहित्य, संस्करण 1971, पृ० 105।

2. प्रबन्ध प्रतिभा द्वितीय संस्करण, पृ० 91।

धार्मिकता के साथ-साथ राजनैतिक भी मानते थे । वे अंग्रेजों की फूट डालो और शासन करो चाल को समझते थे । अंग्रेज तथा अंग्रेजों के वफादार भारतीयों का चरित्र "चोटी की पकड़" नामक उपन्यास में उजागर किया है, जो 1857 के प्रथम राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में कन्ये से कन्या मिलाकर भाग लेने वाले हिन्दू-मुस्लिमों में वैमनस्य का जहर फैला रहे हैं --इसी समय एक आंदमी गया । मुसलमानों के गाँव,....। मुसलमानों का उनका स्वार्थ समझाया । कहा, वह उनका अपना आदमी है । उन्हें गोकुशी नहीं करने दी जाती, यह उन पर ज्यादाती की जाती है ।...कलकत्ते के इमाम साहब का...हुक्म है, मुसलमान अपने हक से बाज़ न आये ।...बकरीद को वे गोकुशी करेंगे ।.... फिर वे सज्जन कस्बे में आये । वहाँ दाढ़ी-मूँछें मुड़ाई । फिर {हिन्दू} डी०एस०पी० साहब से मिले । ... "अब के इमशेर पुर में बड़ा जोश है । बकरीद को गोकुशी होने वाली है । मुसलमान चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं, गोकुशी करेंगे और हुज़र के सामने करेंगे । हिन्दुओं के धार्मिक प्राणों को दुःख होता है ।" यह लिखकर निराला ने अंग्रेज एवं उनके सहयोगियों के राजनैतिक स्वार्थ को उजागर कर दिया है ।

निराला की कुछ आरम्भिक रचनाओं एवं एक दो अन्य रचनाओं जैसे "छत्रपति शिवाजी का पत्र" एवं "यमुना के प्रति" आदि में पुनरुत्थानवादी दृष्टिकोण की झलक मिलती है । "निराला की "छत्रपति शिवाजीका पत्र", "जागो फिर एक बार", और "यमुना के प्रति" आदि रचनाएं हिन्दू पुनरुत्थानवादी राष्ट्रीय दृष्टिकोण की रचनाएं हैं । इनमें जातीय संस्कृति को देखना उस अलगाववादी दृष्टिकोण को बढ़ावा देना है जिससे हिन्दू राष्ट्रवाद को बल मिलता है ।² लेकिन हम देखते हैं निराला के व्यक्तित्व पर जैसे-जैसे साम्यवादी विचारधारा का प्रभाव बढ़ता गया, वैसे-वैसे ही उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन होता गया इसका प्रभाव उनकी "कुल्लीभाट", "चोटी की पकड़"

1. चोटी की पकड़, चतुर्थ संस्करण, पृ० 55 ।

2. सं० महीप सिंह : सचेतना {मासिक}, शैलेश जैदी "प्रगतिशील आन्दोलन : अन्तर्विरोध और उपलब्धियाँ", शीर्षक लेख, अक्टूबर 1986, पृ० 46 ।

आदि रचनाएँ हैं, जिनमें उनका अधिक मानवतावादी और यथार्थवादी दृष्टि-कोण है। निराला हिन्दू संकीर्णता के सम्बन्ध में लिखते हैं—“हिंदुओं की संकीर्णता के कारण ही मुसलमान इस देश में संकीर्ण हो रहे हैं। यदि फारस में वे बढ़े-चढ़े विचारों के हैं, रूस में उनका चोला बदल गया है, टर्की में उनका कुछ और ही रूप हो रहा है, तो कोई कारण नहीं कि यहाँ के मुसलमान भी हिंदुओं के बढ़ते हुए विचारों और समाज-सुधारों को देखकर अपना सुधार न करें।”¹

निराला का दृढ़ विश्वास है कि अगर हिन्दू और मुस्लिम समझदारी से काम लें तो, देश में सुदृढ़ राष्ट्रीयता एवं एकता स्थापित कर सकते हैं—“यूरोप के जर्मनी, फ्रांस, इटली आदि देशों में यदि एकता है, तो भारत में उससे एक इंच भी कम नहीं। यदि विभिन्न जातियों {Races} के होते हुए भी वे देश एक राष्ट्र की दृढ़ता पा सकते हैं, तो हिंदुओं, मुसलमानों {दोनों} ही आर्य और अनार्य भी हैं { के इस देश में भी वही राष्ट्रीयता स्थापित हो सकती है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।”²

अतः हम कह सकते हैं कि निराला ने समाज में ऊँच-नीच का भेद मिटाकर, धार्मिक रूढ़ियों एवं सामाजिक कुरीतियों आदि का विरोध करके समाज को मानवतावाद का यथार्थ वैज्ञानिक दृष्टिकोण देकर, सामाजिक चेतना जाग्रत की।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं, कि निराला ने अपने युग की समस्याओं का अध्ययन करके उनके समाधान के लिए अपने विचार प्रकट किए। उन्होंने पूँजीपति वर्ग और सर्वहारा की स्थिति का अध्ययन करके सर्वहारा के प्रति अर्थात् शोषितों से सहानुभूति प्रकट की। किसानों की दयनीय आर्थिक स्थिति का हल वे एक मात्र संघर्ष मानते हैं, क्योंकि उन्होंने जमींदार, ताल्लुकेदार, तथा साहूकारों आदि के द्वारा किसानों एवं मज़दूरों का शोषण होते देखा था।

1. उद्धृत द्वारा रामविलास शर्मा : निराला की साहित्य साधना §2§, प्रथम संस्करण, पृ० 58 ।

2. वही , पृ० 57

हम देखते हैं कि निराला का विद्रोही रूप राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध प्रकट होता है। वे मुक्ति में विश्वास खो बैठे लोगों के अन्दर विद्रोह के माध्यम से आस्था जगाना चाहते हैं, क्योंकि विद्रोह के द्वारा ही उनकी मुक्ति हो सकती है।

निराला अपनी सामाजिक चेतना के माध्यम से समाज में व्याप्त रूढ़ियों, अन्धविश्वासों, धार्मिक कुरीतियों के विरुद्ध विद्रोह करके समाज को समता और आस्था पर आधारित एक नया दृष्टिकोण देते हैं।

निराला की सामाजिक चेतना का निर्माण तत्कालीन राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के सक्रिय सम्पर्क में आने तथा उनकी प्रतिक्रिया स्वरूप, निराला के स्वस्थ और वस्तुपरक चिन्तन के आधार पर ही हुआ। जहाँ तक उनके धार्मिक संस्कारों का प्रश्न है, वे हिन्दू धर्म में दीक्षित होने के उपरान्त भी उसके अन्तःविरोध और रूढ़ियों को पहचानते हैं तथा उसके उदारवादी स्वरूप को ही स्वीकार करते हैं। देश के विकास की दृष्टि से ही वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक हैं। वे भारतीय संस्कृति के विश्व-बन्धुत्व के सिद्धान्त का विकास विश्व मानवतावाद के रूप में करते हैं। आर्थिक धरातल पर वे सामंतवादी, पूँजीवादी और अंग्रेजों के शोषण के प्रबल विरोधी हैं। राजनीतिक दृष्टि से वे गांधी जी के प्रशंसक तो हैं, लेकिन वे अपनी तीखी और यथार्थपरक प्रतिक्रियाओं के कारण, जैसा कि हम कह चुके हैं, गर्म दल के अधिक निकट हैं और विद्रोह और परिवर्तन में अधिक आस्था रखते हैं, अपेक्षाकृत अहिंसा और शांति के।

द्वितीय अध्याय

द्वितीय अध्याय =====

"अप्सरा" की कथावस्तु एवं समस्याएँ

"अप्सरा" की कथावस्तु एवं समस्याएँ नामक प्रस्तुत अध्याय में हम महाप्राण निराला के "अप्सरा" शीर्षक प्रथम उपन्यास की कथावस्तु का वैज्ञानिक एवं वस्तुपरक ढंग से विश्लेषण करेंगे तथा इस उपन्यास की मूल समस्या एवं अन्य आनुसंगिक समस्याओं का भी विवेचन करेंगे। वस्तुतः यह उपन्यास मूल रूप से स्वच्छन्दतावादी या रोमानी उपन्यास है और निराला के कथाकार रूप के साथ ही उनके कवि-रूप की स्पष्ट छाप भी हम यहाँ उनकी सौन्दर्य-सर्जना कल्पना की उड़ान और कोमल कान्त पदावली की प्रस्तुति में देख सकते हैं।

"अप्सरा" पर विचार करने से पूर्व निराला की मूल दार्शनिक दृष्टि से भी परिचित होना अनिवार्य है, अन्यथा हम उनकी "अप्सरा" के साथ न्याय ही नहीं कर सकेंगे और न उसका सही मूल्यांकन ही कर पाएँगे। निराला स्वामी विवेकानन्द के व्यावहारिक अद्वैतवाद से प्रभावित हैं एवं वे मनुष्य को ही ईश्वर या ब्रह्म मानते हैं और वे स्वामी विवेकानन्द की भाँति ही इस संसार को माया नहीं मानते। नारी को भी वे ईश्वरी, दुर्गा, शक्ति या सरस्वती मानते हैं। डॉ० बुद्धसेन नीहार का भी मत इस विषय में द्रष्टव्य है: "इस प्रकार निराला मानव में आत्म-प्रकाश, आत्म-चेतना और आत्म-शक्ति भरकर उसे सबसे ऊपर प्रतिष्ठित करना चाहते हैं।"¹

"परिमल" की "जागो फिर एक बार" द्वितीय भाग की कविता में भी वे मनुष्य को ब्रह्म मानते हैं। डॉ० राम विलास शर्मा की भी कथन द्रष्टव्य है --
"उन्होंने एक कविता लिखी -- "अध्वास"। इसमें उन्होंने अपने मन की शंकाएँ प्रकट कीं। ब्रह्म में कोई गति नहीं होती, गति संसार में है। दुखी जनों

को देखकर हृदय में करुणा उमड़ आती है । करुणा से दुखियों को सहारा देना मानव धर्म है । भले ही कोई इसे माया कहे पर निश्चल ब्रह्म में लीन होने से करुणा की इस माया में फँस रहना अच्छा है ।¹

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है, अब हम यहाँ "अप्सरा" की कथावस्तु पर विचार करेंगे ।

"अप्सरा" की कथावस्तु :

"अप्सरा" निराला का प्रथम उपन्यास है । यह एक रोमानी उपन्यास है जो जनवरी 1931 में प्रकाशित हुआ था । प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु आदर्शपरक, रोचक एवं प्रभावशाली है । कथावस्तु इस प्रकार प्रारंभ होती है कि कलकत्ता में ईडन-गार्डन में एक सुन्दर युवती बैठी हुई चाँद की किरणों को तालाब की लहरों में एकाग्रचित्त होकर निहार रही है । अचानक अंग्रेज पुलिस सुपरिण्डेंट हैमिल्टन आकर उसके पार्श्व में बैठ जाता है और उसे बलपूर्वक अपनी बाहों में लेना चाहता है । इस समय निकट ही दो-एक ही व्यक्ति और बैठे थे । युवती अचानक हुए इस हादसे से घबरा जाती है । हैमिल्टन युवती के साथ छेड़खानी कर ही रहा था कि राजकुमार नामक युवक आकर अंग्रेज की पिटाई कर युवती को वहाँ से शीघ्र चले जाने के लिए कहता है । युवती राजकुमार के साहस के कारण इस विपत्ति से बच जाती है और राजकुमार की वीरता पर मुग्ध होकर मन से उसे प्रेम करने लगती है । इस युवती का नाम कनक है । अठारह वर्षीय सुन्दर कनक वैश्या सर्वेश्वरी की पुत्री है । सर्वेश्वरी बड़ी भारी सम्पत्ति की स्वामिनी है । उसने एक आलीशान भवन भी बनवा लिया है । सर्वेश्वरी ने अपनी एकमात्र संतान कनक को काफी नाज-नखरों के साथ पाला है । उसे किसी चीज की कमी महसूस नहीं होने दी है । एक अंग्रेज महिला कैथरीन तथा एक अध्यापक कनक को घर पढ़ाने आते हैं ।

1. निराला की साहित्य साधना §1. §, द्वितीय संस्करण, पृ0 59 ।

धीरे-धीरे एक साल बीत जाता है । सर्वेश्वरी कनक को नृत्य और संगीत की शिक्षा दिलवाती है । एक दिन अखबारों में सूचना निकलती है--

"कोहनूर -- थिएटर में"

शकुन्तला ! शकुन्तला !! शकुन्तला !!!

शकुन्तला मिस कनक

दुष्यन्त -- राजकुमार वर्मा, एम० ए०^१

लोग नयी ऐक्ट्रेस मिस कनक का नाम पढ़कर टिकट खरीदने के लिए व्याकुल हो जाते हैं । शो वाले दिन थिएटर पर एक बड़ी भीड़ नयी ऐक्ट्रेस मिस कनक को देखने पहुँचती है ।

उपन्यास का नायक राजकुमार थिएटर कम्पनी में नौकर नहीं है, बल्कि वह शौकिया नाटकों में भाग लिया करता है और कलकत्ता के एक कालिज में हिन्दी का प्रोफेसर है । वह हिन्दी नाटकों में अभिनय करके तथा हिन्दी नाटक लिखकर, हिन्दी भाषा की सेवा कर रहा है । हिन्दी भाषा की सेवा करने के कारण ही अभी तक राजकुमार ने विवाह भी नहीं किया था ।

दर्शकों के काफी शोर-गुल के बाद नाटक शुरू होता है । कनक शकुन्तला के पात्र के रूप में पहली बार रंगमंच पर आती है । उसे शकुन्तला के रूप में देखकर दर्शकों की साँसें रुक जाती हैं । कनक की, दुष्यन्त के पात्र के रूप में राजकुमार से यहाँ पुनः भेंट हुई । कनक शकुन्तला का अभिनय करते हुए राजकुमार को पति-रूप में वरणा कर लेती है । नाटक के समाप्त होने के पश्चात्, ईडन गार्डन वाली घटना को लेकर, हैमिल्टन दरोगा को आज्ञा देकर राजकुमार को गिरफ्तार करा लेता है ।

विजयपुर के कुँआरा साहब नाटक में कनक का अभिनय देखकर उससे प्रभावित होते हैं और उनकी इच्छा कनक का गाना सुनने की होती है । अतः

वे उसे बुलाने के लिए एक आदमी उसके पास भेजते हैं । कनक जाने से इन्कार कर देती है, क्योंकि नाटक करते हुए उसका विवाह राजकुमार के साथ होता है और वह इसे अपने लिए सच मान बैठती है । इसी लिए कनक राजकुमार को पुलिस के चेंगुल से बचाने की युक्ति सोचती है ।

कनक दरोगा को बुलाकर, झूठे इशक की बातों में उलझाकर राजकुमार के गिरफ्तार होने का कारण जान लेती है, साथ में दरोगा को शराब पिलाकर उसकी जेब से राजकुमार के मामले से सम्बन्धित चिट्ठी भी निकाल लेती है । चिट्ठी निकालकर वह दरोगा को एक कमरे में बन्द करवा देती है, क्योंकि दरोगा शराब के नशे में होता है, उसे इसका अहसास भी नहीं होता है । चिट्ठी हैमिल्टन की है । यह वही हैमिल्टन है — जो ईडन गार्डन में कनक के साथ असभ्य व्यवहार कर चुका था । हैमिल्टन ने चिट्ठी अपने मित्र मिस्टर चर्चिल के लिए, राजकुमार को रिश्वत आदि के मिथ्या आरोप फँसाने के लिए लिखी थी ।

कनक चिट्ठी को लेकर कैथरीन के पास जाती है, शायद वह कुछ मदद कर सके । कैथरीन हैमिल्टन को लेकर कनक के पास आती है । कनक अपने रूप के जादू तथा शराब से हैमिल्टन को मदहोश कर देती है । कनक की योजना के अनुसार मजिस्ट्रेट रॉबिन्सन कनक के यहाँ आते हैं । कनक हैमिल्टन की लिखी हुई चिट्ठी रॉबिन्सन साहब को देती है और ईडन-गार्डन की घटना का उल्लेख भी करती है कि एक दिन मैं ईडन-गार्डन में, तालाब के किनारे वाली बेंच पर अकेली बैठी थी । हैमिल्टन ने मुझे पकड़ लिया, और मुझे बहुत अशिष्ट शब्द कहे । उन्हें लज्जा के कारण मैं आपके समक्ष दोहरा नहीं सकती । कनक ने रॉबिन्सन साहब को दरोगा के भी कारनामों दिखलाये । रॉबिन्सन साहब कनक से बहुत खुश हुए और उन्होंने राजकुमार को छोड़ दिया ।

कनक राजकुमार को मुक्त कराकर अपने घर ले आती है । राजकुमार अपनी प्रेयसी के साथ ऐश्वर्य से भरा हुआ जीवन बिताता है । कभी दोनों शाम की गाड़ी में बैठकर तैर-सपाटे को निकल जाते हैं और कभी एक-दूसरे में

खोये रहते हैं। लेकिन ऐश्वर्य एवं आनंद-उल्लास से भरा हुआ यह सुख शीघ्र ही समाप्त हो जाता है, क्योंकि एक दिन राजकुमार कनक के पढ़ने वाले सुसज्जित कमरे में बैठा था, कि एकाएक उसकी दृष्टि संवाद पत्र के "चन्दन सिंह गिरफ्तार" शीर्षक पर ठहर जाती है। वास्तव में चन्दन राजकुमार का मित्र है, जो कि भारत को ब्रिटिश सरकार से मुक्त कराने के लिए क्रान्तिकारी गतिविधियों में सक्रिय भाग लेता है। इसी सन्देह में चन्दन सिंह को गिरफ्तार किया जाता है। विद्यार्थी-जीवन में दोनों के एक समान ही आदर्श थे। देश, किसानों एवं समाज के कल्याण के लिए चन्दन ने सक्रिय क्रान्तिकारी राजनीति का मार्ग चुना तो राजकुमार ने साहित्य का मार्ग। लेकिन चन्दन सिंह की गिरफ्तारी ने राजकुमार के अन्दर उन सोये हुए आदर्शों को फिर से जगा दिया। उपन्यासकार निराला ने राजकुमार की मानसिक स्थिति का चित्रण इस प्रकार किया है : "राजकुमार क्षुब्ध हो उठा। अपनी स्थिति से उसे घृणा हो गयी। एक तरफ उसका वह मित्र था, और दूसरी तरफ माया के परिमल वसन्त में कनक के साथ वह । छिः-छिः, वह और चन्दन....!"¹ कनक के प्रति राजकुमार के मन में दुविधा थी, वह यह समाचार पढ़कर, कनक के द्वारा वहीं ठहरने के आग्रह को ठुकराकर भवानीपुर चला जाता है। भवानीपुर से चन्दन की भाभी तारा को सुरक्षा की दृष्टि से उसके मायके विजयपुर ले जाता है और स्वयं भी वहीं रहने लगता है।

कनक को राजकुमार के चले जाने से और उसके व्यवहार से बड़ा दुःख होता है। बाद में उसे तारा के साथ जाता हुआ देखकर उसके मन में सन्देह उत्पन्न हो जाता है। वह अस्वस्थ पड़ी रहती है। कनक की माता सर्वेश्वरी उसकी यह स्थिति देखकर घबरा जाती है तथा कैथरीन को बुलाकर कनक की स्थिति से अवगत कराती है। इसी बीच विजयपुर के

कुँवर साहब के राजतिलक के उपलक्ष में कनक के नृत्य का निमन्त्रण आता है, जिसे सर्वेश्वरी स्वीकार कर लेती है। कनक विक्षिप्तावस्था में अपनी माँ के साथ कुँवर साहब के राजतिलक में नृत्य करने के लिए विजयपुर जाती है।

विजयपुर में कनक को कुँवर साहब तथा उनके उपस्थित मेहमानों की काम-लोलुप दृष्टियों के समक्ष अपनी असहाय स्थिति का बोध होता है। उसे इस संकट की घड़ी में राजकुमार की याद आती है।

तारा राजकुमार से कनक का परिचय जानकर, राजकुमार को कनक को घर लाने के लिए भेजती है। कनक अपनी माँ के पास बैठी हुई थी तभी उसकी दृष्टि बाग में खड़े राजकुमार पर पड़ती है। कनक का मन उल्लास से भर उठता है और वह अपनी माँ के पास से उठकर सावधानी से बाग में राजकुमार के पास आ जाती है। लेकिन बातों के बीच में राजकुमार के द्वारा यह कहना कि--"बहुजी ने बुलाया है" कनक को तीर के समान चुभता है। क्रोध में राजकुमार से बिना कुछ कहे वापिस चली आती है। क्योंकि कनक को तारा तथा राजकुमार के रिश्ते के सम्बन्ध में अभी तक कुछ ज्ञात नहीं हुआ है।

कनक कुँवर साहब के यहाँ गाना गाती है। राजकुमार भी कनक का गाना सुनने पहुँच जाता है। महफिल ठसाठस भरी हुई थी। कनक आदमियों की भीड़ में राजकुमार को वहाँ खड़ा हुआ देखती है, तो वह क्रोध से जल जाती है और उसके मन में स्वयं को राजकुमार द्वारा अपमानित होने पर एक विचार आता है, कि वह राजकुमार के इस व्यवहार के लिए उसे सबक सिखाये। अतः कनक कुँवर साहब से राजकुमार को गिरफ्तार करने के लिए कहती है। कुँवर साहब अपने सिपाहियों को आदेश देते हैं कि वह कनक द्वारा बताये हुए व्यक्ति को गिरफ्तार कर लें। लेकिन राजकुमार नृत्य के बीच से ही उठकर वापिस घर चला जाता है।

चन्दन सिंह को सबूत ने मिलने के कारण छोड़ दिया जाता है और वह सीधा विजयपुर चला आता है। घर आने पर चन्दन को अपनी भाभी तारा से कनक व राजकुमार के बारे में मालूम होता है और वह उनकी रक्षा के

लिए छद्मवेश धारण कर अन्तःपुर में प्रविष्ट हो जाता है । वहीं पर कुँवर साहब के सिपाही धोखे से राजकुमार समझकर चन्दन को गिरफ्तार कर लेते हैं ।

कनक बंगले पर पहुँचकर घबरा जाती है, क्योंकि शत्रुओं के इस गढ़ में कनक के द्वारा अपमानित पुलिस अफसर हैमिल्टन भी मौजूद था । इस संकट की घड़ी में चन्दन कनक को परिचय बताता है और कनक को अपने साथ लेकर बंगले के पिछले भाग से खाई में कूद जाता है । जंगल के मार्ग से होकर कनक को अपनी भाभी तारा की सुरक्षा में पहुँचाता है और वहाँ कनक की राजकुमार से पुनः भेंट होती है । राजकुमार एवं कनक के मन में जो विरक्ति का भाव उत्पन्न हो गया था, वह इस साहचर्य से पुनः प्रेम-भावना में परिवर्तित हो जाता है ।

अन्त में गाँव से तारा, चन्दन, राजकुमार कनक को घूँघट में छिपा कर कुँवर साहब के आदमियों से बचाकर कलकत्ता लाने में सफल हो जाते हैं । कलकत्ता पहुँचकर तारा कनक का विवाह राजकुमार के साथ करा देती है तथा कनक को हिन्दू धर्म में भी दीक्षित करती है और उसको गृहस्थ की शिक्षा भी देती है—

“प्रतिज्ञा करो, आज से यह काम कभी नहीं करूँगी ।”

“कभी नहीं करूँगी ।” कनक ने कहा

“कहो, सुबह नहाकर रोज शिव पूजन करूँगी ।”

“सुबह नहाकर रोज शिव पूजन करूँगी ।”

कनक की माता सर्वेश्वरी भी अपने जीवन के अन्तिम दिनों में नृत्य-गान का पेशा छोड़कर काशीवास करने का निश्चय करती है तथा अपनी सम्पत्ति दामाद एवं बेटी कनक को दे देती है । हैमिल्टन और कुँवर साहब मिलकर राजकुमार के नाम का वारण्ट निकलवा देते हैं, जिसका चन्दन को ज्ञान हो जाता है । राजकुमार के नाम का वारण्ट का पता लग जाने पर, चन्दन स्वयं को

राजकुमार बताकर गिरफ्तार करा देता है । राजकुमार एवं कनक निश्चिन्त होकर पारिवारिक सुखी जीवन-यापन करते हैं और इस प्रकार उपन्यास का सुखद अन्त होता है ।

प्रस्तुत कथानक से स्पष्ट हो जाता है कि "अप्सरा" उपन्यास की मूल कथा कनक और राजकुमार के प्रेम पर ही आधारित है एवं उसका मूल लक्ष्य है कनक के जीवन की गरिमामयी नारी के रूप में प्रतिष्ठा ।

मुख्य कथावस्तु को हम चार भागों में विभाजित कर सकते हैं--

- 1- उपन्यास के आरम्भ से लेकर राजकुमार के गिरफ्तार होने तथा कनक के द्वारा राजकुमार को छुड़ाने तक की कथा ।
- 2- कनक के घर से राजकुमार के चले जाने से लेकर, उसके विजयपुर पहुँचने तक की कथा ।
- 3- कनक का विजयपुर के कुँवर साहब के राजतिलक में नृत्य-गायन के लिए जाने एवं चन्दन द्वारा कनक को कुँवर साहब के चंगुल से निकालने तक की कथा ।
- 4- राजकुमार, चन्दन, कनक, तारा के विजयपुर से वापिस कलकत्ता आने से लेकर अन्त तक की कथा ।

वस्तुतः मूल तथ्य यही है कि "अप्सरा" का कथानक कनक को ही केन्द्र बनाकर लिखा गया है । लेखकीय वक्तव्य से भी इसकी पुष्टि होती है । निराला का कथन भी द्रष्टव्य है--"अप्सरा स्वयं मुझे जिस-जिस ओर ले गई, दीपक-पतंग की तरह मैं उसके साथ रहा ।" ¹ इस उपन्यास में लेखक का उद्देश्य वेश्यापुत्री कनक से नृत्य और गायन के पेशे को छुड़ाकर उसे पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन और नारी की मर्यादा प्रदान करना रहा है । मुख्य कथा के अतिरिक्त चन्दन और उसके परिवार से सम्बन्धित कथा भी आनुषंगिक रूप में है । चन्दन के द्वारा कनक को कुँवर साहब के जाल से छुड़ाना तथा चन्दन की भाभी तारा नायक राजकुमार एवं नायिका कनक के प्रेम में उत्पन्न

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० वक्तव्य ।

हुए दंढ व सन्देह को दूर करके नायक और नायिका के मिलन में सहयोग करती है । अतः हम कह सकते हैं कि चन्दन के परिवार की कथा उपन्यास के विकास में गौण कथा होने के बावजूद भी गति उत्पन्न करती है ।

प्रस्तुत उपन्यास घटनात्मक है । आरम्भ से लेकर अन्त तक घटनाएँ घटित होती रहती हैं, जो तिलस्मी एवं रेयारी उपन्यासों की काल्पनिक घटनाओं के समान सामंजस्य रखती हैं जैसे पार्क में हैमिल्टन द्वारा कनक के साथ छेड़छाड़ करना और अचानक राजकुमार का पदार्पण, राजकुमार के गिरफ्तार होने पर कनक के द्वारा हैमिल्टन एवं दरोगा को शराब पिलाकर राजकुमार के पकड़ने का रहस्य जानना या फिर चन्दन द्वारा कनक को कुँवर साहब के यहाँ से मुक्त कराकर घने जंगल व पानी भरे मार्ग से होकर लाना आदि घटनाओं से सिद्ध हो जाता है कि उपन्यास में जासूसी, तिलस्मी रेयारी उपन्यासों के समान कौतूहलपूर्ण घटनाएँ हैं । उपन्यास की हर-एक घटना अपने में रहस्य तथा रोमांस का पुट लिए हुए है, जो अवास्तविकता प्रतीत होती है । उपन्यास के कथानक में सिनेमा-कथानकों के समान प्रसंग हैं । डॉ० राम विलास शर्मा का द्रष्टव्य भी स्पष्ट है---"अप्सरा" में आजकल के सिनेमा-कथानकों के बहुत से गुण मौजूद हैं । रोमांस के साथ देश-सेवा का आवश्यक पुट विद्यमान है । नायक पढ़ा-लिखा, देखने-सुनने में सजीला और देश का सेवक भी होना चाहिए । अगर वह क्रान्तिकारी हो तो देश-सेवा में घटना-वैचित्र्य भी आ जाता है । नायिका धनी हो और उसे नायक के त्यागमय जीवन से सहानुभूति हो, इससे अधिक मनोहर दृश्य और क्या होगा ।"

"अप्सरा" की भाषा काव्यात्मक एवं क्लिष्ट है । इसका प्रमुख कारण है जैसा कि हम उल्लेख कर चुके हैं, उनकी छायावादी काव्य की भाषा का प्रभाव । हिन्दी भाषा को समृद्ध बनाने की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास की भाषा सोद्देश्यपूर्ण है, लेकिन उपन्यास काव्यत्व के भार से दब गया है ।

उपन्यास के पात्रों की भाषा व्यावहारिक एवं पात्रानुकूल है । कनक, राजकुमार, चन्दन की भाषा में जहाँ शहरी शब्दावली है, वहीं दूसरी तरफ ग्रामीणों की भाषा अपना ठेठ देहाती रूप लिए हुए है । ग्रामीण भाषा का स्वरूप हम चन्दन की माँ की बोली में देख सकते हैं, उदाहरण स्वरूप, चन्दन की माता राजकुमार से कहती है--“देखो ने भैया, न-जाने कब जीव निकल जाय, करारे का रूख, कौन ठिकाना, चाहे जब भहराय के बैठ जाय, यहीं से अब जितनी जल्दी बाबा बिस्वनाथजी की पैरपोसी मा हाजिर है सकी, वतनै अच्छा है ।”¹ उपन्यास के भावपक्ष एवं कला पक्ष पर स्वच्छन्दता-वादी प्रवृत्ति का प्रभाव है और यही प्रभाव पाठक को अंत तक बांधि रखता है ।

अंत में लेखक कनक को नारी की उच्च महिमा से मण्डित कर देता है ।

“अप्सरा” की मूल समस्या : वेश्यावृत्ति :

निरालाकृत “अप्सरा” उपन्यास की मूल समस्या वेश्या जीवन की समस्या है । वेश्या समस्या समाज के लिए एक अभिशाप है । स्त्रियाँ स्वयं इस घृणित पेशे में नहीं आती हैं, बल्कि परिस्थितियों से बाध्य होकर वेश्या-वृत्ति को अपनाती हैं । हमारा समाज ऊपर से वेश्याओं से घृणा करता है तथा समाज में उनके लिए दरवाजे बन्द कर दिये जाते हैं, लेकिन वही समाज जो वेश्याओं से घृणा करता है, अन्दर से वेश्यालय बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है । समाज के अभिजातवर्ग के व्यक्ति वेश्यालयों में जाकर अनेक प्रकार के व्यभिचार करते हैं ।

भारतीय समाज में सतायी हुई नारियाँ, विधवाएँ, दहेज प्रथा, बहुपत्नी, अनमेल विवाह तथा आर्थिक शोषण आदि कुप्रथाओं के कारण नारियों को जीवित रहने के लिए वेश्यालयों की शरण में विवश होकर जाना पड़ता है ।

भारतीय लेखकों ने वेश्याओं की समस्याओं को सामने रखते हुए, अपने साहित्य में वेश्याओं की दयनीय स्थिति के प्रति संवेदना प्रकट की है तथा समाज के अभिजात वर्ग पर प्रहार किया है, जिनके कारण वेश्यावृत्ति पनपती है। लेखकों ने समाज तथा धर्म की रूढ़िवादी कुप्रथाओं का भी विरोध किया है, जो नारी को वेश्या बनने पर बाध्य करती हैं। कोई नारी जन्म से वेश्या नहीं होती, बल्कि परिस्थितियों के दबाव के कारण ही नारी को वेश्या बनना पड़ता है। वेश्यावृत्ति आज भी हमारे समाज के लिए पहले के समान ही एक गम्भीर समस्या बनी हुई है।

वेश्या को समाज की एक गम्भीर समस्या मानते हुए अन्य भाषाओं के साहित्यकारों की भाँति ही हिन्दी साहित्य के लेखकों ने भी इस तरफ ध्यान दिया। मुंशी प्रेमचन्द ने "सेवासदन" तथा "गबन", कौशिक ने "माँ", उग्र ने "शराबी", प्रसाद ने "कंकाल", चतुरसेन शास्त्री ने "आत्मदाह", भगवती चरण वर्मा ने "तीन वर्ष", आदि उपन्यासों में वेश्या समस्या को उठाया है और वेश्याओं के जीवन का यथार्थ और मार्मिक चित्रण किया है।

निराला ने भी अपने समकालीन साहित्यकारों के समान वेश्यावृत्ति के लिए क्रूर समाज को दोषी ठहराते हैं। निराला का दृष्टिकोण है कि कोई भी नारी स्वेच्छा से वेश्या वृत्ति को नहीं अपनाती है, बल्कि आर्थिक स्थितियाँ तथा अन्य सामाजिक कुरीतियाँ नारी को वेश्यावृत्ति अपनाने के लिए बाध्य करती हैं। इसीलिए निराला वेश्याओं को अप्सरा के समान पवित्र मानते हैं। इसी दृष्टिकोण को सामने रखते हुए उन्होंने अप्सरा उपन्यास लिखा। यद्यपि निराला ने "अप्सरा" के वक्तव्य में कहा है—“मैंने किसी विचार से अप्सरा नहीं लिखी, किसी उद्देश्य की पुष्टि भी इसमें नहीं है।”¹ निराला के युग की प्रमुख समस्याओं में से वेश्यावृत्ति भी एक समस्या थी, क्योंकि निराला का दृष्टिकोण मानवतावादी था, इसलिए वे

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० वक्तव्य।

इस समस्या से बच नहीं सकते थे। "अप्सरा" में उनका उद्देश्य कुछ न रहा हो, लेकिन इसके माध्यम से उनके वेश्या सम्बन्धी विचार प्रकट हुए हैं और "अप्सरा" की मूल समस्या भी वेश्यावृत्ति ही है।

"अप्सरा" उपन्यास में निराला का यह दृष्टिकोण व्यक्त हुआ है कि वेश्याओं के हृदय में भी पारिवारिक जीवन व्यतीत करने की प्रबल आकांक्षा होती है क्योंकि वे भी सामान्य नारियाँ होती हैं। यदि उनको पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन व्यतीत करने का अवसर प्राप्त हो, तो वे भी पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन की मर्यादाओं को सहर्ष विश्वासपूर्वक निभा सकती हैं।

उपन्यास की नायिका वेश्या-पुत्री कनक के माध्यम से निराला वेश्याओं के प्रति पूर्ण संवेदना प्रकट करते हैं। तभी वे अप्सरा उपन्यास में वेश्यापुत्री को नायिका बनाते हैं। ये०पे० चेलिशेव का कथन स्पष्ट है --- "आकाश से धरती पर उतरने वाली अतीव सुन्दर युवती की तुलना में एक वेश्या की बेटी कनक को प्रस्तुत करते हैं, जिसका गन्धर्व जाति के नियमानुसार उसकी माँ के समान ही पूर्व निश्चित भाग्य है।" वेश्यापुत्री कनक की धम्मनियों में भी एक संभ्रान्त व्यक्ति का खून है, लेकिन क्योंकि वह एक वेश्या की बेटी है, इसलिए वह भी वेश्या है।

वेश्याएँ भी चाहती हैं कि उनको बेटियाँ उनके समान वेश्यावृत्ति न अपनाएँ, बल्कि सामाजिक और पारिवारिक जीवन व्यतीत करें। कनक की माँ सर्वेश्वरी की भी इच्छा है कि कनक किसी युवक से विवाह करके सुखमय गृहस्थ जीवन व्यतीत करे और उसे इस नरकीय जीवन से मुक्ति मिले। कनक के राज-कुमार से प्रेम होने पर उसकी माँ उसके उच्चकुलीन होने के सम्बन्ध में कहती है-- "ईश्वर ने तुम्हें अच्छा वरदान दिया है। वह तुम्हें सुखी रखे। आज एक नयी बात सुनाऊँगी। आज तक तुम्हें अपनी माता के सिवा पिता का नाम नहीं मालूम था। अब तुम्हारे पिता का नाम तुम्हें बता देना मेरा धर्म है। कारण,

----- ठ-----

1. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, प्रथम संस्करण, पृ० 111 ।

तुम्हारे कार्यों से मैं देखती हूँ, तुम्हारे स्वभाव में पिता पक्ष ही प्रबल है। बेटी तुम रणजीत सिंह की कन्या हो। तुम्हारे पिता जयनगर के महाराज थे।... आज देखती हूँ, तुम्हारे कुल के संस्कार ही तुममें प्रबल हैं। इससे मुझे प्रसन्नता है। अब तुम अपनी अन्मोल, अलभ वस्तु को संभाल कर रखो, उसे अपने अधिकार में करो। आगे तुम्हारा धर्म तुम्हारे साथ है।¹ जब कनक की धमनियों में एक संभ्रान्त व्यक्ति का रक्त है, तो परिस्थितियों वश वेश्या की पुत्री होने के कारण उसके लिए समाज के दरवाजे क्यों बन्द हो गए हैं। उसे भी सामाजिक गृहस्थ जीवन व्यतीत करने का अधिकार है, जो उसे मिलना चाहिए--"अप्सरा" एक वेश्यापुत्री कनक की कथा है जो नर्तकी है लेकिन किसी गुणी और सदाचारी युवक से विवाह कर गृहस्थ जीवन बसाने की आकांक्षा रखती है।²

निराला ने प्रस्तुत उपन्यास में समाज के संभ्रान्त व्यक्तियों पर भी प्रहार किया है, जिनके कारण वेश्यावृत्ति को बढ़ावा मिलता है। समाज के ये संभ्रान्त नागरिक सभ्य होने का मुखौटा ओढ़ कर अपनी दौलत के सहारे नारियों का शारीरिक एवं मानसिक शोषण करते हैं तथा वेश्यावृत्ति को बढ़ावा देते हैं। कनक के द्वारा निराला इन शब्दों में समाज के इन संभ्रान्त व्यक्तियों पर तीक्ष्ण प्रहार करते हैं--"चरित्र में यह किसी भी तवायफ से श्रेष्ठ नहीं। पर समाज इनका है, इसलिए अपराधी नहीं। नीचता से ओत-प्रोत ऐसी वृत्तियों को लिए हुए भी ये समाज के प्रतिष्ठित, सम्मान्य, विद्वान और बुद्धिमान मनुष्य हैं। और मैं।"³ यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि समाज का संभ्रान्त कहलाने वाला वर्ग नीच-से-नीच कार्य समाज में करता रहता है और सभ्य होने का आवरण ओढ़े रखता है। वस्तुतः इनका चरित्र किसी भी तवायफ से कम नहीं होता, बल्कि उससे भी अधिक गिरा हुआ होता है। वेश्याएँ तो फिर भी परिस्थितियों वश वेश्यावृत्ति को अपनाती हैं और समाज के इन भ्रष्ट ठेकेदारों के सामने वे देवी स्वरूप हैं।

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० 51।

2. राजकुमार सैनी : साहित्य सृष्टा निराला, प्रथम संस्करण, पृ० 72।

3. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० 111।

विजयपुर के कुँवर साहब, पुलिस अफसर हैमिल्टन तथा उनके मित्र समाज के उस धनिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो अपने धन और पद के कारण वेश्यावृत्ति को बढ़ावा देते हैं। यह अपने विलास के लिए कनक और उसके समान ही अन्य नारियों के साथ अनाचार करते हैं। इनके विलासितापूर्ण जीवन के आनन्द के लिए न जाने कितनी नारियों को यह नरकीय जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

निराला वेश्यावृत्ति के पनपने के प्रमुख कारणों में से आर्थिक स्थिति को भी एक कारण मानते हैं यद्यपि निराला ने "अप्सरा" उपन्यास में आर्थिक कारणों पर स्पष्ट रूप से विचार नहीं किया है, लेकिन सर्वेश्वरी के माध्यम से संकेत अवश्य दिया है। सर्वेश्वरी नहीं चाहती है कि उसकी बेटी कनक भी उसी के समान इस घृणिता पेशे को अपनाए। वह चाहती है कि कनक इस घृणिता पेशे से निकल कर किसी युवक से विवाह करके सुखमय गृहस्थ जीवन व्यतीत करे। लेकिन सर्वेश्वरी अपनी इच्छा के विरुद्ध संभवतः आर्थिक कारणों से ही कुँवर साहब के निमन्त्रणा को स्वीकार करती हुई कनक को राजतिलक के अवसर पर नृत्य-गान हेतु ले जाने पर विवश हो जाती है---"विजयपुर के राजकुमार का राजतिलक है।... हमने बयाना भी ले लिया है --दो सौ रुपये रोज, खर्च अलग।... हमें परसों पहुँच जाना चाहिए"।

लेखक ने समाज के उन खोखले विचारों पर भी प्रहार किया है, जो वेश्याओं को छूना भी पाप समझते हैं तथा वेश्याओं के चाहते हुए भी उन्हें इस नरकीय जीवन से मुक्त होने नहीं देना चाहते। कनक इस घृणिता पेशे से मुक्त होकर तारा के साथ रहना चाहती है, लेकिन तारा अपनी सास के सम्बन्ध में उससे कहती है---"मेरी अम्मा, छोटे साहब की माँ शायद वहाँ तुमसे कुछ नफरत करें। अगर उनसे तुम्हारी मुलाकात होगी, तो मैं उनसे कुछ छिपाकर न कह सकूँगी। तुम्हारा वृत्तान्त सुन कर वह जिस स्वभाव की हैं, तुम्हें छूने में तथा अच्छी तरह बात-चीत करने में जरूर कुछ संकोच करेंगी।"² यहाँ यह तथ्य स्पष्ट

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ 78 ।

2. वही, पृष्ठ 129 ।

हो जाता है कि तारा की अम्मा समाज के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है, जिनकी रूढ़िवादी मानसिकता के कारण समाज में जाग्रत हो रही प्रगतिशील चेतना में, गतिरोध उत्पन्न होता है ।

निराला कनक का विवाह उच्चवर्गीय राजकुमार से सम्पन्न करा कर वेश्यावृत्ति की समस्या को एक नई दिशा प्रदान करते हैं और इस समस्या का स्थायी समाधान प्रस्तुत करते हैं । तारा, चन्दन और नन्दन सिंह के द्वारा कनक एवं राजकुमार के विवाह की स्वीकृति सामाजिक स्वीकृति है । जहाँ प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास "सेवासदन" में वेश्यावृत्ति का समाधान केवल "सेवासदन" की स्थापना बताया है, वहीं निराला समाज में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन करके कनक का विवाह राजकुमार से कराकर एक आदर्श स्थापित करते हैं । डॉ० कुँवरपाल सिंह का भी "अप्सरा" के सम्बन्ध में कथन स्पष्ट है -- "निराला ने "अप्सरा" में इस समस्या को रोमांटिक भावभूमि पर चित्रित किया है, लेकिन उन्होंने वेश्यापुत्री का विवाह एक भद्र कुलीन और शिक्षित पुरुष से कराया है । निराला जड़ और रूढ़िवादी मान्यता को तोड़कर एक समाधान प्रस्तुत करते हैं ।"¹

वेश्यापुत्री भी अपने अन्दर हृदय रखती है तथा वह उपयुक्त अवसर मिलने पर पतिव्रत धर्म की मर्यादा को स्वीकार करके चलने में अधिक सुख महसूस करती है । प्रस्तुत उपन्यास में इसी तथ्य पर प्रकाश डाला गया है । श्री शिवनारायण श्रीवास्तव का भी कथन द्रष्टव्य है-- "वेश्या पुत्री भी हृदय रखती है और उपयुक्त अवसर मिलने पर पत्नीत्वकी मर्यादा मानकर चलने में उसे अधिक सुख होता है । यही तथ्य इस उपन्यास में व्यंजित है ।"² अर्थात् निराला ने कनक के माध्यम से वेश्याओं के जीवन को प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित किया है और उनकी पूर्ण संवेदना वेश्याओं के प्रति रही है ।

प्रस्तुत उपन्यास का संदेश यह है कि वेश्याओं को भी सुअवसर प्राप्त होना चाहिए, जिससे वो वेश्यावृत्ति के पेशे से मुक्त होकर सामाजिक एवं

1. हिन्दी उपन्यास : सामाजिक चेतना, प्रथम संस्करण, पृ० 42 ।

2. हिन्दी उपन्यास : प्रथम संस्करण, पृ० 275 ।

पारिवारिक जीवन आरम्भ कर सकें और पूर्ण सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकें ।

“अप्सरा” की अन्य समस्याएँ :

“अप्सरा” उपन्यास की मूल समस्या तो वेश्यावृत्ति तथा वेश्या पुत्री कनक के मन में पारिवारिक और सामाजिक मर्यादा पाने की इच्छा है । लेकिन इसके साथ-साथ अन्य समस्याएँ भी उपन्यास में उठायी गयी हैं । क्योंकि “अप्सरा” 1931 में प्रकाशित हुआ था और उस समय भारत में ब्रिटिश शासन था, अतः उपन्यास में स्वाधीनता आन्दोलन की गतिविधियाँ भी विद्यमान हैं । भारतीय रियासतों के राजाओं, जमींदारों तथा गोरो के बर्बर अत्याचारों का सहज समावेश है । उस समय की सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था का भी चित्रण हुआ है । धार्मिक रुढ़िवादिता के सम्बन्ध में भी निराला ने अपने विचार प्रकट किये हैं ।

राष्ट्रीय आन्दोलन एवं किसान संगठन :

“अप्सरा” उपन्यास में ब्रिटिश शासन के अत्याचारों को उजागर किया गया है, क्योंकि पुलिस विभाग अंग्रेजों के पास था, इसलिए वो भारतीयों को मनमाने ढंग से दंड देते थे । उपन्यास के पात्र अंग्रेज अप्सर हैमिल्टन के अधिकारों के कारण ही कनक तथा राजकुमार को उसके कोप का भाजन बनना पड़ता है । भारतीय रियासतों के राजा तथा जमींदार अंग्रेजों का साथ दे रहे थे और अपने ही देशवासियों पर अत्याचार कर रहे थे, उदाहरण के लिए विजयपुर के जमींदार कुँवर साहब को देखा जा सकता है--“कनक ने बंगले में पहुँच कर जो दृश्य देखा, उससे उसकी रही-सही आशा निर्मूल हो गयी । बंगले में कुँवर साहब के मेहमान टिके हुए थे, जिनमें एक को कनक पहले से जानती थी । वह थे मिस्टर हैमिल्टन । अधिकांश मेहमान कुँवर साहब के कलकत्तेके मित्र थे-- बड़े-बड़े ताल्लुकेदार, और गोरे साहब ।... ये सभी कुँवर साहब के अन्तरंग मित्र थे, अन्तरंग आनन्द के हकदार ।”¹ भारत की परतन्त्रता के कारण यह

राजा तथा जमींदार आदि ही थे । इनकी विलासितापूर्ण प्रवृत्तियों के कारण ही भारत पर ब्रिटिश शासन कायम हुआ था । जहाँ यह जमींदार तथा राजा किसानों की कमाई से रेश कर रहे थे, वहीं किसानों की आर्थिक स्थिति दिन-प्रति-दिन खराब होती जा रही थी और ब्रिटिश सरकार उन पर नये-नये कर थोप रही थी ।

निराला ने जहाँ जमींदारों आदि के विलासितापूर्ण जीवन का चित्रण किया है, वहीं दूसरी तरफ भारत की स्वतन्त्रता के लिए संघर्षरत क्रान्तिकारियों के जीवन का यथार्थ रूप भी प्रस्तुत किया है । क्रान्तिकारियों के प्रतिनिधि के रूप में उपन्यास के पात्र चन्दन सिंह को लिया जा सकता है । सरकार की दृष्टि में चन्दन बागी है, इसीलिए उसे गिरफ्तार कर लिया जाता है । चन्दन के समान ही अनेक क्रान्तिकारी युवकों को, जिनका स्वप्न भारत को परतंत्रता की बेड़ी से मुक्त कराना था, उनको भी विद्रोही करार देकर ब्रिटिश सरकार ने गिरफ्तार कर लिया था । निराला का कथन ब्रिटिश सरकार की इस नीति के सम्बन्ध में राजकुमार के द्वारा द्रष्टव्य है । चन्दन के गिरफ्तार होने पर उपन्यास का नायक राजकुमार अंग्रेजों की इस राजनीतिक चाल का संकेत तारा को देता है—“ऐसी ही बात होगी बहू जी ! और जो छिप कर बागी हो जाते हैं उन्हें बागी बनाने की जिम्मेदारी भी उन्हीं अधिकारियों पर है । उनके साथ इनका कुछ ऐसा बर्ताव होता है, ये जैसी नीची निगाह से उन्हें देखते हैं, वे बरदाश्त नहीं कर पाते, और उनकी मनुष्यता, जिस तरह भी सम्भव हुआ, इनके अधिकारों के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा कर बैठती है ।”¹ अपने अधिकारों को पाने के लिए चन्दन सिंह तथा दूसरे क्रान्तिकारी ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह करते हैं, ब्रिटिश सरकार अधिकारों के लिए लड़ायी लड़ने वालों को विद्रोही करार देती थी ।

क्रान्तिकारी युवक दूसरे देशों का साहित्य पढ़ कर भारत की स्वतंत्रता

के लिए भूमि तैयार कर रहे थे। चन्दन सिंह भी इसी प्रकार का साहित्य पढ़ कर युवकों का संगठन बनाकर भारत को मुक्त कराने में संलग्न है। राजकुमार चन्दन सिंह के गिरफ्तार होने पर उसकी अलमारियों से मनुष्य को मनुष्यता की शिक्षा देने वाली पुस्तकों को निकालता है, ताकि पुलिस के तलाशी लेने पर स्वतंत्रता के लिए क्रान्ति का आह्वान करने वाला साहित्य प्राप्त न हो सके--“फ्रांस, रूस, चीन, अमेरिका, भारत, इजिप्ट, इंग्लैण्ड सब देशों की सजीव स्वर में बोलती हुई, स्वतन्त्रता के अभिषेक से द्रुप्त-मुख, मनुष्य को मनुष्यता की शिक्षा देने वाली किताबें थीं।”¹

“अप्सरा” में निराला ने रामप्रसाद विस्मिल और अशफाक उल्लाह तथा अन्य साथियों को क्रान्तिकारी गतिविधियों का वर्णन भी चन्दन के माध्यम से किया है --“लखनऊ में सरकारी खजाने पर डाका पड़ा। शक पर मैं भी गिरफ्तार कर लिया गया।”² इस प्रकार तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

सन् 1920-1930 में संयुक्त प्रान्त तथा अन्य राज्यों के किसानों ने ब्रिटिश सरकार तथा जमींदारों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। विद्रोह करने का मूल कारण किसानों की बिगड़ती हुई आर्थिक स्थिति थी। ब्रिटिश शासन की स्थापना से पहले जमीन किसानों की होती थी तथा पैदावार से एक भाग ही कर के रूप में किसान दिया करते थे। लेकिन ब्रिटिश शासन की स्थापना होने पर जमीनों के मालिक ताल्लुकेदार तथा जमींदार हो गये, इसलिए ग्रामीण जनता पर विशेष रूप से किसानों के ऊपर जमींदारों का दबदबा कायम हो गया। जमींदारों का जमीन पर कब्जा होने के कारण किसानों की आर्थिक स्थिति दयनीय होती गयी और किसानों को लगान अदा करना भी मुश्किल हो गया। किसानों के द्वारा लगान न देने पर जमींदार तथा ब्रिटिश शासन उनके ऊपर अमानवीय अत्याचार करते थे और किसानों की खड़ी फसलें लूट ली जाती थीं। बिगड़ती

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण,

पृ० 72।

2. वही,

पृ० 115।

हुई आर्थिक स्थिति तथा जमींदारों-साहूकारों के अत्याचार ही वे प्रमुख तथ्य थे, जो कि जमींदारों आदि के विरुद्ध किसानों के विद्रोह का कारण बने।

निराला ने भी अपने जिले में जाकर किसानों को संगठित किया था और कांग्रेस दल में सक्रिय भाग लिया --गढ़ाकोला में भी आंदोलन जोरों पर है, छः सात सौ तक की जोत किसान लोग इस्तीफा देकर छोड़ चुके हैं। वह जमीन अभी तक नहीं उठी। किसान रोज इकट्ठे होकर झण्डा-गीत गाया करते हैं।... साल-भर बाद आंदोलन में प्रतिक्रिया हुई। जमींदारों ने दावा करना और रियाया को बिना किसी रियायत के दबाना शुरू किया, तब गाँव के नेता मेरे पास मदद के लिये आए। बोले--"गाँव में चल कर लिखो तुम रहोगे, तो मार न पड़ेगी, लोगों को हिम्मत रहेगी"।

"अप्सरा" उपन्यास में भी लेखक ने किसान आन्दोलन का और उनकी आर्थिक समस्याओं का गौण रूप में चित्रण किया है। चन्दन सिंह लखनऊ किसान आन्दोलन में सक्रिय भागेदारी निभाता है। कनक से चन्दन किसान आन्दोलन के सम्बन्ध में कहता है--"लखनऊ। किसानों का संगठन कर रहा था, पर बचकर, क्योंकि मुझे काम ज्यादा प्यारा है।"² डॉ० निर्मल जिन्दल का कथन भी द्रष्टव्य है--"चन्दन की भाँति उस समय अनेक युवकों ने किसानों के संगठन के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित करने का संकल्प कर लिया था।³ लेकिन हम देखते हैं "अप्सरा" उपन्यास में किसानों का विद्रोह उस रूप में नहीं है, जो कि उस समय के किसान आन्दोलन का वास्तविक रूप था, बल्कि केवल संकेत मात्र है। यह इसलिए है कि निराला ने इस समस्या को गौण रूप से उठाया है। इस संदर्भ में निराला का अपना वक्तव्य भी महत्वपूर्ण एवं द्रष्टव्य है : "इच्छा न रहने पर भी प्रासंगिक काव्य, दर्शन, समाज, राजनीति आदि

1. सूर्यप्रसाद दीक्षित : निराला की आत्मकथा, प्रथम संस्करण, पृ० 85 ।

2. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० 115 ।

3. निराला का गद्य साहित्य, प्रथम संस्करण, पृ० 61

की कुछ बातें चरित्रों के साथ व्यावहारिक जीवन की समस्या की तरह आ पड़ी हैं, वे अप्सरा के ही रूप-रूचि के अनुकूल हैं। उनसे पाठकों को शिक्षा के तौर पर कुछ मिलता हो, अच्छी बात है, न मिलता हो, रहनें दे, मैं अपनी तरफ से केवल "अप्सरा" उनकी भेंट कर रहा हूँ।"।

स्वदेशी का प्रचार :

सन् 1905-1906 में बंगाल में स्वदेशी आन्दोलन चला था। स्वदेशी आन्दोलन का मूल उद्देश्य था स्वदेशी वस्तुओं को देश में अधिक से अधिक संख्या में प्रयोग में लाया जाना, ताकि छोटे उद्योगों एवं ग्रामीण मजदूरों को अधिक से अधिक रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकें और उनकी दयनीय आर्थिक स्थिति में सुधार आये। विदेशी वस्तुओं के प्रयोग करने से छोटे-छोटे कारीगरों की आर्थिक अवस्था दिन प्रतिदिन जर्जर होती जा रही थी। अतः स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग से कारीगरों की हालत में भी सुधार आया तथा राष्ट्रीय आन्दोलन को भी अधिक बल मिला। यद्यपि प्रथम महायुद्ध के बाद पाश्चात्य औद्योगिक क्रान्ति के प्रभाव-स्वरूप भारतीय पूँजीपतियों ने भी कारखाने लगाने प्रारम्भ कर दिये थे। और दिन-प्रतिदिन मालामाल होते जा रहे थे। स्वदेशी निर्मित कपड़ा भी बाजार में आ गया था, लेकिन इससे गाँव के छोटे-छोटे कारीगरों की आर्थिक स्थिति में कोई अन्तर नहीं आया। उनकी स्थिति पहले जैसी ही बनी रही।

निराला ने "अप्सरा" के माध्यम से स्वदेशी आन्दोलन का प्रचार किया है। महात्मा गांधी के स्वदेशी आन्दोलन एवं चरखे का समर्थन नन्दन सिंह से कनक को मुँह दिखाई के रूप में चरखा देकर करते हैं--"नन्दन ने भेंट करने की बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ कीं, पर कुछ सूझा नहीं।...कोई नई चीज सूझ नहीं रही थी। तभी उनके सामने से एक आदमी चर्खा लेकर गुजरा। कलकत्ते में कहीं-कहीं जनेऊ के शुद्ध सूत निकालने के अभिप्राय से बनते और बिकते थे। स्वदेशी-आन्दोलन

1. अप्सरा : चतुर्थ संस्करण, पृ० वक्तव्य।

के समय कुछ प्रचार स्वदेशी वस्त्रों का भी हुआ था, तब से और भी बनने लगे थे। छांट कर एक अच्छा चर्खा उन्होंने खरीद लिया। इसके साथ उन्हें शान्तिपुर और बंगाल-कैमिकल की याद आयी। एक शान्तिपुरी कीमती साड़ी और बंगाल कैमिकल के तेल-फुल्ले सेण्ट-पाउडर आदि खरीद लिये।¹ निराला का नन्दन द्वारा स्वदेशी वस्तुएँ दिलाने का उद्देश्य स्वदेशी आन्दोलन के प्रचार एवं प्रसार के ही निमित्त है, ताकि छोटे-छोटे स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा मिले और गरीब मजदूर कारीगरों की आर्थिक स्थिति में सुधार आए।

अंग्रेजों एवं जमींदारों का चरित्र :

निराला ने देश की दुर्व्यवस्था के लिए अंग्रेजों और उनके सहयोगियों जमींदारों, ताल्लुकदारों, साहूकारों आदि को जनता के शोषण एवं उस पर अत्याचार के लिए उत्तरदायी ठहराते है। "अप्सरा" में उन्होंने इनके चरित्र को उजागर कर दिया है। जमींदारों, गोरों के द्वारा जनता पर हो रहे शोषण अत्याचार षड्यन्त्र और कामुकतापूर्ण कृत्यों पर प्रकाश डाला है। विजयपुर के कुँवर साहब और मिस्टर हैमिल्टन की काम-लोलुप दृष्टियों एवं उनके कृत्यों द्वारा तत्कालीन जमींदारों और गोरों का चरित्र सामने आ जाता है। डा कुँवर पाल सिंह का भी कथन स्पष्ट है—"निराला जी देश की सारी दुर्व्यवस्था के लिए अंग्रेजों और उनके सहयोगियों को उत्तरदायी ठहराते है। "अप्सरा" में उन्होंने अंग्रेज शासकों के विरुद्ध तीव्र घृणा व्यक्त की है। जमींदारों के शोषण अत्याचार षड्यन्त्र और कामुकता पूर्ण कृतियों, किसानों के उत्पीड़न तथा कष्टों से उनके समस्त उपन्यास भरे पड़े हैं। "अलका" में लेखक ने विस्तार से जमींदारों की नीचता उनकी शोष्क वृत्ति और अंग्रेजों की मिली भगत का उद्घाटन किया है।"²

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० 163।

2. हिन्दी उपन्यास : सामाजिक चेतना, प्रथम संस्करण पृ० 135।

धार्मिक आडम्बरों एवं सामाजिक कुरीतियों का विरोध :

“अप्सरा” उपन्यास में निराला ने धार्मिक आडम्बरों तथा हिन्दू धर्म की रूढ़िवादी परम्पराओं का विरोध किया है। तारा के द्वारा कनक से यह कहना कि—“मेरी अम्मा, छोटे साहब की माँ, शायद वहाँ तुमसे कुछ नफरत करें। ... तुम्हारा वृत्तान्त सुनकर वह जिस स्वभाव की हैं, तुम्हें छूने में तथा अच्छी तरह बात करने में संकोच करेगी।”¹ इस बात का प्रमाण है कि निराला हिन्दू समाज के उन धार्मिक आडम्बरों का विरोध कर रहे हैं, जो मनुष्य को छूने में पाप समझते हैं। अगर किसी मनुष्य को छूना पाप है, तो वह धर्म नहीं है। इसी लिए कनक के माध्यम से हिन्दू धर्म पर प्रहार करते हैं—“कनक को हिन्दू समाज से घृणा हुई, यह सोच कर कि क्या वह मनुष्य नहीं हैं। अब तक मनुष्य कहलाने वाले समाज के बड़े-बड़े अनेक लोगों के जैसे आचरण उसने देखे हैं, क्या वह उनसे किसी प्रकार भी पतित है।”²

निराला की अवधारणा थी कि लोग धर्म के नाम पर अनुचित कार्य करते हैं जिसकी आज्ञा धर्म नहीं देता और इस रूप में धर्म की व्याख्या करते हैं। कनक धर्म के सम्बन्ध में तारा से पूछती है—“दीदी, क्या किसी जाति का आदमी तरक्की करके दूसरी जात में नहीं जा सकता।”

“बहन, हिन्दुओं में यह रिवाज नहीं रहा। यों पौराणिक काल में ऋषि विश्वामित्र का उदाहरण हमारे समाने अवश्य है। ... आदमी-आदमी है, और ऋषि शास्त्रों के अनुसार सब लोग एक ही परमात्मा से हुए हैं।”³ अर्थात् जब सबका एक परमात्मा ने ही पैदा किया है फिर धर्म का सहारा लेकर जो मनुष्य पर अत्याचार करते हैं वह धार्मिक नहीं है, बल्कि धर्म का

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० 122 ।

2. वही, पृ० 129 ।

3. वही, पृ० 129 ।

आवरण ओढ़े रखते है। निराला धर्म को इस रूढ़िवादी परम्परा का विरोध करके राजकुमार तारा, चन्दन तथा नन्दन के माध्यम से कनक को समाज में विशेष स्थान दिला कर एक क्रान्तिकारी परिवर्तन को नई दिशा देते है।

कनक के गाँव में स्वतन्त्र घूमने से गाँव वालों को चिढ़ होती है और वह अभी तक कुआरी है, सब उसे आश्चर्य की दृष्टि से देखते हैं मानों कनक का शिक्षित होना जुर्म है—“इसी तरह तो औरत बिगड़ जाती है। जुआँटा है, ब्याह नहीं हुआ और अकेली घूमती है।”¹ लेकिन तारा कनक की इन गाँव वालों द्वारा खिल्ली उड़ाने व दकियानूसी विचारों के सम्बन्ध में कहती है—“हम लोगों में पुराने ख्यालात के जो लोग है, उन्हें तुमसे कुछ दुराव रह सकता है, क्योंकि यह लोग उन्हीं ख्यालात के भीतर पड़े हैं। उनसे तुम्हें कुछ दुःख होगा, पर बहन मनुष्य के अज्ञान की मार मनुष्य ही तो सहते हैं। फिर स्त्री तो अपनी क्षमा और सहिष्णुता के कारण ही पुरुष से बड़ी है। उसके यही गुण तो पुरुष की जलन को शीतल करते हैं।”² यह लिख कर निराला ने ग्रामीण परिवेश का यथार्थ चित्रण किया है और उनका ग्रामीणों के प्रति सहानुभूति पूर्ण व्यवहार रहा है, क्योंकि अभी तक ग्रामीण समाज में जागृति नहीं आयी थी।

इन समस्याओं के अतिरिक्त निराला नारियों में आयी जागृति का भी संकेत करते हैं। नारियाँ अब उच्च शिक्षा तथा दूसरी कलाओं में रुचि लेने लगी थीं। राजनीतिक, सामाजिक कार्यों में भी पुरुषों के कंधों से कंधा मिलाकर भाग ले रहीं थीं। जनता के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आ रहा था। इसी परिवर्तन के परिणाम स्वरूप चन्दन की भाभी तारा शहर में उच्च शिक्षा प्राप्त करती है।

इस प्रकार अप्सरा की मूल समस्या के अतिरिक्त प्रासंगिक रूप से उठाई या प्रस्तुत की गई समस्याएँ भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० 136।

2. वही पृ० 129।

तृतीय अध्याय

तृतीय अध्याय

=====

"अप्सरा" के पात्रों की मनोभूमि एवं व्यवहार

प्रस्तुत अध्याय में हम पात्रों के चरित्र-चित्रण और उनकी मनोभूमि पर अपनी इस दृष्टि से ध्यान केन्द्रित करेंगे कि वे उपन्यास के कथ्य में, उसकी समस्याओं में, उसकी कथावस्तु के विकास में अपने चरित्र और व्यक्तित्व और क्रिया-कलापों के माध्यम से क्या और कैसा योगदान करेंगे अथवा किया है। इस प्रकार हम उपन्यास की सामाजिक चेतना के विकास में प्रत्यक्षतः-अप्रत्यक्षतः उनकी भूमिका को मूल्यांकित और विश्लेषित करेंगे। वस्तुतः यही हमारा यहाँ इस विवेच्य अध्याय में मूल नक्ष्य है।

अब हम इसी दृष्टि से उपन्यास को प्रमुख पात्र यानि नायिका "कनक" एवं अन्य पात्रों पर विचार करेंगे।

कनक :

उपन्यास की नायिका कनक वेश्यापुत्री है। वेश्यापुत्री होते हुए भी हम देखते हैं कि उसमें वेश्याओं के लक्षणा और व्यवहार पद्धति नहीं है, बल्कि वह एक सभ्य और सुशिक्षित नारी है। वह नृत्य-गान को केवल वेश्याओं के जीविकोपार्जन हेतु अर्थ को कमाने के रूप में या अभिजात वर्ग के मनोरंजन के रूप में नहीं लेती है। वस्तुतः वह नृत्य-गान, संगीत को कला के रूप में देखती है और उसी रूप में उसकी साधना करती है — "मैं कला को कला की दृष्टि से देखती हूँ। क्या उससे अर्थ-प्राप्ति करना उसके महत्त्व को घटा देना नहीं?"¹ इसी बिन्दु पर उसका चरित्र विकसित होता है।

कनक एक वेश्यापुत्री अवश्य है लेकिन उसके अन्दर सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन व्यतीत करने की प्रबल आकांक्षा है। इसीलिए वह राजकुमार की वीरता को देखकर उस पर मुग्ध हो जाती है और सौभाग्य से कोहनूर थिएटर में खेले जाने वाले नाटक "शकुन्तला" की नायिका होती है। राजकुमार नाटक में दुष्यन्त की भूमिका करता है। कनक का नाटक में अभिनय करते हुए शकुन्तला के वेष में दुष्यन्त {राजकुमार} से विवाह होता है। कनक नाटक में

अभीनीत परिणाय को सच मान लेती है, जिसके फलस्वरूप वह राजकुमार के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हो जाती है। नाटक समाप्त होने के पश्चात् राजकुमार को गिरफ्तार कर लिया जाता है। राजकुमार की गिरफ्तारी से कनक का मन व्यथित हो जाता है और वह वेश्यापुत्री होते हुए भी अपनी माँ सर्वेश्वरी से कुंवर साहब की महफिल में गाने से इन्कार कर देती है—“अम्मा मैं रईसों की महफिल में गाना नहीं गाऊँगी।”¹

कनक का नाटक में अभिनय करते हुए राजकुमार के साथ विवाह होने से उसकी मानसिकता में परिवर्तन होता है और वह स्वयं की वेश्यावृत्ति से मुक्ति समझती है—“तुनो, अम्मा ! तुम्हारी कनक अब तुम्हारी नहीं रही उसके हार में ईश्वर ने एक नीलम जड़ दिया है।”² कनक अपनी कूटनीति के द्वारा राजकुमार को छुड़ाकर अपने साथ ले आती है और वह प्रेमभाव से राजकुमार की सेवा करती है। कनक की मानसिकता एवं व्यवहार से एक हिन्दू गृहिणी की भाँति ही पतिव्रता के लक्षणा प्रकट होते हैं—“वह उसी तरह पंखा झलती रही। हाथ थोड़ी ही देर में टुखे लगे, कलाइयाँ भर आयीं, पर वह झलती रही। उत्तर में राजकुमार ने कुछ भी न कहा। उसे नींद लग रही थी। धीरे-धीरे सो गया।”³ कनक के इस आचरण एवं व्यवहार से कहीं भी यह प्रकट नहीं होता कि वह वेश्यापुत्री है। इस घटना से उसके मन में उच्च भावनाएँ उत्पन्न होती हैं। वह वेश्यावृत्ति से मुक्ति पाकर सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन व्यतीत करना चाहती है, लेकिन एक आकस्मिक घटना होती है। राजकुमार अपने मित्र चन्दन के गिरफ्तार होने का समाचार पढ़कर वहाँ से चला जाता है। कनक उसे रोकती है और अपने हाथ के बनाये हुए भोजन को खाने का अनुरोध करती है, लेकिन राजकुमार कनक के अनुरोध को भी ठुकराकर चला जाता है।

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० 23 ।

2. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० 24 ।

3. वही पृ० 48 ।

कनक राजकुमार को जाने नहीं देना चाहती । वह उसे बाहु-पाशा में बंधि रखना चाहती है । डा० राम विलास शर्मा का कथन दृष्टव्य है—“लेकिन राजकुमार पथिक से भी अधिक कठोर-हृदय होकर उसका हाथ झटक देता है और चूड़ियों के टूटने से कनक की कोमल कलाई से रक्त की बूंदें टपकने लगती हैं ।”¹ इस घटना से कनक स्वयं को अपमानित महसूस करती है और उसके मन में यह शंका उत्पन्न होती है कि क्योंकि वह वेश्यापुत्री है, इसीलिए राजकुमार उसके साथ ऐसा व्यवहार कर रहा है । राजकुमार को तारा के साथ जाता हुआ देखकर कनक के मन में भ्रम हो जाता है और वह राजकुमार के इस व्यवहार से दुःखी होकर विक्षिप्तावस्था में विजयपुर के कुंवर साहब के राजतिलक में नर्तकी के रूप में अपनी माता सर्वेश्वरी के साथ जाती है ।

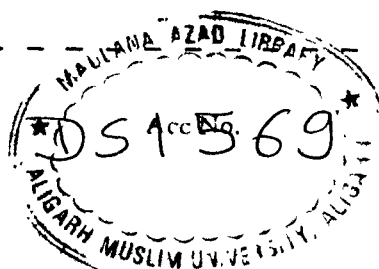
विजयपुर आने पर कनक की भेंट फिर राजकुमार से होती है, लेकिन राजकुमार के द्वारा यह कहना कि “बहूजी ने तुम्हें बुलाया है, इसीलिए आया था ।”² कनक को राजकुमार से बड़ी घृणा होती है और उसके मन में जलन पैदा हो जाती है । इसी कारण वह नृत्य-गान की महफिल में राजकुमार को देखकर कुंवर साहब को राजकुमार को पकड़ने के लिए कहती है । पर राजकुमार गिरफ्तार होने से बच जाता है और उसका मित्र चन्दन गिरफ्तार कर लिया जाता है ।

कुंवर साहब तथा उनके मित्र हैमिल्टन व अन्य तआल्लुकेदारों का अपने प्रति व्यवहार देखकर कनक के मन में उच्च वर्ग के नैतिक पतन का बोध होता है—
“मुझमें और ^{इतने} कितना फर्क है । ये मालिक हैं, और मैं इनके इशारे पर नाचने वाली ।... चरित्र में ये किसी भी तवायफ से श्रेष्ठ नहीं ।... नीचता से ओत-प्रोत ऐसी वृत्तियाँ लिए हुए भी ये समाज के प्रतिष्ठित, सम्मान्य, विद्वान और बुद्धिमान मनुष्य हैं ।”³ अभिजात वर्ग की इस विलासिता को देखकर कनक

1. निरला, तृतीय संस्करण पृ० 59 ।

2. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण पृ० 96 ।

3. वही, पृ० 111 ।



अपने से तुलना करती है और पाती है कि वह वेश्या होते हुए भी चरित्र में इनसे श्रेष्ठ है ।

चन्दन कनक को कुँवर साहब और उनके मित्रों के चंगुल से बचा कर अपनी भाभी तारा के पास ले जाता है और यह प्रयास करता है कि राजकुमार उससे विवाह कर ले । लेकिन राजकुमार सामाजिक कार्य करने की प्रतिज्ञा के कारण विवाह करने से इनकार कर देता है । कनक अपने हृदय में राजकुमार के लिए प्रेम की ज्योति चाहती है । वह राजकुमार को सामाजिक कार्यों से विमुख नहीं करना चाहती है, इसीलिए कहती है—मैंने विवाह के लिए कब, किससे प्रार्थना की ।¹

कनक क्योंकि वेश्यापुत्री है इसीलिए उसे गाँव के रीति रिवाजों का ज्ञान नहीं है और वह ग्रामीण समाज के जीवन मूल्यों से भी परिचित नहीं है । ग्रामीण सामाजिक रीति रिवाजों से अनभिज्ञ होने के कारण ही कनक को तारा की माँ के व्यवहार एवं अन्य ग्रामीण स्त्रियों के व्यवहार से बड़ा दुःख होता है और वह स्वयं को उनके आगे सुसंस्कृत समझती है—“कनक बैठी सोच रही थी, और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वे सब स्त्रियाँ, जो अपने घर में भी इतनी असभ्यता से पेशा आयीं किस अंश में उससे बड़ी थी ।”²

कनक अपने प्रति राजकुमार के मन में आकर्षण नहीं देखकर दुःखी हो जाती है । वह सोचती है कि उससे ऐसी कौन से त्रुटि हुई है, जिसके कारण राजकुमार धुब्ध हो गया है । राजकुमार के इसी व्यवहार के कारण कनक की जीने की आकांक्षा, उत्साह सब खत्म हो जाता है—“कनक के अन्दर अब किसी प्रकार का उत्साह नहीं रह गया था । वह जो कुछ कहती थी, सिर्फ कहना था, इसलिए । उसके स्वर में किसी प्रकार का अभिप्राय नहीं था, कोई आकांक्षा नहीं थी । राजकुमार के पिछले भावों से उसके मर्मस्थल पर गहरी चोट लग चुकी थी ।”³

1. अप्सरा चतुर्थ संस्करण, पृ० 122 ।

2. वही पृ० 135 ।

3. वही पृ० 142 ।

इस स्थिति में कनक के मन में एक द्वन्द्व चल रहा था । वह यह सब जानते हुए भी कि राजकुमार के व्यवहार से अब कहीं भी यह प्रकट नहीं हो रहा है कि वह अब भी उससे प्रेम करता है, किन्तु फिर भी कनक राजकुमार के मुख को देखकर उसे पाने के रोमांच से भर जाती । कनक के मन में उमंगों की लहरें उठ रही थीं—“कभी—कभी राजकुमार की मुख चेष्टा से हृदय की करुणाश्रित सहानुभूति उसके स्त्रीत्व की पुष्टि करती हुई राजकुमार की तरह उमड़ पड़ती थी, तब राजकुमार की धुब्ध चित्त-वृत्तियों पर एक प्रकार का सुख झलक जाया करता, कुछ सान्त्वना मिलती थी । नवीन बल प्राप्त कर वह अपने समर के लिए फिर तैयार होता था । कनक रह-रहकर, खुद चलकर, अपनी निर्दोषिता जाहिर कर एक बार फिर अन्तिम बार प्रार्थना करने का निश्चय कर रही थी ।”¹

कनक के मन की हार्दिक इच्छा चन्दन एवं तारा के प्रयासों द्वारा उसका राजकुमार से विवाह होने पर पूर्ण हो जाती है और वह सुखी पारिवारिक जीवन व्यतीत करती है । अतः हम कह सकते हैं कि निराला ने कनक के माध्यम से अपनी सौन्दर्य भावना एवं एकनिष्ठ प्रेम का प्रसार किया है । कनक एकनिष्ठ प्रेम एवं कला के लिए अपना जीवन समर्पित कर देती है । हम देखते हैं कि कनक का न केवल बाह्य व्यक्तित्व अर्थात् उसका सौन्दर्य उसके गुण एवं उसका सुशिक्षित होना ही अत्यन्त प्रभावशाली है, बल्कि उसका आन्तरिक व्यक्तित्व भी प्रभावशाली है । वह सहनशील है । अपने प्रेम के लिए मौन अभिव्यक्ति और नारी जाति के उच्च गुणों का होना आदि उसके आन्तरिक व्यक्तित्व की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है । अतः कनक निराला की आदर्श कल्पना की श्रेष्ठ प्रतिमा है । वह कहानी की मूल पात्र है ।

इस प्रकार वह कथा के मूल उद्देश्य की सिद्धि करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।

तारा :

तारा चन्दन की भाभी है, वह प्रगतिशील विचारों की है। यद्यपि तारा गाँव की अशिक्षित नारी थी, परन्तु वह अपने पति नन्दन सिंह एवं देवर चन्दन के प्रयास से उच्च शिक्षा प्राप्त करके सामाजिक कार्यों में भाग लेने लगती है। वह एक साहसी नारी है, जो कठिनाई की घड़ी में साहस से काम लेती है और प्रत्येक कठिनाई पर विजय पाती है। तारा का प्रवेश उपन्यास में प्रथम बार तब होता है, जबकि राजकुमार कनक के यहाँ अपने मित्र चन्दन के गिरफ्तार होने का समाचार पढ़कर तारा के घर जाता है।

जैसा कि हम उल्लेख कर चुके हैं, तारा व्यवहार में प्रगतिशील विचारों की है। वह धार्मिक कट्टरता, सामाजिक रूढ़ियों तथा अन्धविश्वासों के विरुद्ध प्रगतिशील दृष्टिकोण रखती है। तारा प्रगतिशील होते हुए भी नास्तिक नहीं है। वह परम शक्ति में आस्था रखती है। उसके आस्तिक होने का ज्ञान हमें प्रारम्भ में ही मिल जाता है, जब वह पुलिस रेड के कारण राजकुमार के साथ अपने मायके जाती है, तो उसके व्यवहार से हिन्दू गृहिणी के चिह्न प्रकट होते हैं—“मन्दिर में जा, भगवान विश्वनाथ को भूमिष्ठ हो प्रणाम किया।”¹

तारा राजकुमार को महावीर और भीष्म के समान चरित्रवान समझती है, क्योंकि उसके पति नन्दन सिंह भी राजकुमार का बहुत आदर करते हैं। लेकिन गाँव में पहुँचकर जब तारा राजकुमार के कपड़े व अन्य सामान ठीक करती है, तो राजकुमार के कोट की बाँह पर सिन्दूर का धब्बा देखकर उसे राजकुमार के चरित्र पर सन्देह होता है—“युवती ने सन्देह को प्रमाण सत्य करने के निश्चय से राजकुमार को बुलाया। एकान्त था। युवती के हाथ में कोट देखते ही राजकुमार की दृष्टि में अपराध की छाप पड़ गयी।”¹ कनक के सम्बन्ध में राजकुमार से सब जान कर तारा के सन्देह की पुष्टि हो जाती है।

इस घटना से तारा के हृदय में राजकुमार के चरित्र के विश्वास को ठेस लगती है और वह इस सबके लिए राजकुमार को दोषी ठहराती है—“आह ! सब तुम्हारा कुसूर है । तुम इतने पर भी उस पर कलंक की कल्पना करते हो ।... जिसने तुम्हारी सबसे नजदीक की बनने के लिए इतना किया, तुम्हें उसे इसी तरह का पुरस्कार देना था । प्रतिज्ञा तो तुमने पहले की थी, कनक क्या तुम्हें पीछे नहीं मिली ।... लोग पहले किसी सुन्दर वस्तु को उत्सुक आँखों से देखते हैं, पर जब किसी दूसरे स्वार्थ की याद आती है, आँखें फेरकर चल देते हैं । क्या तुमने उसके साथ ऐसा ही नहीं किया ।”

कनक की कहानी जानकर तारा के हृदय में उसके प्रति सहानुभूति जाग्रत हो जाती है । क्योंकि कनक का अपमान नारी जाति का अपमान है और कनक के प्रति राजकुमार का व्यवहार उसे अन्याय लगता है । वह राजकुमार को कनक को लाने के लिए भेजती है । चन्दन के जेल से आने पर उसे भी वह राजकुमार और कनक को कुँवर साहब के यहाँ से सकुशल लाने के लिए भेज देती है ।

वास्तव में तारा एक स्नेहमयी नारी है और वह कनक को बहुत स्नेह करती है । वह उसे अपनी छोटी बहन की भाँति प्यार करती है । तारा को कनक के वेश्यापुत्री होने से अन्य लोगों की भाँति घृणा नहीं है, बल्कि वह अपने व्यवहार से भी कनक को यह अहसास नहीं होने देती है कि वह उसे वेश्यापुत्री समझती है । कनक तारा के अपने प्रति इस व्यवहार एवं आत्मीयता को देखकर, उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होती है ।

यद्यपि तारा प्रगतिशील एवं खुले विचारों की नारी है, लेकिन वह ग्रामीण नारियों की रूढ़िगुस्तता एवं पुराने ख्यालातों को देखकर उनके प्रति घृणा का भाव कनक के समान प्रकट नहीं करती है । इसके विपरीत वह अन्य विश्वासों एवं रूढ़िवादी ग्रामीण नारियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण

व्यवहार करती है । क्योंकि वह जानती है कि इन लोगों के संस्कार ही ऐसे हैं, अतः जब तक ग्रामों में जागृति नहीं फैलेगी, तब तक इनके विचारों में परिवर्तन नहीं होगा । तारा कनक से ग्रामीण स्त्रियों के प्रति अपने विचार प्रकट करती है--“हम लोगों में पुराने खयालात के जो लोग हैं, उन्हें तुमसे कुछ दुराव रह सकता है, क्योंकि ये लोग उन्हीं खयालात के भीतर पले हैं । उनसे तुम्हें कुछ दुःख होगा, पर बहन, मनुष्य के अज्ञान की मार मनुष्य ही तो सहते हैं ।”¹

तारा अपने साहस के बल पर कनक को विजयपुर के कुँवर साहब के चंगुल से बचाकर कलकत्ता ले आती है । वापिस कलकत्ता आने पर हम तारा के व्यक्तित्व में दो रूप देखते हैं । जहाँ एक तरफ वह कनक को वेश्यापुत्री होते हुए भी उसके प्रति स्नेह एवं प्रगतिशील दृष्टिकोण रखती है, वहाँ दूसरी तरफ कनक की माता सर्वेश्वरी के प्रति उसका व्यवहार घृणात्मक है --“तारा को बड़ी छुटन मालूम दे रही थी । सर्वेश्वरी अत्यन्त सुन्दर होने पर भी तारा को बड़ी कुत्सित देख पड़ी । उसके मुख की रेखाओं के स्मरणा-मात्र से तारा को भय होता था । अपने चरित्र-बल से सर्वेश्वरी के विकृत परमाणुओं को रोकती हुई जैसे मुहूर्त-मात्र में थककर उब गयी हो ।”² अतः हम देखते हैं कि तारा के हृदय में सर्वेश्वरी के प्रति सहानुभूति न होना उसके पूर्व संस्कारों का ही परिणाम है ।

तारा कनक का विवाह राजकुमार से कराकर और कनक को वेश्या पुत्री होते हुए भी हिन्दू संस्कारों से दीक्षित करती है--“अपनी माँ से दूसरी जगह रहने के लिए कहो । मकान में यज्ञ कराओ । ...मकान में एक छोटा सा शिव-मन्दिर बनवा लो । जब तक मन्दिर नहीं बनता, तब तक किसी कमरे में, अलग, जहाँ लोगों की आमदरफ्त ज्यादा न हो, पूजा-स्थान कर लो ।”³ इस

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० 129 ।

2. वही, पृ० 151 ।

3. वही, पृ० 162 ।

प्रकार तारा के व्यक्तित्व के दो रूप हैं—एक रूप प्रगतिशील नारी का जो सामाजिक आडम्बरों के विरुद्ध विद्रोह करके समाज में नये स्वस्थ मूल्य स्थापित करती है तथा दूसरा रूप एक आदर्श हिन्दू गृहिणी का है। अतः हम देखते हैं कि तारा की उपन्यास के नारी पात्रों में सबसे प्रभावशाली भूमिका है और उसे निराला ने नारी पात्रों में कनक के उपरान्त सबसे अधिक महत्त्व दिया है, क्योंकि तारा एक शिक्षित प्रगतिशील और उच्च विचारों की स्त्री है, इसीलिए वह स्त्री जाति के दुःखों से परिचित है। वह ममता की मूर्ति है। उसके सहयोग के बिना कनक और राजकुमार का मिलन असम्भव था। तारा के इस स्वर्णिम व्यक्तित्व के माध्यम से विवेचन उपन्यास की कथावस्तु में हमें एक निरन्तरता दृष्टिगोचर होती है। जिसका उत्तरोत्तर विकास उपन्यास को सफलता के शिखर पर पहुँचा देता है।

तारा कनक को हिन्दू धर्म में दीक्षित करके और कनक को वेश्यापुत्री होते हुए भी गले से लगाकर, वह समाज में एक युगान्तकारी परिवर्तन करके सामाजिक चेतना का निर्माण करती है। अतः हम कह सकते हैं कि तारा का व्यक्तित्व युगीन परिस्थितियों से सम्बद्ध होते हुए भी, समकालीन बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप, अपने प्रगतिशील व्यक्तित्व के अनुरूप समाज को एक नई दिशा देती है और वैज्ञानिक सामाजिक चेतना के निर्माण और विकास में अपना योग देती है।

राजकुमार:

राजकुमार एक सभ्य और शिक्षित युवक है। वह कलकत्ता के एक कॉलेज में हिन्दी का प्रोफेसर है। राजकुमार हिन्दी साहित्य एवं भाषा को समृद्ध करने एवं उसका प्रचार, प्रसार करने का संकल्प लिए हुए है। हिन्दी के प्रचार के संकल्प के कारण ही वह भोग विलास से दूर रहने का दृढ़ निर्णय लिए हुए है। वह हिन्दी नाटक लिखकर और उनमें शौकिया पार्ट करके हिन्दी भाषा की सेवा कर रहा है—“राजकुमार भी कम्पनी में नौकर नहीं था। वह शौकिया बड़ी-बड़ी कम्पनियों में उतरकर प्रधान पार्ट किया करता था। इसका कारण खुद मित्रों से बयान किया करता था। कहा करता था, हिन्दी के स्टेज पर लोग ठीक-ठाक हिन्दी उच्चारण नहीं करते, उर्दू के उच्चारण की

नकल करते हैं, इससे हिन्दी का उच्चारण बिगड़ जाता है । हिन्दी के उच्चारण में जीभ की स्वतन्त्र गति होती है । यह हिन्दी ही की शिक्षा के द्वारा दुरुस्त होगी ।”¹

राजकुमार विद्वान और आदर्शवादी होने के साथ-साथ ही वीर पुरुष भी है । इडेन-गार्डेन में अंग्रेज पुलिस अफसर भारतीय नारी कनक के साथ कुकृत्य करना चाहता है, तो राजकुमार कनक की सहायता करता है । वह हैमिल्टन का हाथ पकड़कर एक पटकनी देता है और उसकी छाती पर सवार हो जाता है । छाती पर सवार होकर हैमिल्टन में कई रद्दे जमाता है । राजकुमार की वीरता को देखकर, कनक उसकी ओर आकृष्ट होने लगी । राजकुमार भी कनक की सुन्दरता को देखकर उस पर मुग्ध हो जाता है ।

राजकुमार की कनक से दूसरी भेंट शकुन्तला नाटक में अभिनय करते हुए होती है । सौभाग्य से शकुन्तला में अभिनय करते हुए कनक राजकुमार के साथ परिणय में बँध जाती है । नाटक समाप्त होने के पश्चात् हैमिल्टन अपने अपमान का बदला लेने के लिए राजकुमार को गिरफ्तार करा देता है । राजकुमार की गिरफ्तारी से कनक को बड़ा दुःख होता है, क्योंकि वह अभिनय में परिणय को सच मान लेती है और राजकुमार को वह अपना जीवन-साथी समझती है । अतः कनक अपने बुद्धि-कौशल का परिचय देते हुए, राजकुमार को मुक्त कराती है । कनक की इस कूटनीति, सौन्दर्य, स्नेह और सेवा के भाव से राजकुमार प्रभावित होकर उसे अपनी प्राणेश्वरी बनाने का वचन देता है । वही राजकुमार जिसने भोग-विलास से दूर रहने का दृढ़ निश्चय किशोर था । कनक के सौन्दर्य को देखकर हिन्दी भाषा की सेवा और अपना सब आदर्शवाद व प्रतिज्ञा भूल जाता है--“राजकुमार चित्त को स्थिर कर विचार कर रहा था, यह सब... क्या है । क्या इस ज्योति से मिल जाऊँ... । न, जल जाऊँ, तो । इसे निराश कर दूँ... । बुझा दूँ । न, मैं इतना कर्कश, तीव्र, निर्दय न हूँ

न हूँगा, फिर ! आह ! यह चित्र कितना सुन्दर है, कितना स्नेहमय है ! ... इसे प्यार करें ! न, मुझे अधिकार क्या ! मैं तो प्रतिश्रुत हूँ कि इस जीवन में भोग-विलास को स्पर्श भी न करें, प्रतिज्ञा...। की हुई प्रतिज्ञा से बल जाना महापाप है । और यह ... स्नेह का निरादर !¹ राजकुमार के मस्तिष्क में कनक एवं अपने आदर्श को लेकर द्वंद्व होता है । इस द्वंद्व में उसके भोग-विलासी व्यक्तित्व की जीत होती है और उसके आदर्श, हिन्दी भाषा एवं देश की सेवा वाला व्यक्तित्व अस्थायी रूप से खत्म हो जाता है । अब राजकुमार की प्रतिज्ञा, भाषा, कविता कनक है--"मेरी सुबह की पलकों पर उषा की किरण । मेरे साहित्यिक जीवन-संग्राम की विजय ।"² इस भोग-विलास में राजकुमार ऐसा लिप्त होता है, उसे देश का, भाषा का किसी का भी ज्ञान नहीं रहता । अचानक उसकी सोयी हुई ग्रथियाँ तब जागती हैं, जब वह अपने मित्र चन्दन के गिरफ्तार होने का समाचार पढ़ता है--"राजकुमार धुब्ध हो उठा । अपनी स्थिति से उसे घृणा हो गयी । एक तरफ उसका वह मित्र था, और दूसरी तरफ मामा के परिमल वसन्त में कनक के साथ वह ! छिः-छिः, वह और चन्दन ...। ... उसकी प्रकृति उसका तिरस्कार करने लगी, ... राजकुमार ज़रत हो उठा । हृदय ने कहा, गलती की । निश्चय ने सलाह दी, प्रायश्चित्त करो । बन्दी की हैंसती हुई आँखों ने कहा, साहित्य की सेवा करते हो न मित्र ! मेरी माँ थी जन्म भूमि, और तुम्हारी माँ भाषा । देखो, आज माता ने एकान्त में मुझे अपनी गोद में छिपा रक्खा है, तुम अपनी माता के स्नेह की गोद में प्रसन्न हो न ।"³ राजकुमार इधर कनक को छोड़कर चन्दन की भाभी तारा को लेकर विजयपुर चला जाता है । उसे कनक और उसके पेशे से घृणा हो जाती है ।

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० 50 ।

2. वही, पृ० 61 ।

3. वही, पृ० 65 ।

राजकुमार के हृदय में कनक के लिए स्थान है, किन्तु वह अपने कर्तव्य से विमुख हो जाने के कारण उससे घृणा करता है। अन्त में जीत उसके हृदय की ही होती है, वह न चाहते हुए भी कुंवर साहब के राजतिलक में नृत्य-गान को आयी कनक की झलक देखने चला जाता है--"अनेक हर्ष और विवाद की तस्वीरों को देखता हुआ, आशा और नैराश्य के जाल में उलझा, राजकुमार विजयपुर की तरफ जा रहा था। घर लौटने की इच्छा प्रबल बाधा की तरह मार्ग रोककर खड़ी हो जाती, है...पर बाधा के रहने पर भी अज्ञात पदक्षेप उधर ही हो रहे थे। ज्यादा जोश में आने पर राजकुमार भूल जाता था, कुछ समझ नहीं सकता था कि कनक से आखिर वह क्या कहेगा। बेहोशी के वक्त, कल्पना के लोक में, तमाम सृष्टि उसके अनुकूल हो जाती--कनक उसकी, छायालोक उसके, बाग-इमारत, आकाश-पृथ्वी- सब उसके। उसके एक-एक इंगित पर कनक उठती-बैठती, जैसे कभी तकरार हुई ही नहीं, कभी हुई थी, इसकी भी याद नहीं। राजकुमार इसी द्विधा में धीरे-धीरे चला जा रहा था।"¹ अतः हम देखते हैं कि राजकुमार का चरित्र एक कुंठित व्यक्ति का चरित्र है। जो द्विविधा में फँसा हुआ है। एक तरफ वह साहित्य सेवा की प्रतिज्ञा लिए हुए है। दूसरी तरफ वह कनक के प्रति झुकाव रखता है और न कनक को ही खोना चाहता है, न अपनी साहित्य-सेवा की प्रतिज्ञा से पीछे हटना चाहता है। इन्हीं कारणों से वह कोई क्रान्तिकारी कदम नहीं उठाता है। "राजकुमार का चरित्र मनो-वैज्ञानिक दृष्टि से कुंठित व्यक्ति का चरित्र है। वह अन्तर्मन से कनक से प्रेम करते हुए भी साहित्य-सेवा की अपनी पूर्व प्रतिज्ञा का स्मरण करके सदैव द्विविधा में फँसा रहता है। इस कारण वह स्वभावतः कोई सक्रिय कदम नहीं उठा पाता।"²

तारा के प्रयास से राजकुमार के मन में कनक के प्रति आकांक्षारें फिर प्रबल होती हैं और उसके हृदय में प्रेम के बीज फिर दुबारा अंकुरित होते हैं।

1. अप्सरा, चतुर्थ, पृ० 90 ।

2. निर्मल जिन्दल : निराला का गद्य साहित्य, प्रथम संस्करण, पृ० 58 ।

लेकिन वह व्यवहार में यही प्रकट करता है, कि अब भोग-विलास में नहीं पड़ेगा और साहित्य-सेवा की जो प्रतिज्ञा लिए हुए है, उसको पूर्ण करेगा। पर उसके मन से कनक निकल नहीं पाती है, और ट्रेन में अंग्रेज पुलिस अफसर हैमिल्टन से वार्तालाप करते हुए सबके सम्मुख कनक को अपनी पत्नी घोषित कर देता है। राजकुमार सामाजिक नियमों के विरुद्ध विद्रोह नहीं कर सकता है, यह उसकी कमजोरी है। इसी कारण वह वेश्यापुत्री कनक को समाज के सामने अपनी पत्नी तभी घोषित करता है, जब तारा, चन्दन, नन्दन से स्वीकृति मिल जाती है। "अप्सरा का नायक राजकुमार अनेक संकल्प-विकल्प के उपरान्त अपने मित्र और उसकी पत्नी के अधिक प्रयत्नों से प्रेरणा ग्रहण कर वेश्या-पुत्री कनक से विवाह कर पाता है।"¹

राजकुमार एक सुन्दर और शिक्षित युवक है। वह सामाजिक रूढ़ियों एवं अपने संस्कारों के विरुद्ध विद्रोह करके वेश्यापुत्री कनक से प्रेम करता है, जिसके फलस्वरूप वह अपनी पूर्व प्रतिज्ञा कि भोग-विलास से दूर रहकर साहित्य-सेवा करेगा भी भूल जाता है। लेकिन हम देखते हैं कि कनक को लेकर उसके मन में अन्तर्द्वन्द्व है। वह एक तरफ जहाँ कनक के वेश्या-व्यापार से घृणा करता है, वहीं दूसरी तरफ उसकी कला पर मुग्ध भी है। यही कारण है कि न वह कनक को अपने मन से निकाल पाता है और न ही उसका वरण करता है।

यद्यपि राजकुमार एक साहसी युवक है वह स्त्री जाति पर या कमजोर पर अत्याचार होते नहीं देख सकता, इसीलिए वह हैमिल्टन की पिटाई करता है लेकिन उसमें समाज की रूढ़िग्रस्त मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोह करने का अकेले साहस नहीं होता है, बल्कि वह कनक का तभी वरण करता है, जब तारा, चन्दन, नन्दन की स्वीकृति मिल जाती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि निराला ने उपन्यास के नायक राजकुमार के माध्यम से मानव मन के अन्तर्द्वन्द्व की स्थितियों को सुन्दरता के साथ चित्रित

1. कुसुम वाष्णीय : निराला का कथा साहित्य, संस्करण 1971, पृ0 26 ।

किया है ।

चन्दन :

चन्दन राजकुमार का मित्र है, उसका प्रवेश उपन्यास में बहुत समय बाद होता है । दोनों ने छात्र जीवन में प्रतिज्ञा की थी कि देश और समाज के लिए कार्य करेंगे । जहाँ राजकुमार अपना क्षेत्र हिन्दी साहित्य-सेवा को चुनता है, वहीं चन्दन अपना क्षेत्र राजनीति को चुनता है । राजकुमार के हृदय में जो भाव चन्दन की मैत्री के लिए हैं, उससे भी अधिक आदर्श रूप हम चन्दन की मैत्री में पाते हैं । जेल से छुटकर आने पर चन्दन को अपनी भाभी तारा के द्वारा राजकुमार एवं कनक के जीवन की घटनाओं का पता चलता है, तो वह उसी समय उनकी रक्षा के लिए कुँवर साहब की हवेली में पहुँच जाता है । वहाँ चन्दन न केवल राजकुमार के स्थान पर अपनी गिरफ्तारी देता है, बल्कि बड़े साहस और कौशल का परिचय देकर कनक की लाज भी बचा लेता है और बड़े ही गौरव के साथ अपनी भाभी से कहता है--"भाभी मैं सीता को भी जीत लाया ।"¹

चन्दन अपने मित्र राजकुमार की भाँति केवल यह प्रतिज्ञा ही नहीं करता है कि वह भोग-विलास से दूर रहकर देश-सेवा करेगा और भोग-विलास में डूब गया हो, बल्कि वह व्यावहारिक रूप में भी एक क्रान्तिकारी है । वह लखनऊ में किसानों का संगठन करके ब्रिटिश सरकार एवं जमींदारों के विरुद्ध विद्रोह की भूमि तैयार करता है --"लखनऊ । किसानों का संगठन कर रहा था, पर बचकर, क्योंकि मुझे काम ज्यादा प्यारा है ।"² अतः हम देखते हैं कि चन्दन कर्म में विश्वास रखता है, न कि राजकुमार की भाँति प्रचार करने में उसे अपने नाम की प्रसिद्धि की कोई लालसा नहीं है । वह सच्चे मन से भारत को अंग्रेजों से मुक्ति दिलाना चाहता है तथा क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० 117 ।

2. वही, पृ० 115 ।

लेकर भारत की मुक्ति के लिए संघर्षरत है। क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेने के कारण उसे ब्रिटिश सरकार गिरफ्तार करती है। लेकिन कोई सबूत न मिलने के कारण उसे बरी कर दिया जाता है—“लखनऊ में सरकारी खजाने पर डाका पड़ा। शक पर मैं भी गिरफ्तार कर लिया गया, पर मेरी गैरहाजिरी ही साबित रही। पुलिस के पास कोई बड़ा सबूत न था, सिर्फ नाम दर्ज था। खुफिया वाले मुझे भला आदमी जानते थे। कोई सबूत न रहने पर जमानत पर छोड़ दिया गया।”¹

चन्दन भारत को मुक्त कराने के लिए केवल क्रान्तिकारी गतिविधियों में ही संलग्न नहीं रहता है, बल्कि वह दुनिया का क्रान्तिकारी साहित्य पढ़कर भारत के लिए ऐसी ठोस भूमि भी तैयार करता है, जो भारत के अनुकूल हो। मानवीयता का पक्ष हो—“फ्रांस, रूस, चीन, अमेरिका, भारत, इजिप्ट, इंग्लैण्ड, सब देशों की, सजीव स्वर में बोलती हुई, स्वतन्त्रता के अभिप्रेत से तृप्त-मुख, मनुष्य को मनुष्यता की शिक्षा देने वाली किताबें थीं।”²

चन्दन एक निडर साहसी हँसमुख प्रवृत्ति का युवक है। जो स्वयं भी हँसता रहता है और सभी को हँसता भी रहता है। भय की छाया उसके निकट तक भी नहीं आती है—“चन्दन अपना काम पूरा कर आ गया। पलंग पर बैठकर कहा, “उठो तुम्हें एक मजेदार बात सुनाऊँ।”

राजकुमार जागता था ही, उठकर बैठ गया।

सुनो, कान में कहूँगा।” चन्दन ने धीरे से कहा।

राजकुमार ने चन्दन की तरफ सिर बढ़ाया।

चन्दन ने पहले इधर-उधर देखा, फिर राजकुमार के कान के पास मुँह ले गया। राजकुमार जब सुनने के लिए खूब सकाग्न हो गया, तो चुपके से कहा, “नहाओगे नहीं।”³ चन्दन के प्रयास के कारण ही राजकुमार और

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० 115।

2. वही पृ० 72।

3. वही पृ० 125।

कनक का विवाह होता है । इस प्रकार उपन्यास के मूल उद्देश्य में वह सहायक होता है ।

चन्दन स्वभाव एवं व्यवहार से एक क्रांतिकारी एवं सच्चा देशभक्त है, जो विवाह न करने की प्रतिज्ञा पर दृढ़ है—“किसी ने कहा है, मेरी शादी कानून से हुई है, किसी ने कहा है, मैं कविता-कुमारी का भर्तार हूँ, किसी ने कहा है, मेरी प्यारी बीवी चिकित्सा है, मैं कहता हूँ, मेरी हृदयेश्वरी, इस जीवन की एक मात्र संगिनी, इस चन्दन सिंह की सिंहिनी सरकार है ।”¹ अतः हम देखते हैं कि वह अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहता है और वह क्रांतिकारी गतिविधियों को चलाने के लिए एवं समाज सेवा के लिए धन मांगने में भी नहीं शर्माता है । कनक से कुछ सोचते हुए कहता है—“जी, मुझे एक हजार रुपये दो । मैंने हरदोई-जिले में, देहात में, एक राष्ट्रीय विद्यालय खोला है, उसकी मदद के लिए ।”² चन्दन तारा द्वारा कनक की जलाई हुई पेशावाज से भी सोना निकाल लेता है ताकि असहाय गरीबों की मदद की जा सके—“चन्दन राख फूँककर सोने के दाने इकट्ठे कर रहा था । एकत्र कर तअज्जुब की निगाह से देखता रहा । सोना दो सेर से ज्यादा था ।

“ईश्वर करे, एक पेशावाज रोज ऐसी जले, और सोना गरीबों को दिया जाय ।”³

अतः हम कह सकते हैं कि अप्सरा के पात्रों में चन्दन का चरित्र सबसे अधिक आकर्षक एवं प्रभावशाली है । डा० निर्मल जिन्दल का कथन दृष्टव्य है—“चरित्र-चित्रण की सफलता इस बात में निहित रहती है कि पात्रों का व्यक्तित्व पाठक-वर्ग को किस सीमा तक प्रभावित कर पाता है । इस दृष्टि से नायक राजकुमार की अपेक्षा चन्दन का चरित्र अधिक आकर्षक और

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० 154।

2. वही पृ० 161 ।

3. वही पृ० 162 ।

प्रभादशाली बन पड़ा है।¹ हम देखते हैं कि उपन्यास के अन्त में भी चन्दन राजकुमार एवं कनक के दाम्पत्य सुख के लिए, स्वयं को राजकुमार के स्थान पर गिरफ्तार कराकर। सजा को सहर्ष स्वीकार कर लेता है।

कथा के विकास में उसकी भूमिका और उसके व्यक्तिगत गुणों के कारण चन्दन का चरित्र उच्च कोटि का बन पड़ा है। उसके बिना उपन्यास के मूल उद्देश्य की सिद्धि ही नहीं हो सकती थी। अतः इसी बिन्दु से हमें उसके चरित्र पर दृष्टि केन्द्रित करनी चाहिए। वह दूसरे पात्रों को भी प्रभावित करने की सामर्थ्य रखता है। इस प्रकार चन्दन इस उपन्यास का अत्यंत महत्वपूर्ण पात्र है।

सर्वेश्वरी

सर्वेश्वरी एक वेश्या है और उसकी मानसिकता एवं व्यवहार भी वेश्याओं जैसे ही हैं। उसने अपार धन जमा कर रखा है और वह जीवन में वैभव तथा आकर्षण को ही सर्वाधिक महत्व देती है। सर्वेश्वरी में वेश्याओं के संस्कार होते हुए भी कुछ अच्छे गुण हैं। उसने अपनी बेटी कनक को उच्च आधुनिक शिक्षा दिलाई है और संगीत-नृत्य में पारंगत बनाया है।

सर्वेश्वरी के मन में कनक के प्रति एक द्वन्द्व चलता रहता है, एक तरफ वह धन एवं यश की लोलुपता के वशीभूत होकर अपनी कन्या को छल एवं कपट अगद्धि की शिक्षा देती है—“किसी को प्यार मत करना। हमारे लिए प्यार करना आत्मा की कमजोरी है, यह हमारा धर्म नहीं।... संसार के ओर लोग भीतर से प्यार करते हैं, हम लोग बाहर से।... हमारी जैसी स्थिति है, इस पर ठहरकर भी हम लोग में वैसी ही विभूति, वैसा ही ऐश्वर्य, वैसा ही सम्मान अपनी कला के प्रदर्शन से प्राप्त कर सकती है, साथ ही, जिस आत्मा को और लोग अपने सर्वस्व का त्याग कर प्राप्त करते हैं, उसे भी हम लोग अपनी कला के उत्कर्ष के द्वारा उसी में प्राप्त करती हैं -

उसी में लीन होना हमारी मुक्ति है ।¹ कनक के द्वारा अपनी कला को अर्थ प्राप्त का साधन न बनाने पर सर्वेश्वरी उसे नृत्यगान को अर्थ प्राप्त का साधन बनाने के लिए कहती है—“ठीक है । पर यह एक प्रकार का समझौता है । अर्थ-वाले अर्थ देते हैं, और कला के जानकार उसका आनन्द । संसार में एक-दूसरे से ऐसा ही सम्बन्ध है ।”² वहीं दूसरी तरफ कनक को राजकुमार से प्रेम करने की पूर्ण स्वतन्त्रता देती है और कनक के संकल्प को देखकर उसके पिता जयनगर के महाराज की याद दिलाकर उच्च वंश के होने की पुष्टि भी करती है—“बेटी, तुम रणजीत सिंह की कन्या हो । तुम्हारे पिता जयनगर के महाराज थे । ...आज देखती हूँ, तुम्हारे कुल के संस्कार ही तुम में प्रबल है ।”³

सर्वेश्वरी जानती है कि कोई सभ्य व्यक्ति एक वेश्या की पुत्री से विवाह करके उसे सामाजिक, पारिवारिक जीवन प्रदान नहीं करेगा । इसी लिए उसके मन में राजकुमार के प्रति संशय की भावना है, जिसका होना स्वाभाविक है—“तुम्हारा इस प्रकार स्वयंवशा होना उन्हें भी मंजूर है न, या अन्त तक शाकुन्तला की ही दशा भोगनी होगी ।”⁴ यहाँ सर्वेश्वरी के व्यवहार में वेश्या के संस्कार प्रबल नहीं है । बल्कि यहाँ वह एक माँ है । वह चाहती है कि सौभाग्य से उसकी बेटी को सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन व्यतीत करने का जो मौका मिला है, वह पूर्ण हो । यही उसकी हार्दिक इच्छा है कि उसकी बेटी इस नरक से मुक्ति पाये ।

राजकुमार के द्वारा कनक को छोड़कर चले जाने से, कनक इस घटना से स्वयं को अपमानित महसूस करती है और उसकी स्थिति विधिप्लुत जैसी हो जाती है । सर्वेश्वरी ऐसी घड़ी में अपनी बेटी को सांत्वना देने के बदले धन-लोलुप

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण पृ० 14 ।

2. वहीं पृ० 24 ।

3. वहीं पृ० 51 ।

4. वहीं पृ० 25 ।

वशा उसे विक्षिप्तावस्था में विजयपुर के कुँवर साहब के राजतिलक में नृत्य-गान के लिए ले जाती है। अतः हम सर्वेश्वरी के व्यक्तित्व में दो रूप देखते हैं।

“कनक की माता सर्वेश्वरी का चरित्र भी कुछ अस्वाभाविक लगता है। धन और यश-लोलुप यह नारी एक ओर तो कन्या को हल, कपट आदि की शिक्षा देती है और दूसरी ओर कनक के राजकुमार की ओर उन्मुख पर उसे पूरी स्वतन्त्रता भी देती है।”¹ सर्वेश्वरी का तारा के साथ साक्षात्कार होने के पश्चात्, उसके हृदय में शान्ति की भावना जाग्रत होती है। राजकुमार एवं कनक का विवाह होनेके उपरांत वह रूप कें बाजार को छोड़कर, आत्मा की शुद्धि के लिए काशीवास का निश्चय करती है। इस बिन्दु पर आकर उसमें सुधार की भावना घर कर जाती है। कनक की मां होने के कारण कहानी में उसकी अपनी विशेष भूमिका है।

कैथरिन

कैथरिन एक अंग्रेज क्रिश्चियन महिला है। वह कनक की अंग्रेजी की शिक्षिका भी है। कनक को बहुत अधिक प्रेम करती है और राजकुमार को छुड़ाने में पूर्ण रूप से उसकी सहायता करती है। उसकी मानसिकता से योरोपियन की शलक मिलती है तथा उस पर क्रिश्चियन संस्कारों का पूर्ण रूप से प्रभाव है। उसकी यह हार्दिक इच्छा है, कि कनक को योरोप ले जाकर प्रभु ईसा की शरण में क्रिश्चियन बनाये। “वह कनक के शिक्षण में सौत्साह उचित योग इसलिए देती है कि किसी दिन उस प्रतिभा को प्रभु ईसा की शरण में लाकर कृतार्थ कर देगी।”² लेकिन हम देखते हैं कि कैथरिन के व्यवहार से उसकी इच्छा का किसी को अनुभव नहीं होता है। उसके मन में बैठे क्रिश्चियन संस्कार और उसके मन की आकांक्षा पहली बार तब प्रकट होते हैं, जब राजकुमार कनक को छोड़कर चला जाता है, तो कनक की मां कनक की विक्षिप्तावस्था को

1. निर्मल जिन्दल: निराला का गद्य साहित्य, प्रथम संस्करण, पृ० 59।

2. बलदेव प्रसाद महरोत्रा: कथा शिल्पी निराला, प्रथम संस्करण, पृ० 175।

देखकर कैथरिन को उसकी गार्जियन नियुक्त करती है, तो कैथरिन उपयुक्त अवसर देखकर अपने भाव प्रकट करती है—“तुम योरप चलो । यहाँ के आदमी तुम्हारी क्या कद्र करेंगे । मैं वहाँ तुम्हें किसी लार्ड से मिला दूँगी... तुम क्रिश्चियन हो जाओ । राजकुमार तुम्हारे लायक नहीं । वह क्या तुम्हारी कद्र करेगा । वह तुमसे दबता है, रद्दी आदमी ।”¹

इस प्रकार वह छद्म रूप से ईसाईयत के प्रचार के लिए प्रतिबद्ध है । उपन्यास में उसकी सीमित भूमिका कही जाएगी ।

कुँवर प्रताप सिंह

कुँवर साहब विजयपुर के युवराज हैं । जो बाद में महाराज हो जाते हैं । निराला ने कुँवर साहब का बड़ा ही यथार्थ और सजीव चित्रण किया है—“कुँवर साहब का नाम प्रताप सिंह था, पर ये बिल्कुल दुबले-पतले । इक्कीस वर्ष की उम्र में ही हाथ-पैर सूखी डाल की तरह, मुँह सीप की तरह पतला हो गया था । आँखों के लाल डोरे अत्यधिक अत्याचार का परिचय दे रहे थे ।”²

कुँवर साहब के चरित्र में देशी रियासतों के राजा, जमींदार एवं तआल्लुकेदारों का प्रतिनिधि रूप देखा जा सकता है, जो गरीबों, किसानों, मजदूरों की मेहनत से विलासपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे । यह जमींदार वर्ग थिएटर की मिसों के यहाँ, वेश्याओं के यहाँ कीमती भेंट भेजते थे । हजारों रुपये मासिक जेब खर्च । वहीं दूसरी तरफ किसान भूख मर रहे थे । कुँवर साहब के व्यक्तित्व में हम सामन्तशाही के ध्वंशावशेष का अस्तित्व देख सकते हैं ।

कुँवर साहब अंग्रेजों से मिलकर विलासपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं । इनके यहाँ रोज दावतें होती हैं और वेश्याओं को नृत्य-गान के लिए बुलाया जाता है । न केवल यह नृत्य-गान से ही आनन्द लेते हैं, बल्कि अपने मित्रों के साथ नारी के शरीर से भी खेलते हैं—“अजी, आप बड़ी मुश्किलों में मिली हैं । और

1. अप्सरा : निराला, चतुर्थ संस्करण, पृ०

2. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० 91 ।

सौदा भी बड़ा महुँगा रहा । "कुवंर साहब ने अपने मित्रों से कनक की तरफ इशारा कर कहा ।"¹ इस वाक्य से स्पष्ट हो जाता है, कि कुवंर साहब का चरित्र पशुता की सीमा तक गिरा हुआ है, जो केवल विलासिता को ही जीवन समझता है—"क्या सोचती हो तुम भी, दुनिया में हँसने-खेलने केसिवा और है क्या !"²

इस प्रकार कुवंर साहब की भी कहानी में अपनी भूमिका है, जो कहानी को आगे बढ़ाती है । फिर भी उसकी भूमिका मूल और केन्द्रीय नहीं है ।

हैमिल्टन

हैमिल्टन अंग्रेज पुलिस अफसर है । वह पुलिस विभाग के उन नीच प्रवृत्ति की मानसिकता वाले अंग्रेज अफसरों का प्रतीक है, जो भारतीयोंको दास समझकर उनकी नारियों को अपनी काम-मिपासा का शिकार बनाने में लज्जा नहीं करते थे । उनकी इस उच्छृंखलता का जो व्यक्ति विरोध करता था, वह उनका शत्रु बन जाता था ।

हैमिल्टन उच्छृंखल प्रवृत्ति का अंग्रेज पुलिस अफसर है, यह उच्छृंखलता उसके व्यवहार से भी प्रकट होती है, जब वह इडेन गार्डन में बैठी कनक के साथ दुर्व्यवहार करता है—"युवती एकाएक चौंकर काँप उठी । उसी बेच पर एक गोरा बिलकुल सटकर बैठ गया । युवती एक बगल हट गयी । गोरे ने हाथ पकड़कर जबरन बेंच पर बैठा लिया । युवती चीख उठी ।"³ उपन्यास का नायक राजकुमार हैमिल्टन द्वारा किए गये कनक के साथ इस साहसिक दुष्प्रयत्न का विरोध करता है, जिसके कारण उसे हैमिल्टन का कोप-भाजन बनना पड़ता है । अतः हैमिल्टन के इस चरित्र से यह स्पष्ट हो जाता है कि अंग्रेज उस समय भारतीयों पर बहुत अत्याचार करते थे तथा अत्याचार एवं अन्याय का विरोध करने वालों पर झूठा आरोप लगाकर अपनी इच्छानुसार दण्ड देते थे ।

1. अप्सरा चतुर्थ संस्करण पृ० 111 ।

2. वही पृ० 106 ।

3. वही पृ० 9

हैमिल्टन के चरित्र से उसकी भोगी प्रवृत्ति का परिचय उपन्यास में तब भी होता है, जब कनक राजकुमार को षडयन्त्र से बचाने के लिए कैथरिन द्वारा हैमिल्टन को बुलाती है। हैमिल्टन ऐसे शुभ अवसर को नहीं छोड़ता है और कनक से साधात्कार होते ही उसके सौंदर्य पर मोहित होकर भोंडा नृत्य करता है और अधिक शराब पीने के कारण मदहोश हो जाता है। इसी कारण रॉबिन्सन साहब से उसे डाँट खानी पड़ती है।

कुंवर साहब के राजतिलक में हैमिल्टन कनक को उसकी उददण्डता और कूटनीतिज्ञता का परिचय अपनी काम-पिपासा का शिकार बनाके कराना चाहता है, लेकिन कनक चन्दन द्वारा सकुशल इनके चंगुल से बच जाती है। ट्रेन में भी वह कनक, राजकुमार से अपने अपमान का बदला लेना चाहता है, लेकिन राजकुमार की डाँट खाकर वह ठीक हो जाता है। इसी कारण हैमिल्टन अपने अपमान का बदला लेने के लिए राजकुमार के नाम का वारण्ट निकलवाता है, जिसके फलस्वरूप राजकुमार के स्थान पर चन्दन को सजा काटनी पड़ती है। इन आधार पर हम कह सकते हैं हैमिल्टन की मानसिकता एवं व्यवहार से अंग्रेजों के दम्भ एवं उनकी उददण्डता का परिचय मिलता है। डॉ० निर्मल जिन्दल ने भी लिखा है-“ हैमिल्टन साहब का व्यवहार अंग्रेज जाति की अधिकार-भावना और दम्भ का परिचय देता है।”¹ इन सबको दृष्टि में रखते हुए हम कह सकते हैं कि हैमिल्टन के चरित्र और उसके व्यवहार से अंग्रेज पदाधिकारियों एवं समकालीन भारतीय पुलिस अफसरों का चरित्र उजागर हो जाता है। वह शोषण और दुराचार का प्रतीक है।

राम सुन्दर सिंह

राम सुन्दर सिंह दरोगा ऐसे व्यक्तियों की मानसिकता का प्रतिनिधित्व करता है, जो अपने अधिकारियों को प्रसन्न रखने के लिए और अपने साहबी का ज्ञान कराने के लिए कोई भी गलत कार्य कर देते हैं। इसी कारण उन्हें बार-बार अपमानित भी होना पड़ता है। राम सुन्दर सिंह

1. निराला का गद्य साहित्य, प्रथम संस्करण, पृ० 59।

भी अपने पुलिस अफसर हैमिल्टन को प्रसन्न करने के लिए राजकुमार को झूठे आरोप में फँसाकर कुछ सिपाहियों को लेकर स्टेज पर ही आ धमकता है और आवेश में मैनेजर से कहता है—“यहाँ ! इस नाटक-मण्डली में, राजकुमार वर्मा कौन है ! उसके नाम वारण्ट है, हम उसे गिरफ्तार करेंगे ।”¹

और वह दर्शकों के द्वारा तिरस्कृत होता है ।

राम सुन्दर सिंह विलासी प्रवृत्ति का होने के कारण, कनक के सौंदर्य पर आसक्त हो जाता है और उसके घर बुलाने पर सज-धज कर वहाँ चला जाता है । कनक के सौंदर्य और आतिथ्य से इतना प्रभावित होता है कि शराब पीकर वही बेहोशी की अवस्था बयान दे देता है । निराला ने राम सुन्दर सिंह के माध्यम से पुलिस का चरित्र उजागर कर दिया है जो समाज के रक्षक होने के बजाय भक्षक हो जाते हैं । वह भारतीय पुलिस की ह्रासशील मनोवृत्ति का प्रतीक है । कहानी में भी उसकी अपनी भूमिका है, जो कहानी को अपने ढंग से तो आगे बढ़ाती ही है ।

हर पाल सिंह

हर पाल सिंह एक साहसी ग्रामीण व्यक्ति है । वह ~~अन्यास~~ ऐसे ग्रामीण लोगों का प्रतिधित्व करता है, जो अपनी जमीन से जुड़े हुए हैं तथा ग्रामीण समाज के जीवन मूल्यों के लिए जान की बाजी लगाते हुए भी पीछे नहीं हटते हैं । निराला ने हरपाल सिंह के माध्यम से एक सीधे-सच्चे, निडर ग्रामीण व्यक्ति के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है । हर पाल सिंह से तारा कुंवर साहब के आदमियों से बचने के लिए गाड़ी से स्टेशन पहुँचाने में सहायता के लिए कहती है, तो हरपाल सिंह इस मुसीबत की घड़ी में उसकी सहायता करना अपना धर्म मानता है और तब उसने “डण्डा संभाल, मुठ्ठी से जमीन दबाते हुए एक पीक वहीं धूँकर कहा, “यह तो छत्री का धर्म है । गोसाईं जी ने कहा है —

रघुकुल-रीति सदा चलि आयी,
प्राण जाय, पै वचन न जायी ।¹

हरपाल सिंह रात के समय तैयार होकर ठीक समय पर सबको स्टेशन सकुशल पहुँचा देता है । विजयपुर स्टेट के गुप्तचरों को स्टेशन पर चन्दन देखकर, हरपाल सिंह से संशय के साथ कहता है-“भैया, तुम चले जाओ, भेद अगर खुल गया, और तुम साथ रहे, तो तुम्हारे लिए बहुत बुरा होगा ।”² चन्दन का यह वाक्य सुनकर हरपाल सिंह बिना किसी डर के बड़ी निडरता के साथ जवाब देता है-“हरपाल सिंह की भौंहे तन गयीं, निगाह बदल गयी । बोला, “भैया हे ! जान का खेयाल करते, तो आपका साथ न देते ! आपकी इच्छा होय, तो हियें लाठी...”³ अतः हम देखते हैं कि हरपाल सिंह का चरित्र बहुत प्रभावित करने वाला है, वह जहाँ एक बहादुर ग्रामीण व्यक्ति है जो अपने जीवन मूल्यों के लिए कुछ भी कर सकता है । वहीं उसकी दृष्टि में नारी के लिए सम्मान है । वह नारी को भोग-विलास की वस्तु न समझकर, नारी के प्रति भक्तिभावना रखता है । उसका चरित्र उच्च स्तरीय है ।

नन्दन सिंह

नन्दन सिंह चन्दन के बड़े भाई तथा तारा के पति हैं । यद्यपि उपन्यास में नन्दन सिंह का प्रवेश अन्तिम समय होता है, लेकिन फिर भी निराला ने नन्दन सिंह नामक पात्र का चरित्र बहुत प्रभावशाली बनाया है । नन्दन सिंह के व्यक्तित्व से यह स्पष्ट हो जाता है कि वह स्वदेशी का प्रचारक एवं समर्थक है, विशेष रूप से जब वह कनक को भेंट करने के लिए चर्खा लेता है-
“छाँटकर एक अच्छा चर्खा उन्होंने खरीद लिया ।”⁴ निःसन्देह नन्दन सिंह का

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० 126 ।

2. वही पृष्ठ 139 ।

3. वही पृ० 139 ।

4. वही पृ० 163 ।

यह स्वदेशी का प्रचारक एवं समर्थक होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है । अतः हम कह सकते हैं कि निराला ने नन्दन सिंह पात्र के माध्यम से भारत में चले स्वदेशी आन्दोलन का प्रचार किया है ।

वेश्यापुत्री कनक के साथ राजकुमार को विवाह करने पर नन्दन सिंह बधाई देते हैं, यह तथ्य उनके रुढ़ियों के विरुद्ध विद्रोह और स्वस्थ सामाजिक मान्यताओं को समर्थन देने की प्रवृत्ति को प्रकाशित करता है ।

नन्दन सिंह कनक से गुस्ताई जी का भजन गाने की इच्छा प्रकट करते हैं --“हमारी एक साथ बहू और तुम्हें पूरी करनी है । एक भजन गाकर सुना दो । याद हो, तो गुस्ताई जी का ।”¹ नन्दन सिंह का कनक से भजन सुनना उसे वेश्या समाज से मुक्ति देना और सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन प्रदान करने के साथ-साथ उसकी पवित्रता का ध्येय है ।

इस प्रकार नन्दन सिंह का व्यक्तित्व उच्च स्तरीय है और इसकी अपनी भूमिका है ।

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० 164 ।

×:×:×:×:×:×:×:×:×:×:×
×××××××××××××××××
चतुर्थ अध्याय
×:×:×:×:×:×:×:×:×:×:×

चतुर्थ अध्याय =====

निराला के उपन्यासों में "अप्सरा" का स्थान

प्रस्तुत अध्याय में हम निराला के सभी उपन्यासों के संदर्भ में "अप्सरा" का स्थान निर्धारित करेंगे। यही प्रस्तुत अध्याय का विवेच्य विषय है।

निराला का विद्रोही स्वरूप उनके काव्य में ही प्रकट नहीं होता, बल्कि उनके निबन्धों, कहानियों और उपन्यासों में भी होता है। "परिमल", का "बादल राग", "राम की शक्ति पूजा", और "जागो फिर एक बार" एवं "कुकुर-मुत्ता" जैसी कविताओं के प्रणेता निराला ने अपने उपन्यासों में भी विद्रोही स्वरूप की अभिव्यक्ति की है।

जैसा कि हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं निराला युग प्रवर्तक साहित्यकार हैं तथा अपनी काव्य-कृतियों के अतिरिक्त अपने उपन्यासों में भी उन्होंने अनेक सामाजिक समस्याओं को गम्भीरता से प्रस्तुत किया है तथा उनके ऐतिहासिक उपन्यासों में भी उनकी यह वैचारिक दृष्टि प्रतिफलित हुई है और ऐतिहासिक आख्यानो की भी नई और मौलिक व्याख्या की है।

अब हम उनके उपन्यासों की प्रमुख समस्याओं का विश्लेषण करते हुए इस संदर्भ में "अप्सरा" का भी मूल्यांकन करेंगे। प्रस्तुत संदर्भ में सर्वप्रथम हम "अलका" एवं उनके अन्य उपन्यासों का वस्तुपरक विवेचन करेंगे एवं तुलनात्मक ढंग से "अप्सरा" पर भी विचार करेंगे।

अलका

"अप्सरा" उपन्यास के उपरान्त निराला का दूसरा उपन्यास "अलका" सन् 1933 में प्रकाशित हुआ। यह एक यथार्थवादी सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास में निराला ने किसानों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है, उनकी आर्थिक दयनीय स्थिति और जमींदारों, सूदखोरों तथा सरकारी अधिकारियों

के द्वारा होते हुए अत्याचारों को चुपचाप सहते हुए असहाय किसान—“बेचारे खेत जोतने वाले सीधे किसान, अदालत और पुलिस के नाम से डरने वाले हवालात के ताप से सूख गये ।”¹ इस उपन्यास में ग्रामीण परिवेश सजीव ढंग से उभरकर सामने आता है ।

उपन्यास की कथावस्तु इस प्रकार है— प्रथम महायुद्ध समाप्त हो गया था । महासमर के उपरान्त सम्पूर्ण भारतीय गांवों में महामारी फैली हुई थी । इसी महामारी की चपेट में उपन्यास की नायिका शोभा के पिता की मृत्यु हो जाती है तथा माँ को भी महामारी अपने पाश में जकड़ लेती है । शोभा का विवाह बाल्यावस्था में ही हो गया था । बीमार पड़ी माँ शोभा से ससुराल में पति विजय को पत्र लिखने के लिए कहती हैं, ताकि इस संकट की घड़ी में आकर वह शोभा को यहाँ से विदा करा ले जायें । लेकिन पति को पत्र लिखने के अगले दिन ही माँ का भी देहान्त हो जाता है । शोभा माँ-बाप की इस अकाल मृत्यु से स्तब्ध हो जाती है, कि इस संसार में अब कौन उसकी देखभाल करेगा । ऐसे में महादेव शोभा को अपने साथ ले जाकर प्यारे लाल के घर ठहराता है । वहीं शोभा की भेंट बचपन की सहेली राधा से होती है । राधा महादेव की चाल का रहस्य शोभा को बताती है, कि महादेव तुम्हें ससुराल भेजने के बजाय जमींदार मुरलीधर के यहाँ पहुँचाना चाहता है ताकि पाँच-छः हजार रुपये उसे मिल जायें । राधा उसे सलाह देती है कि वह देवदर्शन के बहाने यहाँ से निकल कर किसी तरह अगले स्टेशन पर पहुँच और मैं अपने पति के साथ अगले स्टेशन पर मिलूँगी । शोभा इस विपत्ति से बचने के लिए राधा के परामर्शानुसार घने जंगलों से होती हुई निकल भागती है । जंगल में रास्ता भटकने की घबराहट और दर्द के कारण मूर्छित हो जाती है ।

जमींदार पंडित स्नेह शंकर सुबह-सुबह घूमने के आदी थे । प्रातःकाल के भ्रमण में उन्होंने शोभा को मूर्छित अवस्था में देखा और उसे उसी दशा में उठाकर

1. सं० ओंकार शरद : निराला ग्रन्थावली §2§, प्रथम संस्करण, पृ० 227 ।

अपने घर ले आते हैं। स्नेह शंकर का स्वभाव महात्माओं जैसा था। वह क्रूर न होकर आदर्श जमींदार एवं समाज सेवक थे। शोभा उनके यहाँ शरणा पाकर एवं उनके व्यवहार के कारण संतोष का अनुभव करती है। जमींदार शोभा का नाम "अलका" रखकर उसकी उचित शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध करते हैं।

शोभा का पति विजय द्यूशन करके बम्बई में किसी तरह अपना विद्यार्थी जीवन व्यतीत कर रहा था। पत्नी शोभा का पत्र पाकर गाँव पहुँचता है, लेकिन उसे गाँव पहुँचने पर शोभा के भागने के सम्बन्ध में तरह-तरह की बातें सुनने को मिलती हैं। वह वहाँ से निराश होकर अपने गाँव लौटता है तो माता पिता की मृत्यु का समाचार पाता है। सभी तरफ से स्वयं को अकेला महसूस करते हुए अपने मित्र अजीत के पास कानपुर पहुँच जाता है। अजीत ने समाज एवं राजनीति के क्षेत्र में काम करने का व्रत ले रखा था, जिसके कारण वह गरीब मजदूर-किसानों के बीच रहकर कार्यरत था। अजीत की प्रेरणा से ही विजय के मन में समाज-सुधार की भावना जागृत होती है, फलस्वरूप वह एक पिछड़े हुए गाँव को अपना कार्यक्षेत्र बनाता है।

विजय गाँव में पहुँच कर जागृति उत्पन्न करता है जिसके फलस्वरूप किसानों के अन्दर इतना साहस आ जाता है कि वो डिप्टी साहब के सामने जमींदार द्वारा किये गये अत्याचारों का वर्णन करते हैं। इस घटना से अपमानित हुए जमींदार की आँखों में विजय चढ़ जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप उसे हवालात का मुँह देखना पड़ता है।

उधर अजीत भी अपने मित्र की पत्नी से सम्बन्धित सच्चाई जानने के लिए, वेष्ट बदल कर एक साधू के रूप में शोभा के गाँव पहुँचता है तथा वह गाँव के बाहर धूनी रमाये बैठ जाता है वहीं उसकी भेंट एक युवक ब्रज किशोर से होती है। अजीत रात्रि विश्राम भी ब्रजकिशोर के घर पर ही करता है। वहीं वह ब्रज किशोर की विधवा बहन वीणा के सम्पर्क में आता है। दोनों मन से एक दूसरे को चाहने लगते हैं, फिर धीरे-धीरे चाह घनिष्टता का रूप धारण कर लेती है। वीणा भी जमींदार मुरलीधर से त्रस्त थी क्योंकि शोभा

की भौंति उस पर भी जमींदार की दृष्टि थी । अजीत, वीणा और उसके भाई को अपने साथ कानपुर ले आता है । कानपुर में अजीत और वीणा विवाह के बन्धन में बँध जाते हैं ।

विजय जेल से छूट कर लखनऊ जाकर प्रभाकर के नाम से मजदूरों के बीच काम करता है । अलका भी यहीं अपने धर्म पिता के साथ रहती थी, कि एक दिन उसकी भेंट अपने पिता के मित्र डिप्टी कमिशनर ज्ञानप्रकाश के घर प्रभाकर से होती है । अलका प्रभाकर के मजदूरों के बीच कार्य करने से तथा उसकी देश सेवा, क्रान्तिकारी विचारों आदि से अत्यन्त प्रभावित होती है । अलका प्रभाकर की प्रेरणा से रात्रि-पाठशाला में मजदूरों के बच्चों को पढ़ाने का कार्य करने लगती है । अजीत भी वीणा के साथ मुरलीधर का पीछा करता हुआ लखनऊ आ जाता है और दोनों वेश बदल कर एक होटल में मुरलीधर से मिलते हैं । मुरलीधर को बहुत अधिक मात्रा में शराब पिलाकर उसकी मूर्छित अवस्था का लाभ उठाते हुए रिवाल्वर अपने साथ ले आते हैं । वीणा रिवाल्वर अलका को दे देती है । अलका प्रतिदिन प्रभाकर द्वारा स्थापित गरीबों की पाठशाला से पढ़ाकर रात्रि में लौटती है । एक दिन मुरलीधर के गुर्गे उसे तांगे से उतार कर बल पूर्वक मोटर में बिठाने का प्रयास करते हैं, क्योंकि मुरलीधर को महादेव द्वारा यह ज्ञात हो गया था कि अलका के वेश में शोभा ही है । अलका सचेत रहते हुए रिवाल्वर निकाल कर मुरलीधर को दाग देती है जिसके फलस्वरूप तत्काल ही मुरलीधर की मृत्यु हो जाती है । गोली की आवाज सुन कर प्रभाकर घटना स्थल पर आ जाता है और अलका को कुशलता से उसके घर छोड़ता है । परिस्थितिवाश उसे स्नेहशंकर के घर ही रात्रि व्यतीत करनी पड़ती है । प्रातः स्नेहशंकर के घर अजीत प्रभाकर {विजय} को देखकर कहता है -- "विजय ! तुम कहाँ रहे भाई ! ... शोभा शायद सदा के लिए चली गई ।" इस प्रकार बड़ी नाटकीयता के साथ विजय और शोभा का परिचय होता है ^{और} कि मुरलीधर ने नशे की हालत में आत्महत्या की थी ।

प्रस्तुत उपन्यास में किसानों की समस्याएँ एवं ग्रामीण परिवेश उभरकर

सामने आये हैं । निराला ने इस उपन्यास में जमींदारों, सूदखोरों तथा सरकारी अधिकारियों के अत्याचारों को सहते हुए विवश किसानों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है । घृणित जमींदार मुरलीधर के माध्यम से उन तानाशाह जमींदारों की कथित मनोवृत्तियों का उद्घाटन होता है, जोकि वास्तव में अंग्रेजों से साठ-गाँठ किये हुए थे और जिन्होंने सन् 1857 के स्वतन्त्रता सेनानियों के साथ गद्दारी करके जमींदारी प्राप्त की थी--"यह विशाल संपत्ति उनके पितामह ने अंगरेज सरकार की तरफ़दारी करके प्राप्त की थी"। जमींदार किसानों की जर्जर होती हुई आर्थिक अवस्था का भी ध्यान नहीं रखते थे, बल्कि कूरता के साथ लगान वसूल किया करते थे । किसानों द्वारा लगान समय पर न देने से उन्हें कठोर से कठोर दंड दिया जाता था । उपन्यास के पात्र बूढ़े किसान बुढ़ूआ को लगान समय पर न देने के कारण जमींदार कृपानाथ पीट-पीट कर अधमरा कर देता है--"प्रहार से पीठ फट गई, मुख से फेन बह चला, वहीं पृथ्वी की गोद में वह बेहोश हो लुढ़क गया ।"² सरकारी अधिकारी तथा कर्मचारी स्वयं भी जमींदारों के साथ मिलकर न्याय करने के बदले उनका शोषण करने में जमींदारों, ताल्लुकेदारों से भी दो हाथ आगे थे । निराला ने इस उपन्यास में जमींदारों की विलासी मनोवृत्ति पर भी व्यंग्य किया है जोकि गाँव के गरीब किसानों की बहू बेटियों की इज्जत से खेला करते थे । यह तथ्य इसी घटना से प्रमाणित होता है कि उपन्यास की नायिका शोभा को भी जमींदार की वासना का शिकार होने से बचने के लिए, गाँव से भागना पड़ता है ।

निराला ने प्रस्तुत उपन्यास में तत्कालीन राजनीतिक चेतना का भी संकेत किया है । सन् 1929-31 के आस पास कांग्रेस आदि संस्थाओं के द्वारा

1. सं० ओंकार शरद : निराला ग्रन्थावली §2§ प्रथम संस्करण, पृ० 161 ।

2. वही

पृ० 189 ।

भारतीय जनता में पर्याप्त राजनीतिक चेतना जागृत हो रही थी, जिसकी लहरें गाँव में भी पहुँच रही थी—“सुराज क्या है रे । बुधुआ ने महेँगू से पूछा :

“किसानों का राज ।” गम्भीर होकर महेँगू ने कहा ।

... “तो क्यों रे महेँगू ।” बुधुआ ने पुनः प्रश्न किया—“फिर ये जमींदार और पटवारी क्या करेंगे ।”

“इक मारेगे, और क्या करेंगे ।”

... बुधुआ ने डरते-डरते, पलकें तिलमिलाते हुए धीरे से पूछा—“ये कहाँ जायेंगे रे महेँगू ।”

“... गांधी महाराज का प्रताप ऐसा है कि इनके हाथ बंध जायेंगे, और बोल बन्द हो जायगा, तब यह किसानों के तलवे चाटेंगे ।” कह कर महेँगू अपनी दाद खुजलाने लगा ।

“तो फिर लगान किसको दिया जायगा ।”

“किसी को नहीं, लगान दिया गया, तो सुराज कैसा ।”

निराला जानते थे कि जब तक किसानों और मजदूरों के बीच रह कर कार्य नहीं किया जायेगा तथा उनके बच्चों को शिक्षित नहीं किया जायेगा, तब तक भारतीय ग्रामीण समाज में जागृति नहीं आयेगी । गांवों में जागृति लाने के लिए उस समय देश भक्त एवं क्रान्तिकारी युवक संगठन बना कर किसान एवं मजदूरों के बीच कार्य कर रहे थे । उपन्यास के पात्र विजय और अजीत उन्हीं क्रान्तिकारी युवकों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो समाज में फैली रूढ़ियों और अन्य समस्याओं के विरुद्ध संघर्षरत हैं ।

वीणा के माध्यम से निराला ने समाज में व्याप्त विधवा समस्या पर भी प्रकाश डाला है । युवावस्था में विधवा हो जाना और समाज के द्वारा पुनर्विवाह की अनुमति न मिलना विधवाओं के लिए कितना करुणाजनक था । यह वीणा के दैनिक जीवन के व्यवहार से स्पष्ट हो जाता है—“क्या विधवा-

जैसी दुखी विधाता की दूसरी भी सृष्टि होगी, जो सखियों में भी खुले प्राणों से बात-चीत नहीं कर सकती, भोग-सुख वाले संसार के बीच में रह कर भी भोग-सुख से जिसे विरत रहना पड़ता है, आँख के रहते भी जिसे घिरकाल तक दृष्टिहीन होकर रहना पड़ता है।¹ निराला विधवाओं की इस स्थिति के लिए धर्म के ठेकेदारों को दोषी ठहराते हैं -- "क्या एक बाजू कतर देने पर चिड़िया उड़ सकती है। स्त्रियों की दशा क्या ऐसी ही नहीं कर रखी यहाँ के कल्मष में डूबे, धर्म का ठेका कर रखने वाले लोगों ने।"² निराला विधवा-समस्या का एक मात्र हल वीणा का विवाह अजीत से कराकर, पुनर्विवाह बतलाते हैं, क्योंकि विवाह नारी की नैसर्गिक आवश्यकता है।

निरूपमा:

यह एक रोमानी सामाजिक उपन्यास है जो सन् 1936 में प्रकाशित हुआ था। उपन्यास का नायक कुमार योरोप की भाषाओं का अध्ययन करने के पश्चात् लन्दन से डी० लिट० की उपाधि लेकर भारत आता है तथा लखनऊ विश्वविद्यालय में सिफारिश के अभाव के कारण उसकी नियुक्ति नहीं हो पाती है। जब कि यामिनी बाबू केवल पी० एच०डी० होते हुए सम्बन्धों के आधार पर नियुक्त हो जाते हैं। यहीं पर कुमार की भेंट निरूपमा से होती है। निरूपमा जमींदार रामलोचन की पुत्री है। जमींदार की मृत्यु निरूपमा की अल्पायु में ही हो गई थी। इसी कारण उसके मामा योगेश और उनका पुत्र सुरेश जमींदारी का सारा कार्य संभालते हैं। दोनों निरूपमा के प्रति झूठे स्नेह का प्रदर्शन करते हैं वस्तुतः वह उसकी सम्पत्ति हड़पना चाहते हैं। कुमार नौकरी न मिलने के कारण हताश होकर जूतों पर पालिश करके अपने माता और भाई का पालन-पोषण करता है। कानपुर में उसके दो मकान उच्च शिक्षा प्राप्त करने के दौरान ही गिरवी रखे जा चुके थे। कुमार की माँ रामपुर में रहती है जहाँ के रूढ़िवादी समाज ने कुमार के विदेश प्रवास के कारण उसे जाति से बाहर कर दिया था। कुमार ब्राह्मण होकर जूतों पर पालिश करता है,

1. सं० ओंकार शरद : निराला ग्रन्थावली §2४ प्रथम संस्करण, पृ० 240 ।
2. वही पृ० 224 ।

जिसके कारण उसे जातिच्युत कर दिया जाता है ।

कुमार एक दिन निरूपमा के घर पॉलिश करने जाता है तो निरूपमा को ज्ञात होता है कि कुमार का गाँव उसी का जमींदारी में है और उसके कानपुर वाले दोनों मकान यामिनी बाबू ने गिरवी रखे हुए हैं । निरूपमा कुमार को मन से प्यार करने लगती है और उससे विवाह भी करना चाहती है लेकिन उसके मामा योगेश उसका विवाह यामिनी बाबू से करना चाहते हैं ।

निरूपमा अपनी ममेरी बहन नीली तथा भाई सुरेश के साथ गाँव आती है । गाँव आकर देखती है कि गाँव वालों ने कुमार की माँ तथा भाई का बहिष्कार कर रखा है । सुरेश ने भी उनको बाग तथा जमीन से बेदखल कर दिया है और वो बड़ी मुसीबत में अपना दिन व्यतीत कर रहे हैं । सब स्थितियों के ज्ञात होने पर वह कुमार की माँ से क्षमा माँगती है और छोटे भाई रामचन्द्र की सहायता करती है । कानपुर वाले दोनों मकान भी खरीद कर रामचन्द्र को दिलाती है ।

इधर कुमार का परिचय कमल से होता है, जो निरूपमा की सखी है । कमल कुमार की विद्वता से प्रभावित होकर उसे दो सौ रुपये मासिक पर अपने लिए शिक्षक नियुक्त कर लेती है । कमल और कुमार की घनिष्टता को देख कर निरूपमा को संशय होता है, लेकिन उसके इस भ्रम को कमल शीघ्र ही दूर कर देती है । कमल निरूपमा के साथ मिल कर एक योजना बनाती है । यामिनी बाबू को भ्रम में डाल कर उनका विवाह निरूपमा के बजाय सुशीला से करा देती है । जिसके साथ यामिनी बाबू ने विश्वासघात किया था । इसी के साथ-साथ कमल निरूपमा और कुमार का विवाह भी सम्पन्न करा देती है । इस समाचार को सुनकर पहले तो गाँव वाले कुमार व निरूपमा को जातिच्युत करना चाहते हैं, लेकिन मुखिया के कहने पर सभी विवाह को स्वीकार कर लेते हैं ।

"निरूपमा" उपन्यास में लेखक ने श्रम की महत्ता पर विशेष बल दिया है । कुमार लन्दन से उच्च शिक्षा प्राप्त करके आता है लेकिन उसे नौकरी नहीं मिलती क्योंकि कुमार से सम्बन्धित कोई भी व्यक्ति विश्वविद्यालय के किसी उच्च

पद पर नहीं है । जातिवाद तथा भाई भतीजावाद की व्यवस्था के फलस्वरूप कुमार से कम शिक्षित यामिनी बाबू को विश्वविद्यालय में नौकरी मिल जाती है ।

कुमार नौकरी न मिलने पर अदम्य साहस का परिचय देता है । वह सवर्ण जाति एवं सुशिक्षित होते हुए भी जूतों पर पालिश करके अपने संस्कारों, सामाजिक रूढ़ियों मान्यताओं आदि का उलंघन करते हुए श्रम की महत्ता स्थापित करता है ।

उपन्यास में यामिनी, योगेश व सुरेश आदि पात्रों के द्वारा निराला ने स्वार्थी लोगों का यथार्थ चित्रण करने का प्रयास किया है । योगेश तथा सुरेश ऊपरी मन से निरूपमा को बहुत स्नेह करते हैं लेकिन प्रछन्न रूप से उनके मन में निरूपमा की सम्पत्ति हड़पने की भावना प्रबल है ।

उपन्यास में जमींदार वर्ग के अत्याचारों को भी उजागर किया गया है । सुरेश जमींदार वर्ग का ही प्रतिनिधित्व करता है । सुरेश जमींदारी प्रवृत्ति के कारण ही रियाया से दूरी बनाये रखने में विश्वास रखता है—

“गुरूदीन तिवारी, सीतल पाठक, मन्नी सुकुल, ललई मिसिर, कामता दुबे आदि मुख्य सब-के-सब जन जोत रहे थे । सुरेश के गाँव आने पर शिष्टाचार करने गये थे, हली के लिये पकड़ लिये गये । कुछ और भी किसान थे । जमींदार के खेत पहले बोये जाते हैं, कायदा है, -”

निरूपमा का विवाह कुमार से कराकर निराला जाति-पाँति की दीवार को तोड़ कर अपने प्रगतिशील दृष्टिकोण का परिचय देते हैं । निरूपमा, कुमार, कमल प्रगतिशील विचारों के हैं । वे जाति, वर्ग आदि में विश्वास नहीं रखते हैं । वहीं दूसरी तरफ रूढ़िवादी तत्त्व केवल ग्रामीण समाज में ही नहीं हैं, बल्कि पढ़े-लिखे शहरी-वर्ग में भी विद्यमान हैं । कुमार के पॉलिश करने पर पढ़े लिखे शहरी-वर्ग की प्रतिक्रियाओं के द्वारा उनकी मानसिकता को देखा जा सकता है--

“हम चार रुपये फार्म दे रहे थे मोपासाँ के अनुवाद के, वह आप को नहीं मंजूर हुआ, आखिर पालिश और ब्रश लेकर बैठे।” पं० रामखेलावन सिंह मुँह बिगाड़ कर बोले—सात रुपये घंटे की पढ़ाई लगवा रहे थे नहीं भायी, अब चमार बन कर, पुरुखों को तारो।”¹

“निरूपमा” में भी कथा का केन्द्र उपन्यास की नायिका निरूपमा का व्यक्तित्व है। आरम्भ में निरूपमा अपने मामा की इच्छा से कार्य करती है लेकिन धीरे-धीरे महत्त्वपूर्ण निर्णय स्वयं लेने लगती है। परिस्थितियों के विरुद्ध समाज की विगलित मानसिकता को चुनौती देती है तथा आत्मविश्वास से समाज में प्रचलित बन्धनों को तोड़ कर कुमार के साथ विवाह करके आने वाले परिवर्तनों की तरफ संकेत करती है।

प्रभावती :

“प्रभावती” उपन्यास की भूमिका में निराला ने इसे एक रोमाण्टिक उपन्यास कहा है। यह उपन्यास सन् 1936 में प्रकाशित हुआ था। इसका कथा-क्षेत्र कान्यकुब्जेश्वर जयचन्द के अधीन रहने वाले डलमऊ राज्य का है।

एक दिन लालगढ़ रियासत का राजकुमार देव घोड़े पर चढ़ा हुआ पड़ौसी राज्य डलमऊ में प्रवेश कर जाता है। वहाँ जंगल में उसकी भेंट डलमऊ के राजा महेश्वर सिंह की बेटी प्रभावती से होती है। वहीं पर दोनों एक दूसरे के प्रति आकर्षित हो जाते हैं और देव प्रभावती के साथ डलमऊ राज्य चला जाता है। प्रभावती अपने प्रेम की कथा अपनी दासी एवं सखी यमुना को बताती है। यमुना की सहायता से प्रभावती देव से छिप कर विवाह कर लेती है। विवाहोपरान्त वे हर्षोल्लास के साथ नौका विहार करके उत्सव मनाते हैं।

राजा महेश्वर सिंह अपनी कन्या का विवाह मनवा के सरदार राजा बलवन्त सिंह से करना चाहते थे। इसीलिए राजा महेश्वर सिंह तथा बलवन्त

सिंह रात के पिछले पहर में प्रभावती और राजकुमार देव की नौका को घेर लेते हैं। प्रभावती एवं यमुना तैर कर गंगा पार कर जाती हैं और कुमारदेव बलवन्त सिंह के सैनिकों से लड़ता हुआ मूर्छित हो जाता है। उसी अवस्था में उसे बन्दी बना कर मणिपुर ले जाते हैं। यमुना बलवन्त सिंह की ही बहन थी, लेकिन वह एक साधारण सैनिक वीर सिंह का वरण करने के कारण निर्वासित जीवन व्यतीत कर रही थी।

प्रभावती के पास जो आभूषण थे उनमें से कुछ को बेच कर प्रभावती और यमुना प्रयाग पहुँचती हैं। प्रयाग में उनकी भेंट पं० शिवस्वरूप से होती है, जो डलमऊ से कुमारदेव के घोड़े को रखने के कारण भाग कर आया था। यमुना प्रभावती को साथ लेकर अपने पति वीरसिंह से मिलती है, जो स्वामीनन्द के वेष में वहाँ रह रहा था तथा रामसिंह के साथ देश की रक्षा के लिए जासूसी करता था। रामसिंह विद्या नाम की एक नर्तकी से प्रेम करता है, जिसका आना-जाना कान्यकुब्जेश्वर के दरबार में भी था। एक दिन राम सिंह ने कान्यकुब्ज को जाते हुए कुछ व्यक्तियों से महेश्वर तथा बलवन्तसिंह के पत्र छीन लिए, जो कुमार देव के पिता महेन्द्र पाल के विरुद्ध प्रयत्न से सम्बन्धित थे। राम सिंह अपनी प्रेमिका नर्तकी विद्या की सहायता से राजा महेन्द्र पाल को बन्दीगृह से मुक्त कराने में सफल हो जाता है और स्वयं भी बाद में निर्दोष सिद्ध होने के कारण छोड़ दिया जाता है।

राजकुमार देव को बलवन्त सिंह अपने राज्य में बन्दी बनाकर रखे हुए था, बलवन्त सिंह की छोटी बहन रत्नावली कुमार देव पर मुग्ध हो जाती है। उधर बलवन्त सिंह को कान्यकुब्ज जाते हुए यमुना का दल लूट लेता है। बलवन्त के कान्यकुब्ज पहुँचने पर राजा जयचन्द महेन्द्रपाल और देव का वध करने का आदेश देता है। राजकुमारी रत्नावली क्योंकि देव से प्रेम करने लगी थी इसीलिए वह राज्य के समस्त सरदारों को अपने भाई {बलवन्त सिंह} के विरुद्ध विद्रोह को भड़काती है। इधर प्रभावती एवं उसके साथी दुर्ग की रक्षा का संकल्प लेते हैं। प्रभावती देव के प्रति रत्नावली का प्रेम देख कर उनके रास्ते से

हट जाती है। राजा महेश्वर, राजराजेश्वरी, सिन्धु, यमुना, प्रभावती आदि की वास्तविकता जान कर उनके साथ मिल जाते हैं।

कान्यकुब्ज नरेश जयचन्द की पुत्री संयोगिता के स्वयंवर में प्रभावती सहायता करती है, क्योंकि उसने संयोगिता को वचन दिया था। पृथ्वीराज से संयोगिता का स्वयंवर कराते हुए प्रभावती भीष्मा रूप से घायल हो जाती है और उत्सव में आये हुए कुमार देव से रत्नावली के साथ विवाह-बन्धन में बंधने का संकेत करती हुई मृत्यु को गले लगा लेती है।

इस उपन्यास में भी, निराला ने अपने अन्य उपन्यासों की भांति, स्त्री पात्रों को विशेष महत्त्व दिया है। यह उपन्यास की केन्द्रीय पात्र प्रभावती व यमुना की भूमिका से स्पष्ट हो जाता है। यमुना, प्रभावती तथा रत्नावली आदि स्त्री पात्र साहसी एवं निडर हैं। वे सब राजनीति में परिपक्व हैं और देशभक्ति भी उनके अन्दर पुरुषों से अधिक है। वे सब देश पर आयी संकट की घड़ी में युद्ध का संचालन जहाँ परिपक्वता के साथ करती हैं, वहीं स्वच्छन्द प्रवृत्ति की भी हैं। उनके द्वारा किए जाने वाले प्रेम विवाह उनकी स्वच्छन्द प्रवृत्ति के द्योतक हैं।

प्रभावती का कथानक ऐतिहासिक है और तीन राज्यों की घटनाओं को केन्द्र बनाकर यह उपन्यास लिखा गया है, जिसके कारण उपन्यास में कहीं-कहीं शिथिलता भी आ गई है। घटनाओं की अधिकता होने के कारण कथानक में उबाऊपन भी है। लेकिन फिर भी उपन्यास की सफलता यह है कि निराला ने यहाँ राजपूत राजाओं के अविश्वास, आपसी फूट, राग-द्वेष के वातावरण और तत्कालीन भारत की राजनीति के यथार्थ रूप पर यथार्थवादी ढंग से प्रकाश डाला है।

"प्रभावती" की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है, इसी कारण तत्कालीन युगीन परिवेश भी सजीव ढंग से उभरता है। इस उपन्यास में निराला भारत की मुक्ति के लिए कुमारदेव, प्रभावती, यमुना आदि पात्रों के द्वारा क्रान्ति का आह्वान करते हैं। "राजनीति, विराजमान होने की पद्धति.... है"। यह

वाक्य लिखकर निराला अंग्रेजों पर प्रहार करते हैं। उपन्यास की क्रान्तिकारी पात्र यमुना विदेशी आक्रमणकारियों से देश की रक्षा करने के लिए लोगों को संगठित करती हैं और नायिका प्रभावती सिपाहियों से विद्रोह के लिए कहती है--“सुनो, यह जितना अर्थ विलास में खर्च होता है उसका एक चौथाई भी तुम्हें नहीं मिलता, समझते हो।”¹ प्रभावती के इस वाक्य द्वारा प्रतीकात्मक रूप से ब्रिटिश सरकार के भोग विलास की प्रवृत्ति का उद्घाटन हो जाता है। यह वाक्य सिपाहियों को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए भी उत्साहित करता है। इस उपन्यास में ऐतिहासिक उपन्यासों के सभी गुण उपलब्ध होते हैं। सब मिलाकर उपन्यास रोचक, पठनीय और शिक्षाप्रद है।

चोटी की पकड़ :

सन् 1946 में प्रकाशित उपन्यास “चोटी की पकड़” में निराला ने छायावादी भावुकता को छोड़कर, यथार्थ के धरातल को उपन्यास की पृष्ठभूमि बनाया है, जिसमें देश के राजनीतिक आन्दोलनों की कथां वर्णित है। इस उपन्यास को निराला का चार भागों में निकालने का विचार था, किन्तु उनकी अस्वस्थता के कारण केवल एक ही भाग में प्रकाशित हो सका।

प्रस्तुत उपन्यास की कथा इस प्रकार है। राजा राजेन्द्र प्रताप बहुत धनी व्यक्ति हैं। वे एक निर्धन परिवार के युवक को अपने व्यय से शिक्षा दिलाकर, उसका अपनी पुत्री से विवाह करके, घर जैवाई बना लेते हैं। कुछ समय के बाद युवक की विधवा बुआ भी आ जाती है। रानी साहिबा अपने दामाद की बुआ को दासी मुन्ना के हाथ बुलाती हैं तथा बुआ को अपमानित करती हैं। बुआ भी रानी साहिबा को अपशब्द कह देती है। रानी साहिबा बुआ के द्वारा हुए अपमान का बदला लेने के लिए दासी मुन्ना के द्वारा योजना बना कर बुआ को अपमानित कर देती हैं।

उधर दूसरी ओर अंग्रेजों, सामन्तों और जमींदारों के कारण देश की

1. सं० ओंकार शरद : निराला ग्रन्थावली §1 §, प्रथम संस्करण, पृ० 384 ।

स्थिति अच्छी नहीं थी । बंगाल में बंग-भंग विरोधी व स्वदेशी आन्दोलन व्यापक रूप ले चुका था । अंग्रेजों ने बंग-भंग के द्वारा साम्प्रदायिकता के बीज बो दिए थे । जहाँ एक तरफ हिन्दू और राष्ट्रवादी मुस्लिम बंग-भंग के विरोध एवं स्वदेशी आन्दोलन में भाग ले रहे थे वहीं दूसरी तरफ कुछ लोग अंग्रेजों का साथ दे रहे थे । राजा राजेन्द्र प्रताप देश भक्तों में से थे । वह स्वदेशी और बंग-भंग विरोधी आन्दोलन के पक्ष में थे, इसी कारण उन्होंने क्रान्तिकारी प्रभाकर को अपने दुर्ग में स्थान दे रखा था जहाँ से वह गुप्त रूप से स्वदेशी तथा बंग-भंग के विरोध में प्रचार करता था ।

थानेदार यूसुफ जो राजा राजेन्द्र प्रताप के पुराने कोचमैन अली का पुत्र है, वह राजा साहब को स्वदेशी आन्दोलन के समर्थन और बंग-भंग के विरोध करने के प्रचार व प्रसार में लिप्त होने के कारण गिरफ्तार करना चाहता है ताकि अंग्रेज उससे खुश होकर, उसकी पदोन्नति करके इंस्पेक्टर बना दें । इसी कारण वह राजा साहब की रखैल सजाज़ को धर्म का वास्ता देकर राजा साहब का भेद जानने का प्रयत्न करता है ।

तीसरी ओर दासी मुन्ना कुछ चौकीदारों को अपनी चाल में फँसा कर दो लाख रुपये की चोरी कर लेती है और बुआ को रानी साहिबा के आगे झुकने पर विवश करती है । एक सिपाही बुआ की इज्जत से खेलना चाहता है, लेकिन अचानक वहाँ प्रभाकर आ जाता है और बुआ सिपाही की हवश का शिकार होने से बच जाती है । बुआ के कारण ही मुन्ना प्रभाकर को रानी साहिबा से मिलाती है तथा प्रभाकर रानी साहिबा से एक समझौता करके उन्हें भी स्वदेशी आन्दोलन के प्रचार में शामिल कर लेता है ।

उधर सजाज़ यूसुफ की चाल में न आकर राजा का कोई भेद नहीं बताती है । बाद में सजाज़ भी प्रभाकर के विचारों से प्रभावित होकर स्वदेशी-आन्दोलन में सम्मिलित हो जाती है और यूसुफ राजा से सम्बन्धित कोई भेद न मिलने के कारण निराश होकर लौट जाता है ।

वास्तव में, "चोटी की पकड़" उपन्यास में निराला ने तत्कालीन राजनीतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों पर यथार्थ रूप में प्रकाश डाला है कि

किस प्रकार अंग्रेजों ने धर्म के आधार पर बंग-भंग करके हिन्दू-मुस्लिम एकता को तोड़ा था और अपने शासन की नींव मजबूत करने के लिए साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया था :

प्रभाकर, राजा राजेन्द्र प्रताप आदि पात्रों के द्वारा निराला ने बंग-भंग के विरुद्ध संघर्ष करने वाले देश-भक्तों का चित्रण किया है । वहीं दूसरी तरफ स्वदेशी का प्रचार तथा प्रसार भी किया है, क्योंकि अंग्रेजों तथा भारतीय व्यापारियों के स्वार्थ के कारण भारतीय मज़दूरों की आर्थिक स्थिति बहुत चिन्ताजनक हो गई थी तथा छोटे-छोटे ग्रामीण उद्योगों की भी स्थिति बहुत चिन्ताजनक थी । इसी कारण राजनीतिज्ञों ने स्वदेशी के प्रचार पर बहुत बल दिया था । निराला ने भी प्रस्तुत उपन्यास में स्वदेशी आन्दोलन का प्रचार किया तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार पर बल दिया है । इस प्रकार निराला ने देश की आर्थिक प्रगति की ओर भी ध्यान केन्द्रित किया है ।

भारतीय राजाओं और अंग्रेजों की तानाशाही तथा जमींदारों के अत्याचारों एवं उनके शोषण की वृत्ति पर आधारित चरित्र को भी प्रस्तुत उपन्यास में निराला ने यथार्थपरक ढंग से उजागर किया है—“राज्य की क्रिया का ढंग सब स्थानों में एक-सा है । सब जगह एक ही प्रकार के नरकीय नाटक, षड्यंत्र, अत्याचार किए जाते हैं । सब जगह रेअय्यत की नाक में दम रहता है ।...जमींदार हो ताल्लुकेदार, राजा हो या महाराज, कृपा कभी अकारण नहीं करता...सारे राज्य में उसके खास आदमियों का जाल फैला रहता है । वह और उसके कर्मचारी प्रायः दुश्चरित्र होते हैं, लोभी, निकम्मे, दगाबाज ।निर्दोष युवतियों की इज्जत जाती है, रिश्वत में रूपए लिए जाते हैं..... पुलिस भी साथ ली जाती है ।”¹ इस प्रकार इस उपन्यास में आजादी से पूर्व की स्थितियों और समस्याओं का अच्छा चित्रण किया गया है ।

काले कारनामों :

निराला के कथा साहित्य में "काले कारनामों" एक महत्वपूर्ण रचना है तथा यह उपन्यास यथार्थ के धरातल पर लिखा गया था। इस उपन्यास में न तो अन्य उपन्यासों के समान घटनाओं और तिलस्मी कल्पनाओं का वातावरण है और न ही छायावादी दृष्टि सामने उभरकर आती है, बल्कि विविध वर्गों के पात्रों के द्वारा जमींदारों के स्वार्थवश षड्यन्त्र, पुलिस विभाग तथा अन्य सरकारी अधिकारियों के भ्रष्टाचार आदि को अपनी विषयवस्तु बनाया है। लेकिन बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि निराला अपनी अस्वस्थता के कारण संभवतः हिन्दी कथा साहित्य की इस महान कृति को पूर्ण नहीं कर सके और सन् 1950 में इसे अपूर्ण ही प्रकाशित करा दिया।

निराला ने "काले कारनामों" में बैतवाड़ा अंचल के राजपुर एवं सरायन नामक गाँवों को अपनी कथा का केन्द्र बिन्दु बनाया है। उपन्यास का नायक मनोहर अपने गाँव राजपुर में प्रतिदिन सरायन गाँव में रामसिंह के अखाड़े में कुश्ती में जोर करने जाता है और शाम को सरायन गाँव में ही अपने रिश्तेदार जमींदार रामरखन के यहाँ ठहर जाता है। प्रातः फिर अपने गाँव चला आता है। लेकिन गाँव के अन्य जमींदारों को मनोहर का सरायन आना-जाना अच्छा नहीं लगता है, क्योंकि उनकी धारणा है कि मनोहर के द्वारा कोई अनुचित कार्य करने पर भी, उसे दूसरे गाँव का होने के कारण कोई दण्ड नहीं दिया जा सकता। रामरखन को भी उसके इस कार्य से आपत्ति थी। एक दिन जोर करने के लिए जाते हुए मनोहर पर लीलाराम ने व्यंग्य कसा, लेकिन मनोहर ने कोई उत्तर नहीं दिया। एक अन्य जमींदार के पुत्र मनराखन से भी मनोहर की झड़प हो गई थी। अतः मनोहर के रिश्तेदार रामरखन ने जमींदार होने के कारण दूसरे जमींदार का साथ दिया और मनोहर को उसी वक्त घर छोड़ने की सलाह दी। मनोहर उसी समय रात की गाड़ी से बनारस चला गया और जमींदार यमुनाप्रसाद पहलवान रामसिंह को योजनानुसार

चोरी के झूठे आरोप में फँसा देते हैं। पहलवान रामसिंह पुलिस को दो सौ रुपये रिश्वत देकर छूटता है।

उधर मनोहर बनारस में आकर शूद्रों के एक मॉडल्ले में संस्कृत पढ़ाने लगता है। यद्यपि मनोहर सवर्ण वर्ग का था, लेकिन गाँव में जो शूद्रों पर सवर्ण वर्ग के द्वारा होता हुआ अन्याय देखा था, उसके कारण वह उच्चवर्ण वालों से घृणा करने लगा तथा सार्वजनिक रूप से शूद्रों के घर का भोजन भी खाने लगा। बनारस में ही मनोहर ब्रिटिश शासन के अत्याचारों से धुब्ध एक विधवा रानी विमला के सम्पर्क में आता है। विमला मनोहर की आर्थिक सहायता करती है। इसी के फलस्वरूप मनोहर किसानों एवं शूद्रों को संगठित करने में लग जाता है।

उधर मनोहर के पिता एवं उसकी माता उसके अकारण गायब हो जाने से बहुत दुःखी होते हैं और मनोहर का पता जानने के लिए बहुत दौड़-भाग करते हैं लेकिन मनोहर का पता उन्हें कहीं नहीं चलता। गाँव के गरीब किसान भी मनोहर के लिए चिंतित थे और वे सब मिलकर मनोहर के दुःखी माँ-बाप को सान्त्वना देते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में निराला ने जमींदार वर्ग तथा ब्रिटिश शासन व्यवस्था के दमन चक्र में फँसे निर्धन किसानों और शूद्रों के पिंसने को आधार बनाया है। इस उपन्यास में निराला का यह दृष्टिकोण प्रकट हुआ है कि बिना विद्रोह के निर्धन किसानों एवं शूद्रों की मुक्ति असंभव है क्योंकि किसान एवं निम्नवर्ग की स्थिति में कोई परिवर्तन लक्षित नहीं हुआ था। इसीलिए उनका गांधीवादी विचारधारा के प्रति मोहभंग हो चुका था। इस विषय में राजकुमार सैनी का कथन द्रष्टव्य है — “काले कारनामे उपन्यास तक आते-आते निराला गाँधीवाद की सीमाओं को अच्छी तरह पहचान चुके थे। आजादी के बाद भी स्थिति नहीं बदली। गाँवों में जमींदारों का वही आतंक और पुलिस का वही दमन चक्र।”¹

प्रस्तुत उपन्यास में निराला नायक मनोहर के द्वारा शूद्रों और निर्धन किसानों को संगठित कराते हैं, ताकि वह संगठित होकर इस व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह करें और अपने अधिकार प्राप्त कर सकें। उपन्यास के नायक मनोहर को जमींदार वर्ग तथा ब्राह्मणों के कार्य कलापों से घृणा हो गई थी इसीलिए वह जाति व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह करके शूद्रों के यहाँ भोजन करता है। मनोहर का शूद्रों के यहाँ भोजन करने का प्रसंग निराला की क्रान्तिकारी भावना एवं प्रगतिशील विचारों का समर्थन करते हुए जाति व्यवस्था के विरुद्ध समाज में होने वाले स्वस्थ परिवर्तन की तरफ तर्कित करता है। जमींदारों के कुचक्र के कारण मनोहर को गाँव छोड़ देना पड़ता है। उसके गाँव से चले जाने के बाद किसान उसकी राह देख रहे हैं, ताकि वह आकर, जमींदार एवं शासन व्यवस्था के दमन चक्र से मुक्ति दिलाये "वह हमारा भैया है। उसको कोई डर नहीं, हम जानते हैं कि लोगों ने उसको रहने न दिया, लेकिन वह बड़ा है जो सर फोड़ कर टूटे, वह हमारी पुकार है, हमारे आँसू से टपक कर भाप बन कर उड़ गया है, कभी खुशी की बारिश लायेगा।" अतः हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत कृति में निराला ने मनोहर के माध्यम से पिछड़े वर्ग एवं निर्धन किसानों में व्याप्त रुढ़िग्रस्तता, धार्मिक कुरीतियों एवं जमींदार आदि के विरुद्ध विद्रोह करके सामाजिक चेतना का निर्माण किया है।

चमेली :

निराला ने सन् 1939 में "चमेली" नामक उपन्यास लिखा, किन्तु यह उपन्यास पूर्ण नहीं हो सका था और इसके अपूर्ण अंश को ही बाद में कहानी के रूप में "रूपाभ" नामक पत्रिका में प्रकाशित किया गया। यह उपन्यास अपूर्ण होते हुए भी बहुत महत्वपूर्ण है। डाक्टर निर्मल जिन्दल के अनुसार-- "अपूर्ण होने पर भी इस कृति की गणना श्रेष्ठ आँचलिक रचनाओं में की जा सकती है। वास्तव में यह निराला की विविधमुखी प्रतिभा का ज्वलन्त

उदाहरण है”।

उपन्यास की नायिका चमेली एक निर्धन किसान की बेटी है। उसके सौन्दर्य पर जमींदार बख्तावर सिंह मुग्ध है। एक दिन चमेली अकेली खेत में काम कर रही होती है कि जमींदार उपयुक्त अवसर देख कर उसे नाना प्रकार के प्रलोभन देता है और जब सफलता नहीं मिलती है तो बलपूर्वक व्यभिचार करना चाहता है। चमेली इस घटना से हतप्रभ होकर चिल्लाने लगती है। उसकी आवाज सुनकर निकट ही खेत में काम करता हुआ महादेव भाग कर आता है। जमींदार स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने के लिए अन्य किसानों के घटनास्थल पर पहुँचने से पहले ही चमेली तथा महादेव के अवैध सम्बन्धों की घोषणा करता है। जमींदार के चापलूस इस आरोप को सत्य मान कर महादेव को दोषी ठहराते हैं। चमेली के पिता को भी अपनी कन्या पर संदेह हो जाता है और वह इस कुकर्म के लिए उसे डाँटता है, लेकिन चमेली की माँ उन दोनों को निर्दोष मानती है। चमेली का पिता दुखी गाँव के पंडित शिवदत्त के पास जाकर सहायता मांगता है, इसीलिए उसे पंडित जी को एक रूपया भेंट स्वरूप देना पड़ता है।

प्रस्तुत उपन्यास अपूर्ण होते हुए भी ग्रामीण समाज के यथार्थ पर पूर्ण रूप से प्रकाश डालता है। निराला ने इसमें जमींदार पटवारी आदि के निर्मम अत्याचारों को उजागर करते हुए, गाँव के निर्धन किसानों की मानसिकता का भी सफल चित्रण किया है। विवश एवं असहाय किसान यह जानते हुए भी कि चमेली के साथ जमींदार ने ही कुकर्म करना चाहा होगा, फिर भी वो जमींदार को दोषी न ठहराते हुए समस्त आरोप महादेव और दुखी की बेटी चमेली के ऊपर ही मढ़ देते हैं “तेरी यह जुवंटा बिटिया भी समझती है, देश के धिंगरों को बुलाने के लिए रख छोड़ा है उसे घर में। भर्तार को तो चबा गई ब्याह होते ही, इससे नहीं समझ में आया कि कैसी है।”² निराला

1. निराला का गद्य साहित्य, प्रथम संस्करण, पृ० 101।

2. सं० ओंकार शरद : निराला ग्रन्थावली १, प्रथम संस्करण, पृ० 127।

ने यह वाक्य लिख कर स्पष्ट कर दिया है कि ग्रामीण समाज में उस समय विधवाओं की स्थिति अच्छी नहीं थी ।

निराला ने चमेली के द्वारा एक साहसी एवं निडर नारी के चरित्र का सफल अंकन किया है । चमेली अन्याय को चुपचाप सहन नहीं करती है, बल्कि साहस के साथ अपने ऊपर हुए अन्याय के विरुद्ध विद्रोह करती है । समाज के व्यंग्य-वाणों का तीखा उत्तर भी देती है । जब जमींदार द्वारा लगाये गये झूठे लांछन के लिए अन्य गाँव वालों के साथ उसका बाप दुखी भी उसे ही दोषी ठहराता है, तो उसके विद्रोही रूप की स्पष्ट झलक हमें दिखायी देती है--"चमेली को देखते हुए दुखी ने कहा--"क्यों री, नाक कटा ली न तूने ।" "अधिर में तुझे अपनी नाक न देख पड़े तो मेरा क्या कसूर है ।" चमेली ने बाप को जवाब दिया दुखी हैरान हो गया । कहा--"अरी जमीन पर पैर रख कर चल ।"

"तो तू क्या देखता है, किसी के सर पर पैर रख कर चलती हूँ, जमींदार के सिपाही की तरह ।" दुखी डरा । फिर जमींदार के प्रताप का सहारा लेकर बोला--"अरी, आँख में माड़ा न छाए...कुछ देख ।" "मैं खूब देखती हूँ । माड़ा छाया है लोगों की आखों में और तेरी भी ।"

अतः हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने ग्रामीण समाज का यथार्थपरक चित्रण किया है और जमींदार वर्ग के द्वारा हुए अत्याचारों से मुक्ति के लिए विद्रोह का स्वर बुलंद किया है । डाक्टर हीरालाल बाछोटिया के अनुसार--"निराला की विद्रोही प्रकृति इसमें चरमोत्कर्ष पर है । उच्च एवं अधिकारी वर्ग के शोषण का शिकार निम्न वर्ग अत्याचारों को चुपचाप सहते आये हैं, किन्तु निम्न वर्ग की नई पीढ़ी इस उत्पीड़न के प्रतिकार और विद्रोह के लिए प्रस्तुत हो गई है" ² अतः हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत उपन्यास अपूर्ण

1. सं० ओंकार शरद : निराला ग्रन्थावली §1 §, पृ० 128 ।

2. निराला साहित्य का अनुशीलन, संस्करण-1977, पृ० 23 ।

होते हुए भी ग्रामीण समाज के जीवन परिवेश पर यथार्थरूप में प्रकाश डालता है और पाठकों का ध्यान आकर्षित करके उन्हें ग्रामीण समाज में कार्य करके स्वस्थ मूल्यों को स्थापित करने की प्रेरणा देता है ।

“अप्सरा” का स्थान :

निराला के अन्य उपन्यासों की प्रमुख समस्याओं का विश्लेषण हम कर चुके हैं और इस प्रकार निराला की जीवन दृष्टि से भी परिचित हो चले हैं । अब हम प्रस्तुत संदर्भ में “अप्सरा” और इसकी समस्याओं पर विश्लेषणात्मक दृष्टि से विचार करेंगे ।

“अप्सरा” में निराला ने नारी-समस्या को प्रस्तुत किया है । जैसा कि हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं निराला का दार्शनिक दृष्टिकोण भी यहाँ स्पष्ट होता है । निराला पर स्वामी विवेकानन्द के व्यावहारिक अद्वैतवाद का प्रभाव पड़ा और वे मनुष्य को ईश्वर और नारी को शक्ति, दुर्गा या सरस्वती मानते हैं । डॉ० बुद्धसेन नीहार का कथन द्रष्टव्य है--“निराला नारी को शक्ति का प्रतिरूप मानकर चलते हैं । यह उनके जीवन-दर्शन का मुख्य भाग है । वेदान्तीय अद्वैतवाद में आस्था रखने के कारण ही निराला नारी को शक्ति अर्थात् परम शक्ति का प्रतीक मानते हैं ।”¹ वे नारी को मूलतः नारी मानते हैं, वेश्या नहीं, क्योंकि वह भी पुरुष की भाँति पवित्र है । निराला ने अपने कथा साहित्य में नारी को गरिमामय स्थान दिया है । इसका कारण तत्कालीन परिस्थितियाँ थीं, क्योंकि उस समय समाज में नारियों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थीं । वे सामाजिक रूढ़ियों, कुसंस्कारों और धार्मिक अंध-विश्वासों की शिकार थीं । अब क्योंकि निराला ने अपनी युगीन समस्याओं से आँखें बन्द नहीं रखीं थीं, बल्कि खुले तौर पर उन समस्याओं पर विचार किया और नारियों की स्थिति के सम्बन्ध में अपना प्रगतिशील दृष्टिकोण

1. विश्वकवि निराला, प्रथम संस्करण, पृ० 334 ।

प्रस्तुत किया। इसलिए यह स्वाभाविक है कि उन्होंने अपने कथा साहित्य में नारी-समस्या को विशेष महत्व दिया। इसी दृष्टि से अप्सरा का विशेष महत्व है। निराला ने अपने कथा साहित्य में नारियों के स्वच्छंद व्यक्तित्व का चित्रण किया है। निराला के सभी उपन्यासों की नारी पात्र स्वच्छंद प्रवृत्ति की हैं, जो स्वतन्त्रता के साथ सभी क्षेत्रों में प्रकट होती है और समाज की रूढ़िग्रस्त मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोही रूप धारण करती हैं। प्रेम के सम्बन्ध में भी वह स्वतंत्र धारणा रखती हैं। वे अपना विवाह समाज विहित आधार पर नहीं करती हैं, बल्कि अपना जीवन साथी स्वयं चुनती हैं। इस प्रकार निराला नारी स्वतंत्र्य के समर्थक हैं।

“अप्सरा” उपन्यास की इसलिए आज भी सार्थकता है, क्योंकि इसमें निराला ने कनक के माध्यम से नारी समस्या को उठाया है। भारत को स्वतन्त्रता मिले हुए लगभग चालीस वर्ष हो गये हैं, फिर भी नारियों की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया है। आधुनिक भारत के समाज में आज भी नारी को पुरुषों के समान अधिकार नहीं मिले हैं। हम कह सकते हैं कि नारियों पर होने वाले अन्याय स्वतन्त्रता पूर्व से भी ज्यादा बढ़े हैं। बल्कि नारियों के ऊपर होने वाले अत्याचार क्रूरता की सीमा को भी पार कर गये हैं। आज भी स्वतन्त्र भारत में दहेज न मिलने के कारण नारियों को जिन्दा जला दिया जाता है। सती प्रथा किसी-न-किसी सीमा तक आज भी हमारे समाज में विद्यमान है। सामन्ती एवं साम्राज्यवादी अवशेषों के चिन्ह वेश्यालयों के रूप में हमारे सामने हैं और दिन-प्रतिदिन हजारों नारियाँ परिस्थितियों वश वेश्या बनने को बाध्य हो रही हैं। मुस्लिम समाज के अभिजात वर्ग में बहुपत्नी प्रथा एवं तलाक जैसी कुप्रथाओं के व्याप्त होने के कारण बहुत सी नारियों को वेश्यालयों की शरण में जाना पड़ता है।

जैसा कि कहा जा चुका है “अप्सरा” उपन्यास की कथा का केन्द्र भी निराला के अन्य उपन्यासों के समान नारी और उनकी समस्या है। निराला ने अपने उपन्यास अलका में जहाँ वीणा के माध्यम से विधवा समस्या को और

उपन्यास की नायिका अलका के माध्यम से अशिक्षित असहाय ग्रामीण नारी का चित्रण किया है, जो उच्च शिक्षा प्राप्त न होने के कारण अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध विद्रोह भी प्रकट नहीं कर सकती है, वहीं अलका उच्च शिक्षा प्राप्त करके गम्भीर से गम्भीर विषयों पर अपने प्रगतिशील विचार प्रकट करती है और सामाजिक कार्यों में भी पुरुष से कन्धे से कन्धा मिलाकर हिस्ता लेती है। "अप्सरा" उपन्यास में कनक के माध्यम से निराला ने वेश्या समस्या को उठाया है। उपन्यास की नायिका कनक वेश्यापुत्री है। जिसका भविष्य अपनी माँ सर्वेश्वरी के समान ही पूर्व निश्चित है। क्योंकि वह वेश्या पुत्री है, इसलिए उसे भी वेश्या बनना है। लेकिन यहाँ निराला वेश्याओं के पूर्व-निश्चित भविष्य के दृष्टिकोण के विरुद्ध विद्रोह करते हैं। क्योंकि वेश्याओं का पूर्व-निश्चित भविष्य सम्पूर्ण स्त्री जाति पर कलंक और अन्याय है। निराला नारी को दुर्गा, शक्ति, सरस्वती मानते हैं। इसलिए अगर कोई नारी परिस्थितियों-वश वेश्या हो गयी है, तो उसकी पवित्रता पर कोई आँच नहीं आती है। बल्कि वह वेश्या बनने से पूर्व के समान ही पवित्र है। इसीलिए निराला वेश्याओं को भी समाज में ससम्मान स्थान देने के समर्थक हैं।

"अप्सरा" की कनक वेश्यापुत्री होते हुए भी एक सुसभ्य और शिक्षित नारी है, जिसके मन में उच्च भावनाएँ हैं। वह वेश्यावृत्ति जैसे घृणित पेशे को छोड़कर पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन व्यतीत करने की आकांक्षा रखती है। कनक की माँ सर्वेश्वरी भी वेश्या होते हुए भी नहीं चाहती है कि उसकी बेटी भी उसी के समान वेश्यावृत्ति के धन्दे को अपनाये। कनक शकुन्तला नाटक में अभिनय करते हुए, दुष्यन्त {राजकुमार} से परिणाय सूत्र में बँध जाती है, जिसे वह सच मान लेती है और राजकुमार की सेवा पत्नी के रूप में करती है। इस विषय में उसका कथन द्रष्टव्य है--"तोइस"। कनक ने आग्रह से कहा। फिर उठकर हाथ की बुनी, बेल-बूटेदार, एक पंखी ले आयी, और बैठकर झलने लगी।¹

1. अप्सरा : निराला, चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ 48 ।

कनक की माता को कनक के इस व्यवहार को देखकर जहाँ बड़ी प्रसन्नता होती है वहीं कनक के भविष्य-सुख की चिन्ता होती है कि राजकुमार उसे क्या अपनी अर्द्धांगिनी स्वीकार करेगा--“कनक के भविष्य सुख की कल्याण कल्पना से माँ की आँखों में चिन्ता की रेखा अंकित हो गयी ।”¹

कनक की धमनियों में जयनगर के महाराज रणजीत सिंह का खून है । लेकिन क्योंकि वह एक वेश्या से उत्पन्न है, इसलिए राजकुमार कनक को हृदय से प्रेम करते हुए भी समाज के डर के कारण उसे पत्नी के रूप में स्वीकार करना नहीं चाहता है--“राजकुमार के हृदय में लज्जा, अनिच्छा, घृणा, प्रेम, उत्सुकता, कई विरोधी गुण थे, जिनका कारण बहुत कुछ उसकी प्रकृति थी, और थोड़ा-सा उसका पूर्व संस्कार तथा भ्रम ।”² निराला समाज में व्याप्त इसी भ्रम के विरुद्ध विद्रोह करते हैं, जिसके कारण हजारों नारियों को नारकीय जीवन व्यतीत करना पड़ता है और नवयुवक हृदय से वेश्याओं को पारिवारिक जीवन प्रदान करना चाहते हैं, लेकिन समाज द्वारा बहिष्कार के भ्रम से डरकर वह पहल नहीं कर पाते हैं । निराला नवयुवकों के हृदय में बैठे समाज द्वारा बहिष्कार के भ्रम को तारा, चन्दन, नन्दन जैसे प्रगतिशील विचार वाले पात्रों के माध्यम से तोड़ते हैं । इन पात्रों की सहमति मिलने पर राजकुमार कनक से विवाह कर लेता है । निराला वेश्यापुत्री कनक का विवाह एक सम्य और शिक्षित पुरुष से कराकर समाज की रुढ़िगुस्त मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोह करते हैं और अपना दार्शनिक दृष्टिकोण देते हैं कि अगर वेश्याओं को पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन व्यतीत करने का अवसर प्राप्त हो तो वह भी इस सामाजिक मर्यादा को निभाने के लिए सहर्ष तैयार हैं ।

निराला ने अपने अन्य उपन्यासों की भाँति “अप्सरा” में भी यह दृष्टिकोण दिया है कि हमें अपने पुराने संस्कारों, समाज में व्याप्त सड़ी-गली

1. अप्सरा : निराला, चतुर्थ संस्करण, पृ० 63 ।

2. वही पृ० 94 ।

मान्यताओं व धार्मिक रुढ़िग्रस्तता को छोड़ना ही पड़ेगा जिनके कारण एक मनुष्य दूसरे मनुष्य पर अत्याचार करता है। निराला ने कनक के द्वारा उन लोगों पर व्यंग्य किया है, जो रुढ़िवादी होने के कारण एक वेश्या को छूने में भी पाप समझते हैं और किसी नारी का पढ़ा लिखा होना जिनकी दृष्टि में महापाप है--“कनक को हिन्दू-समाज से बड़ी घृणा हुई, यह सोचकर कि क्या वह मनुष्य नहीं है। अब तक मनुष्य कहलाने वाले समाज के बड़े-बड़े अनेक लोगों के जैसे आचरण उसने देखे हैं, क्या वह उनसे किसी प्रकार भी...।”

दूसरी ओर तारा के माध्यम से भी निराला ने नवीन सामाजिक-मूल्यों की स्थापना भी की है और हमें तारा के माध्यम से उस समय नारी जाति में आ रही जागृति का भी संकेत मिलता है। नारियों के प्रति जनता के विचारों में परिवर्तन आ रहा था और नारियाँ शिक्षा, कला तथा अन्य सामाजिक कार्यों के क्षेत्र में रुचि लेने लगी थीं। चन्दन की भाँती तारा पढ़े-लिखे लोगों की मानसिकता में परिवर्तन आने के कारण ही उच्च शिक्षा प्राप्त करती है।

“अप्सरा” उपन्यास में लेखक ने नारी समस्या को उठाया है, किन्तु आनुषंगिक रूप से अन्य समस्याओं का भी उठाया है। अन्य समस्याओं में किसान तथा तत्कालीन राजनीतिक अवस्था पर भी प्रकाश डाला है। हालाँकि निराला ने अलका, निरूपमा, काले कारनामे आदि की भाँति तो किसान समस्या को “अप्सरा” में स्थान नहीं दिया है लेकिन संयुक्त प्रान्त में चलाये गये किसान आन्दोलन का स्वरूप हमारे सामने आनुषंगिक रूप में आता है। लेकिन हम देखते हैं कि “अप्सरा” के किसान आन्दोलन में किसानों की आत्मजागृति और विद्रोह का वह रूप नहीं है, जो “अलका” के किसानों में या 1929 के किसान आन्दोलन का रहा था।

“अलका” के विजय तथा अजीत, “चोटी की पकड़” का प्रभाकर,

“प्रभावती” उपन्यास की यमुना की भाँति ही “अप्सरा” का चन्दन भी देश को अंग्रेजों की पराधीनता से मुक्ति दिलानेका दृढ़ संकल्प लिए हुए और वह क्रांतिकारी गतिविधियों में भी भाग लेता है। वह नवयुवकों का संगठन करके भारत की मुक्ति के लिए क्रान्ति का आह्वान करता है। डॉ० रामविलास शर्मा का कथन द्रष्टव्य है--“इस छाया लोक के नीचे किसान हैं, उनकी मेहनत से रेश करने वाले राजा और जागीरदार हैं, किसानों का संगठन करने वाले क्रान्तिकारी हैं किन्तु चित्र का यह हिस्सा उभरकर नहीं आता है।”¹

निराला ने विजयपुर के कुँवर साहब व गोरे पुलिस अफसर हैमिल्टन के द्वारा तत्कालीन अभिजात वर्ग एवं सरकारी अफसरों के अमानवीय कृत्यों और षड्यन्त्रों का उद्घाटन किया है। जो किसानों पर बर्बर अत्याचार किया करते थे और गाँव की बहू-बेटियों की इज्जत से भी खेलते थे। कुँवर साहब व पुलिस अफसर हैमिल्टन के चरित्र के सन्दर्भ से समकालीन व्यवस्था का भी परिचय मिल जाता है। भारत को स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् भी आम-आदमी की स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। आम आदमी का शोषण आज भी हो रहा है। केवल शोषणाकर्तियों के चेहरे बदल गये हैं। विजयपुर के कुँवर साहब का स्थान तथाकथित नेताओं ने, बड़े किसानों, पूँजीपति वर्ग ने ले लिया है और गोरे पुलिस अफसर हैमिल्टन का स्थान भारतीय पुलिस अफसरों व सरकारी अधिकारियों ने ले लिया है।

प्रस्तुत उपन्यास में अंग्रेजी राज्य के उत्पीड़न एवं अत्याचारों का जीवंत चित्रण है। डॉ० हीरा लाल बाछोटिया ने भी लिखा है--“यह तत्कालीन अंग्रेजी राज्य में पुलिस की धींगा-सुस्ती तथा धाँधली की जीती जागती तस्वीर हमारे समक्ष उपस्थित करता है।”² अतः हम कह सकते हैं कि निराला ने इस

1. निराला की साहित्य साधना §2§, प्रथम संस्करण, पृ० 463 ।

2. निराला साहित्य का अनुशीलन, संस्करण 1977, पृ० 59 ।

उपन्यास में तत्कालीन परिस्थितियों पर यथार्थरूप में प्रकाश डाला है ।

निराला "अप्सरा" उपन्यास में न्यायालयों के चरित्र को भी उजागर करते हैं--"राजकुमार खड़ा हुआ देख रहा था उन वकीलों, बैरिस्टरों और कर्मचारियों को जो उसे देख-देखकर आपस में एक-दूसरे की खोद-खोदकर मुस्किरा रहे थे, जिनके चेहरे पर झूठ, फरेब, जाल, दगाबाजी, कठहुज्जती, दम्भ, दस्य और तोता चश्मी-सिनेमा के बदलते हुए दृश्यों की तरह आ-जा रहे थे, और जिनके पर्दे में छिपे हुए वे सुख-वैभव और शान्ति की साँस ले रहे थे । वहाँ के अधिकाँश लोगों की दृष्टि निस्तेज, सूरत बेईमान और स्वर कर्कश था ।"¹ अतः न्याय की प्रतिष्ठा के नाम पर न्यायालय कलंक-धे । व्यक्ति न्यायालय की शरणा में न्याय पाने के लिए जाता है, लेकिन वह वहाँ वकीलों, बैरिस्टरों आदि के जाल में फँसकर न्याय पाने के बजाये केवल ठगा जाता है । आज भी स्वतन्त्र भारत में न्यायालयों की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया है । बल्कि न्यायालय पहले से भी अधिक भ्रष्टाचार के अड्डे बन गये हैं ।

हम देखते हैं कि "अप्सरा" उपन्यास में निराला पर स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति का प्रभाव है । वे अपने काव्य के समान ही प्रस्तुत उपन्यास में भी रोमानी एवं नवीन अनुभूति की भावभूमि के आधार पर पुरानी रूढ़ियों से विद्रोह करके समाज को नवीन स्वस्थ वैज्ञानिक दृष्टिकोण देते हैं । डॉ० अजब सिंह का स्वच्छन्दतावाद के सम्बन्ध में कथन द्रष्टव्य है---"स्वच्छन्दतावाद नवीन अनुभूति की भूमि पर पुरानी परम्पराओं और रूढ़ियों से विद्रोह कर, चेतन प्रकृति तथा लोकजीवन की अनुभूति को वाणी देता है ।"² अर्थात् हम देखते हैं कि निराला "अप्सरा" उपन्यास में पुरानी सड़ी गली मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोह करके सामाजिक यथार्थ के धरातल पर नया दृष्टिकोण देते हैं ।

1. अप्सरा, चतुर्थ संस्करण, पृ० 45 ।

2. आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ, प्रथम संस्करण, पृ० 44 ।

अप्सरा उपन्यास का अध्ययन करने के पश्चात् हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि प्रस्तुत उपन्यास में निराला दो विरोधी प्रवृत्तियों के बीच संघर्षरत हैं । प्रथम प्रवृत्ति में वे काल्पनिक स्वप्नों में उड़ान भरते हैं, वहीं दूसरी तरफ वे जीवन के यथार्थवादी पक्ष को चित्रित करते हैं । डॉ० रामविलास शर्मा का कथन द्रष्टव्य है--निराला के कथा-साहित्य में दो परस्पर-विरोधी प्रवृत्तियाँ देखी जाती हैं । एक प्रवृत्ति काल्पनिक इच्छापूर्ति के सपने रचने की, दूसरी वास्तविक जीवन-संघर्ष को चित्रित करने की ।¹ इस प्रकार हम देखते हैं कि निराला प्रस्तुत उपन्यास में कल्पना के संसार को छोड़कर, वास्तविक जीवन-संघर्ष को अपनी पृष्ठभूमि बना रहे हैं । डॉ० अजब सिंह का मत है--"कि स्वच्छन्दतावाद के अन्दर दो विरोधी तत्वों में समन्वय, सर्जनात्मक एवं सक्रिय कल्पना, बिम्ब, प्रतीक, मिथक, प्रगीतात्मकता एवं स्वतन्त्रता का एक नया बोध एवं चेतन प्रकृति की व्याप्तता मिलती है । इसमें विषय एवं विषयि, स्वयं और दुनिया, विद्रोह और क्रांति, चेतन और अचेतन, वैयक्तिकता एवं सामाजिकता की दूरी समाप्त हो जाती है । ये ही अद्यतन स्वच्छन्दतावादी चेतना की मूल-भूत प्रवृत्तियाँ हैं ।"² अतः हम कह सकते हैं कि "अप्सरा" उपन्यास में भी निराला पर अपने बाद के उपन्यासों के समान ही स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति का प्रभाव रहा है ।

लेखक ने अपने अन्य उपन्यासों के समान ही इस उपन्यास में भी नायक राजकुमार एवं नायिका कनक के अन्तर्द्वंद्वों को उभारने में सफल रहा है । प्रस्तुत उपन्यास का शीर्षक भी अन्य उपन्यासों के समान ही स्त्रीवाचक है । स्त्रीवाचक नाम इसलिए है क्योंकि प्रस्तुत उपन्यास की समस्या नारी समस्या ही है । स्त्रीवादी नानों के सम्बन्ध में आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी का कथन द्रष्टव्य है--

1. निराला की साहित्य साधना §2§, प्रथम संस्करण, पृ० 462 ।

2. नवस्वच्छन्दतावाद, प्रथम संस्करण, पृ० 29 ।

"निराला जी की नई रचना.... है, ये .. नाम स्त्रीवाची है । पुस्तकों में प्रमुखता भी स्त्री-चित्रण की है । वर्तमान युग के नारी-जागरण की कर्कश भावनाओं को छोड़कर "निराला" जी विकासमूलक मनोरम अंशों को अपनाया और इन पुस्तकों में स्थान दिया है ।"¹ इसलिए प्रस्तुत उपन्यास का शीर्षक "अप्सरा" देना लेखक की सूझ का परिचय है, क्योंकि उपन्यास के कथानक के अनुसार कोई अन्य नाम इतना सटीक और उत्तम नहीं होता । यह नाम कनक के चरित्र की महत्ता पर पूर्णरूप से प्रकाश डालता है । श्री नलिन विलोचन शर्मा का कथन भी इस सम्बन्ध में द्रष्टव्य है--" अप्सरा नाम की सौंदर्य का तो कहना ही क्या । लेखक की सूझ को बढ़ाई है । यह सौंदर्य इसकी सार्थकता से द्विगुणित भी हो जाता है । उपन्यास के प्लॉट के अनुसार शायद इससे उत्तम कोई दूसरा नाम मिल ही नहीं सकता । यदि इसका नाम "वेश्या" या "वारांगना" या यों ही कुछ रख जाता, तो सौंदर्य न रह जाता, यद्यपि अर्थ में कुछ विशेष फर्क न पड़ता । उधर हमारे हृदय में घृणा का भी संचार हो जाता । "अप्सरा" इस शब्द-विशेष में एक आकर्षण है ।"²

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक प्रमुख पात्रों कनक, राजकुमार, चन्दन, तारा आदि के चरित्र को जहाँ बहुत प्रभावशाली बनाने में सफल रहा है, वहीं उपन्यास के छोटी-छोटी भूमिका वाले पात्रों के चरित्र को भी बहुत प्रभावशाली बनाया है, जैसे नन्दन, हरगोपाल सिंह आदि । बल्कि पात्रों के चरित्र चित्रण के सम्बन्ध में हम यहाँ तक कह सकते हैं कि निराला के अन्य उपन्यासों के पात्र "अप्सरा" के पात्रों के ही विकसित रूप हैं ।

इस उपन्यास की भाषा पर अन्य उपन्यासों की तुलना में स्वच्छन्दता-वादी काव्य की भाषा का बहुत अधिक प्रभाव रहा है, वस्तुतः निराला का दृष्टिकोण हिन्दी कथा साहित्य की भाषा को समृद्ध करना रहा हो । उपन्यास

1. हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी, संस्करण जून, 1970, पृ० 182 ।

2. मानदंड §1 §, प्रथम संस्करण, पृ० 78 ।

के पात्रों की भाषा पात्रानुकूल है, ग्रामीण स्त्रियों व हरगोपाल सिंह की भाषा जहाँ गाँव की बोली का रूप लिए हुए है, वहीं अंग्रेज अफसर हैमिल्टन की भाषा पर अंग्रेजी का प्रभाव है । अतः इन आधारों पर हम कह सकते हैं कि "अप्सरा" न केवल निराला के उपन्यासों में महत्वपूर्ण कृति है, बल्कि इस उपन्यास का हिन्दी-कथा साहित्य में भी अपना विशेष स्थान है ।

:::::

પંચમ અધ્યાય

पंचम अध्याय

=====

उपसंहार

पूर्ववर्ती अध्यायों में हम अपने शोध की समस्याओं पर वैज्ञानिक दृष्टि से विचार कर चुके हैं । तथा "अप्सरा" की सामाजिक चेतना का मूल्यांकन भी कर चुके हैं । प्रस्तुत अध्याय में हम अब अपने इस कार्य का निष्कर्ष प्रस्तुत करेंगे ।

जैसाकि हम उल्लेख कर चुके हैं कि निराला ने अपने युग की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों का वस्तुपरक विवेचन करके अपने काव्य एवं कथा साहित्य में सामाजिक रूढ़ियों, धार्मिक अन्धविश्वासों, नारी के शोषण, जमींदारी प्रथा, ब्रिटिश सामन्तशाही आदि के विरुद्ध विद्रोह का स्वर बुलंद करके समाज को यथार्थवादी वैज्ञानिक दृष्टिकोण दिया । निराला न केवल अपने काव्य में ही, बल्कि कथा साहित्य में भी नारी समस्या, अंग्रेजों के अत्याचार, जमींदारों के द्वारा होते हुए शोषण, पुलिस के षड्यन्त्र आदि से जनसामान्य की मुक्ति के लिए निरन्तर विद्रोह का आह्वान करते हैं । यद्यपि उनकी रचनाएँ प्रारम्भ से ही जन-कल्याण की भावनाओं से जुड़ी रही हैं, परन्तु प्रारम्भ में विद्रोही सामाजिक चेतना से ओत-प्रोत रचनाएँ अधिक संख्या में नहीं हैं । प्रारम्भ में लिखी गई उनकी अधिकतर रचनाएँ सौंदर्यमूलक हैं । सन् 1916 से निराला की रचनाओं में परिवर्तन होना प्रारम्भ हो गया था और वे सन् 1920 के बाद सामाजिक यथार्थ के धरातल पर अपनी रचनाओं को विकसित करने लगे । सन् 1935

के पश्चात् की उनकी रचनाएँ शुद्ध सामाजिक यथार्थ से ओत प्रोत हैं, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण उनकी "बेला," "नये पत्ते," "कुल्लीभाट," "कुकुरमुत्ता" व "बिल्लेसुर बकरिहा" आदि रचनाएँ हैं, इसका मूल कारण 1935 ई० में सरोज की मृत्यु एवं ऐसी ही अन्य घटनाएँ थीं ।

सन् 1931 में प्रकाशित अपने प्रथम उपन्यास "अप्सरा" में निराला जहाँ यथार्थवादी वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाते हुए हमें दिखाई देते हैं, वहीं वे बार-बार रोमानी दृष्टिकोण की तरफ भी झुकते दिखाई देते हैं, ऐसा इसलिए है क्योंकि यह समय निराला के परिवर्तन का समय है । यहाँ आकर निराला छायावादी दृष्टिकोण से यथार्थवादी दृष्टिकोण की तरफ अग्रसर हो रहे हैं । इसीलिए हमें "अप्सरा" उपन्यास में दो विरोधी प्रवृत्तियों की झलक साफ दिखाई देती है । "अप्सरा" उपन्यास का अध्ययन करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यह स्वच्छंदतावादी रचना है, क्योंकि यथार्थ रोमानी भावनाओं के साथ ही प्रस्फुटित होता है । अर्थात् हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत रचना में निराला रोमांटिक भावभूमि के आधार पर सामाजिक चेतना का निर्माण कर रहे हैं । इसी दृष्टिकोण को सामने रखते हुए हमने प्रस्तुत उपन्यास का अध्ययन किया है । यद्यपि कुछ विद्वानों ने प्रस्तुत कृति को रोमांटिक रचना कहकर नकार दिया था, जिसका अप्सोस निराला को भी जीवन भर रहा था ।

"अप्सरा" उपन्यास की मूल समस्या नारी समस्या है । इसीलिए प्रस्तुत उपन्यास का कथानक कनक को केन्द्र बनाकर घूमता है और वेश्यापुत्री कनक से नृत्य एवं गायन के पेशे को छुड़ाकर नारी की सामाजिक मर्यादा और

सामाजिक जीवन प्रदान करना रहा है । इसी उद्देश्य की पुष्टि निराला ने प्रस्तुत उपन्यास में की है ।

विवेच्य उपन्यास की कथावस्तु मूलतः प्रेम सम्बन्धी है और नायक-नायिका के प्रणय को ही यहाँ उपन्यासकार ने अपनी पृष्ठभूमि बनाया है । यद्यपि नायक राजकुमार और नायिका कनक स्वच्छंद व्यक्तित्व के पात्र हैं और वे स्वतंत्रता के साथ सभी क्षेत्रों में प्रकट होते हैं लेकिन हम देखते हैं कि उनकी स्वतंत्रता प्रेम के क्षणों में ही सबसे अधिक व्यक्त हुई । हम यह निष्कर्षतः कह सकते हैं कि प्रस्तुत उपन्यास में निराला ने समाज की रुढ़िग्रस्त मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोह करके वैयक्तिक मान्यताओं के आधार पर प्रेम का पोषण किया है, इसीलिए उन्होंने एक सुशिक्षित युवक राजकुमार का विवाह वेश्या-पुत्री कनक से कराया है ।

उपन्यास की नायिका वेश्यापुत्री कनक के माध्यम से लेखक ने वेश्याओं को समाज में सम्मान देने और वेश्यावृत्ति की समस्या को उठाया है । कनक के व्यक्तित्व के माध्यम से उसके एकनिष्ठ प्रेम के द्वारा यह संकेत किया गया है कि अगर वेश्याओं को पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन व्यतीत करने का अवसर प्राप्त हो तो वे भी इस सामाजिक मर्यादा को निभाने में सक्षम हैं और उसके लिए सहर्ष तैयार हैं । इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए लेखक कनक का विवाह उच्चवर्गीय राजकुमार से कराकर एक आदर्श स्थापित करता है और तारा, चन्दन एवं नन्दन से कनक एवं राजकुमार के विवाह को स्वीकृति दिलाकर, सामाजिक स्वीकृति भी प्रदान करता है । निराला ने वेश्यापुत्री कनक का विवाह राजकुमार से कराके तत्कालीन जनता में समाज सुधारक संस्थाओं के कारण आ रही जागृति का भी संकेत किया है ।

यद्यपि उपन्यास का नायक राजकुमार वीर एवं साहसी है वह अंग्रेज पुलिस अफसर हैमिल्टन की, कनक के साथ दुर्व्यवहार करने के कारण, पिटाई कर देता है। वहीं वह कनक को हृदय से प्रेम करने पर भी सामाजिक नियमों का उल्लंघन करके उससे विवाह करने का साहस नहीं बटोर पाता है। जबकि वह एक शिक्षित युवक है और रुढ़ियों से भी मुक्त होना चाहता है। हम देखते हैं कि उसके संस्कारों की जड़ें इतनी मजबूत और गहरी हैं कि जिन्हें वह तोड़ने का साहस नहीं कर पाता है क्योंकि वह मानसिक रूप से सामाजिक संघर्षों का सामना नहीं कर सकता था। इसीलिए तारा, चन्दन व नन्दन के प्रयत्नों एवं स्वीकृति के पश्चात् ही वह वेश्यापुत्री कनक से विवाह कर पाता है। यह कमजोरी केवल राजकुमार की कमजोरी नहीं थी, बल्कि तत्कालीन परिस्थितियों के कारण हर शिक्षित मध्यमवर्गीय युवकों की कमजोरी थी, जो अपने संस्कारों से लड़ने का अदम्य साहस नहीं रखते थे।

जहाँ निराला ने प्रस्तुत उपन्यास में अंग्रेज पुलिस अफसर हैमिल्टन के द्वारा अंग्रेज शासकों एवं पुलिस अफसरों के शोषण, अत्याचार, षड़यन्त्र और कामुकतापूर्ण कृत्यों का उद्घाटन किया है। वहीं कुँवर साहब के चरित्र से सामन्तों की शोषकवृत्ति एवं जमींदारों की नीचता का भी उद्घाटन होता है। कुँवर साहब के चरित्र से यह उजागर हो जाता है कि देशी रियासतों के राजा और जमींदार ब्रिटिश शासकों से मिलकर गरीब किसान एवं मजदूरों का न केवल शोषण करते थे बल्कि निर्ममता के साथ उन्हें पीटा भी करते थे। ये राजा-जमींदार आदि युवतियों की इज्जत भी लूटते थे। यहीं राजा एवं जमींदार आदि भारत की परतन्त्रता के कारण थे, क्योंकि यह राज्य प्रबन्ध की अपेक्षा

अपना समय विलासितापूर्ण जीवन एवं मनोरंजन में व्यतीत करते थे । देशी रियासतों के राजाओं एवं उनके उत्तराधिकारियों का चरित्र पतन की सीमा को भी पार कर गया था । कुँवर साहब का चरित्र इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

जहाँ एक तरफ देशी रियासतों के राजाओं एवं जमींदारों की विलासी प्रवृत्ति भारत की परतन्त्रता का कारण बनी थी, वहीं दूसरी तरफ उस समय कुछ देशभक्त भारत को परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने में संलग्न थे । उस समय अनेक राष्ट्रवादी एवं क्रान्तिकारी युवकों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित करने का संकल्प लिया था । उपन्यास के पात्र चन्दन के माध्यम से निराला ने क्रान्तिकारी युवकों के चरित्र को ही उजागर किया है । चन्दन अपने मित्र की भाँति केवल देश सेवा को प्रतिज्ञा ही नहीं करता है बल्कि वह व्यवहार में भी एक सच्चा क्रान्तिकारी है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण उसकी क्रान्तिकारी गतिविधियाँ एवं किसानों का संगठन करके सामन्तशाही के विरुद्ध विद्रोह आदि घटनाएँ हैं वस्तुतः यही कारण है कि वह पाठकों को "अप्सरा" के पुरुष पात्रों में सबसे अधिक प्रभावित करता है ।

लखनऊ डकैती काण्ड का प्रसंग एवं नन्दन के द्वारा कनक को मुँह दिखाई में देने के लिए चर्खा खरीदना आदि उपन्यास की घटनाओं से देश की तत्कालीन राजनीतिक स्थिति का उल्लेख करने का प्रयत्न किया गया है क्योंकि उस समय क्रान्तिकारी भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने के लिए विद्रोह में आस्था रखते थे । ब्रिटिश शासन की तानाशाही एवं विदेशी वस्तुओं के प्रयोग के कारण भारत के छोटे-छोटे उद्योगों की स्थिति चिन्ताजनक थी, जिसका

प्रभाव कारीगरों एवं मजदूरों की आर्थिक स्थिति पर पड़ा। छोटे-छोटे ग्रामीण उद्योगों एवं मजदूरों की स्थिति में सुधार लाने की दृष्टि से बंगाल एवं अन्य राज्यों में स्वदेशी आन्दोलन चलाया गया। महात्मा गाँधी ने भी स्वदेशी के प्रचार व प्रसार पर बहुत बल दिया था। महात्मा गाँधी के द्वारा चलाये गये स्वदेशी आन्दोलन के फलस्वरूप ही जनता ने चर्खे पर कते सूत का कपड़ा पहनना आरम्भ कर दिया था, जिसके कारण गरीब मजदूरों एवं कारीगरों की बिगड़ती हुई आर्थिक स्थिति में सुधार आया था। अतः हम कह सकते हैं कि निराला के प्रस्तुत उपन्यास में क्रान्तिकारी घटनाओं एवं स्वदेशी को प्रसंग बनाने का उद्देश्य राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रचार करना है, किन्तु वे उपन्यास में देश की राजनीतिक स्थिति का विस्तृत उल्लेख न करके केवल संकेत देते हैं। इसका मूल कारण यह भी है कि ये उपन्यास की मूल समस्याएँ नहीं हैं।

संयुक्त प्रान्त एवं अन्य राज्यों के किसानों ने सन् 1929-32 में ब्रिटिश सामन्तशाही एवं जमींदारों, ताल्लुकेदारों आदि के शोषण से मुक्त होने के लिए बड़े व्यापक रूप से विद्रोह किया था, जिसे विद्वानों ने किसान आन्दोलन का नाम दिया है, हम देखते हैं कि "अप्सरा" उपन्यास के लखनऊ किसान आन्दोलन का वह उग्र रूप नहीं है बल्कि प्रस्तुत उपन्यास में निराला ने 1929-32 के किसान आन्दोलन से किसानों में आयी आत्म जागृति का केवल संकेत मात्र दिया है और किसान आन्दोलन के प्रसंग से चन्दन के चरित्र के पक्ष को उभारा है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने सामाजिक अवस्था पर भी अपने विचार प्रकट किये हैं। सामाजिक सुधार संस्थाओं एवं आधुनिक शिक्षा के कारण समाज

में पर्याप्त जागृति आ रही थी, जिसके फलस्वरूप नारियाँ शिक्षा तथा अन्य क्षेत्रों में रुचि लेने लगीं थीं। इसीलिए नारी जाति के प्रति जनता के दृष्टि कोणा में भी परिवर्तन हो रहा था। इसी परिवर्तन होने के फलस्वरूप उपन्यास की नारी पात्र तारा अपने पति एवं देवर के प्रयत्नों के कारण न केवल शिक्षा प्राप्त करती है, बल्कि सामाजिक कार्यों में भी हिस्सा लेती है। तारा न केवल सफल हिन्दू गृहिणी है, बल्कि वह प्रगतिशील भी है। इसीलिए वह वेश्यापुत्री कनक से ईर्ष्या भी नहीं करती है, बल्कि कनक के प्रति वह स्नेह का भाव रखती है। यहाँ कारण है कि तारा कनक को न केवल सामाजिक समानाधिकार दिलाती है, बल्कि उसका विवाह राजकुमार से कराके अपनी प्रगतिशीलता का परिचय भी देती है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने कनक के माध्यम से धार्मिक एवं सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया है। जहाँ कनक ग्रामीणों के प्रति घृणा का भाव प्रकट करती है, वहीं लेखक ने तारा के माध्यम से ग्रामीणों के प्रति घृणा या अवहेलना प्रकट करने के बदले सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार किया है, क्योंकि गाँव में पर्याप्त जागृति नहीं आयी थी।

“अप्सरा” उपन्यास का मूल्यांकन करने के पश्चात् निष्कर्षतः, हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत उपन्यास मूलतः नारी समस्या-वेश्या समस्या को केन्द्र में रखकर ही लिखा गया है। इसके साथ ही कहा जा सकता है कि ग्रामीण वातावरण और तत्कालीन ग्रामीण जीवन मूल्यों एवं परिस्थितियों का निराला ने यथार्थ चित्रण किया है और ग्रामीण परिवेश अपने यथार्थ रूप में यहाँ उभर कर आया है। इस प्रकार आधुनिक कथा साहित्य में निराला के इस उपन्यास का विशिष्ट स्थान है।

“अप्सरा” के कथानक में सिनेमा की पटकथा के सभी गुण हैं

उसका नायक राजकुमार साहसी एवं निडर है वहीं सहनायक चन्दन देशभक्त है । आधुनिक उपन्यास के भी सभी तत्त्व इसमें उपलब्ध होते हैं । उपन्यास की नायिका सुन्दर, चंचल एवं निराला की कल्पना की प्रतिमा है, वहीं तारा के व्यक्तित्व से त्यागमय नारी की गरिमा प्रकट होती है । उपन्यास का कथानक तिलस्मी-शेयारी उपन्यासों की घटनाओं का समावेश होने के कारण अवास्तविक सा प्रतीत होता है । "अप्सरा" उपन्यास की भाषा पर छायावादी काव्य की भाषा का प्रभाव होने के कारण भाषा में सामर्थ्य तथा प्रवाहत्मकता है, फिर भी यह उपन्यास काव्यत्व के भार से दब गया है लेकिन हिन्दी भाषा की समृद्धि के दृष्टिकोण से इस उपन्यास की भाषा सराहनीय है । और मूल कथा को सफलतापूर्वक अभिव्यक्त करती है । अतएव हम इसी निष्कर्ष पर आते हैं कि निराला इस उपन्यास में पूर्णतः सफल हैं एवं मूल और गौण कथाओं को वे सार्थक रूप में प्रस्तुत कर सके हैं और वेश्यापुत्री कनक को एक आदर्श नारी के रूप में अपने उपन्यास में उन्होंने समुचित रूप से विकसित किया है ।

∴∴

x :x :x :x :x :x :x :x :x
x :x :x :x :x :x :x :x :x
x :x :x :x :x :x :x :x :x
x :x :x :x :x :x :x :x :x

परिशिष्ट
=====

सहायक ग्रंथ सूची

॥अ॥ निराला की मौलिक कृतियाँ

1. अनामिका, 2015 वि०, भारती-भण्डार, इलाहाबाद ।
2. अप्सरा, 1986, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
3. अलका, 1964, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ ।
4. काले कारनामे, 1960, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी ।
5. कुरमुत्ता, 1975, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
6. कुल्लीभाट, 2018 वि०, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ ।
7. चतुरी चमार, 1967, किताब महल, इलाहाबाद ।
8. चोटी की पकड़, 1967, किताब महल, इलाहाबाद ।
9. देवी, 1962, निरूपमा प्रकाशन, प्रयाग ।
10. निरूपमा, 1975, भारती भंडार, इलाहाबाद ।
11. प्रबन्ध पदम, 1960, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ ।
12. प्रबन्ध-प्रतिमा, 1963, भारती-भण्डार, इलाहाबाद ।
13. प्रभावती, 1967, किताब महल, इलाहाबाद ।
14. बिल्लेश्वर बकरिहा, 1973, किताब महल, इलाहाबाद ।
15. बेला, 1962, निरूपमा प्रकाशन, प्रयाग ।
16. संग्रह, 1963, निरूपमा प्रकाशन, प्रयाग ।
17. सांध्यकाकली, 1975, निराला प्रकाशन, दारा गंज, इलाहाबाद ।
18. सं० शरद ओंकार, निराला ग्रन्थावली ॥भाग-1॥, 2030 वि०, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ ।
19. -----, निराला ग्रन्थावली ॥भाग-2॥, 2030 वि०, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ ।
20. -----, निराला ग्रन्थावली ॥भाग-3॥, 2030 वि०, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ ।

21. सं० शर्मा, रामविलास, रागविराग, 1979, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।

॥आ॥ अन्य लेखकों की कृतियाँ :

1. उग्र, पांडेय बेचन शर्मा : शराबी, 2030 वि०, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ ।
2. उपाध्याय, विशम्भर नाथ, निराला का साहित्य और साधना, 1965, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा ।
3. चन्द्र, बिपिन, आधुनिक भारत, 1987, एन सी ई आर टी, नई दिल्ली ।
4. चेलिगोव, येवग्येनी पेत्रोविच : सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, 1982, राजपाल एन्ड सन्स, दिल्ली ।
5. जिन्दल, निर्मल : निराला का गद्य साहित्य, 1977, आर्य बुक डिपो, दिल्ली ।
6. नागार्जुन : एक व्यक्ति : एक युग, 1977, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद ।
7. नीहार, बुद्धसेन : विश्वकवि निराला, रीप्रिंट, रीगल बुक डिपो, दिल्ली ।
8. पाण्डेय, गंगा प्रसाद : महाप्राण निराला, प्र० सं०, साहित्यकार-संसद, प्रयाग ।
9. प्रसाद, जयशंकर : कंकाल, 2007 वि०, भारती भण्डार, इलाहाबाद ।
10. प्रेमचन्द : सेवासदन, 1982, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद ।
11. ----- गबन, 1985, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद ।
12. फास्ट, हार्ड : साहित्य और यथार्थ, 1984, पीपुल्स लिटरेसी, दिल्ली ।
13. बाछोतिया, होरालाल : निराला साहित्य का अनुशीलन, 1977, साहित्य संस्थान, कानपुर ।
14. भट्ट, प्रेम प्रकाश : निराला का गद्य साहित्य, प्र० सं०, उपमा प्रकाशन, जयपुर ।
15. भ्रमर, रवीन्द्र : छायावाद, प्र० सं०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
16. मिश्र, जगन्नाथ प्रसाद : भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास, 1988, प्रतिमान प्रकाशन, इलाहाबाद ।
17. मेहरोत्रा, बलदेव प्रसाद : कथा-शिल्पी : निराला, 1984, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
18. रावत, हरिकृष्ण : समाज शास्त्र कोश ॥प्रथम खण्ड॥, 1986, रावत पब्लिकेशन, जयपुर ।

19. व० केल्ले और म० कोवालज़ोन : ऐतिहासिक भौतिकवाद : समाज के मार्क्सवादी सिद्धान्त की रूपरेखा, 1974, प्रगति प्रकाशन, मास्को ।
20. वर्मा, धनञ्जयः निराला काव्य और व्यक्तित्व, 1960, विद्या प्रकाशन मंदिर, दिल्ली ।
21. वर्मा, भगवती चरण : तीन वर्ष, 2025 वि०, भारती भण्डार, इलाहाबाद ।
22. वाजपेयी, नन्ददुलारे : कवि निराला, 1965, वाणी वितान प्रकाशन, वाराणसी ।
23. ----- : हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी, 1970 लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
24. वाष्णोय, कुसुम : निराला का कथा साहित्य, 1971, साहित्य भवन, इलाहाबाद ।
25. सिंह, अजब : आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ, 1975, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।
26. ----- : नवस्वच्छन्दतावाद, 1987, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।
27. सिंह, अयोध्या : भारत का मुक्ति संग्राम, 1977, दि मैकमिलन कम्पनी, दिल्ली ।
28. सिंह, कुँवर पाल : हिन्दी उपन्यास : सामाजिक चेतना, 1976, पांडुलिपि प्रकाशन, दिल्ली ।
29. ----- : प्रेमचन्द और समसामयिक हिन्दी कथा साहित्य, 1984, धरती प्रकाशन, बीकानेर ।
30. सिंह, दूधनाथ : निराला, आत्महंता आस्था, 1972, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद
31. सिंह, बच्चन : क्रान्तिकारी कवि निराला, तृ० सं०, नन्द किशोर एण्ड सन्स, वाराणसी ।
32. सूर्यप्रसाद दीक्षित, निराला की आत्मकथा, 1970, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ
33. तैनी, राजकुमार : साहित्य सृष्टा निराला, 1981, पीपुल्स लिटरेरी, दिल्ली ।
34. शर्मा, नलिन विलोचन : मानदंड §1§, 1963, मोतीलाल बनारसी दास, पटना ।

35. शर्मा, रामविलास : स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य, 1950, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस ।
36. ----- : निराला, 1971, शिवनाल अग्रवाल एण्ड कंपनी, आगरा ।
37. ----- : निराला की साहित्य साधना {भाग-1}, 1971, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
38. ----- : निराला की साहित्य साधना {भाग-2}, 1972, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
39. ----- : मार्क्स और पिछड़े हुए समाज, 1986, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
40. श्रीवास्तव, शिवनारायण, हिन्दी उपन्यास, प्र० सं०, सरस्वती मंदिर, वाराणसी ।

{३} पत्र-पत्रिकाओं की सूची :

1. असली भारत : मार्च 1989 ।
2. दिनमान : 15 मई, 1989 ।
3. दीर्घा : वर्ष 11, अंक 4, फरवरी 1988 ।
4. भाषा : वर्ष 1, अंक 3, 1962 ।
5. साधात्कार : अप्रैल-जून, 1983 ।
6. संघतना : अक्टूबर 1986 ।